
इकाई 2 सैद्धांतिक आधार

सरंचना

- 2.0 प्रस्तावना
- 2.1 उद्देश्य
- 2.2 दूरस्थ शिक्षा की परिभाषा
 - 2.2.1 बेडेमेयर
 - 2.2.2 मूर
 - 2.2.3 डोहमेन
 - 2.2.4 पीटर्स
 - 2.2.5 होमबर्ग
 - 2.2.6 कीगन
- 2.3 प्रासंगिक पदों की व्याख्या
 - 2.3.1 अनौपचारिक शिक्षा
 - 2.3.2 डी-स्कूलिंग
 - 2.3.3 पत्राचार शिक्षा
 - 2.3.4 दूरस्थ अधिगम
 - 2.3.5 मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम
 - 2.3.6 मुक्त शिक्षा
 - 2.3.7 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा
 - 2.3.8 आजीवन अधिगम/ शिक्षा
 - 2.3.8.1 अवधारणा
 - 2.3.8.2 सिद्धांत एवं विशेषताएँ
 - 2.3.8.3 कार्यान्वयन के निहितार्थ
- 2.4 दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत
 - 2.4.1 दूरस्थ शिक्षा सिद्धांत का विकास : एक परिदृष्टि
 - 2.4.2 स्वतंत्र अध्ययन सिद्धांत
 - 2.4.3 संव्यवहार दूरी एवं शिक्षार्थी स्वायत्तता सिद्धांत
 - 2.4.4 शिक्षण का औद्योगीकरण सिद्धांत
 - 2.4.5 मार्गदर्शित शैक्षिक संवाद सिद्धांत
 - 2.4.6 द्वि-मार्गीय डाकसंचार सिद्धांत
 - 2.4.7 सरोकार की निरंतरता का सिद्धांत
 - 2.4.8 संप्रषण एवं शिक्षार्थी नियंत्रण सिद्धांत
 - 2.4.9 शिक्षण एवं अधिगम क्रियाओं के पुनर्समाकलन का सिद्धांत
 - 2.4.10 अधिगम-अनुभवों की समानता का सिद्धांत
 - 2.4.11 दूरस्थ शिक्षा सिद्धांतों का मूल्यांकन
- 2.5 सारांश
- 2.6 “अपनी प्रगति जाँचें” प्रश्नों के उत्तर
- 2.7 संदर्भ
- 2.8 इकाई अंत अभ्यास

2.0 प्रस्तावना

इकाई-1 में आपने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के राष्ट्रीय और अनंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर ऐतिहासिक विकास पर एक परिदृष्टि प्राप्त किया। आप जानते हैं कि दूरस्थ शिक्षा सदियों पुरानी परम्परागत शिक्षा प्रणाली की तुलना में अत्यधिक नवीन है। दूरस्थ शिक्षा का विकास उन परिवर्तनशील स्थितियों जिनमें इसका अभ्यास है के आधार पर हो रहा है। इसके अपने स्वयं के मानदंड हैं और यह अपने उपागमों तथा विधियों का अनुसरण करती है, जो परम्परागत शिक्षा प्रणाली से भिन्न हैं। यह असमानरूपी और अपरंपरागत प्रकृति की है। यह अपने शिक्षकों और शिक्षार्थियों के बीच शैक्षिक अंतःक्रिया हेतु विभिन्न साधनों और विधियों को सम्मिलित कर दूरस्थ शिक्षार्थियों को अनुदेश प्रदान करने हेतु पर्याप्त प्रावधान करता है।

हम जानते हैं कि दूरस्थ शिक्षा एक शिक्षा प्रणाली है जो पारम्परिक शिक्षा प्रणाली की संपूरक, अनुपूरक और वैकल्पिक है। आज यह जिस रूप में विद्यमान है, यह एक स्वतंत्र शिक्षा-प्रणाली के रूप में विकसित है, संप्रेषण तकनीकी और संज्ञानात्मक विज्ञानों के विकास का धन्यवाद है, जो शिक्षणशास्त्रीय प्रयोजनों के लिए तकनीक के उपयोग के लिए पर्याप्त लचीला हैं। यह समाज की बढ़ती हुई और विविध शैक्षिक आवश्यकताओं और माँगों जो एक ओर बदलती हुई सामाजिक, आर्थिक और अन्य परिस्थितियों तथा दूसरी ओर तकनीकों का विकास के परिणाम हैं की पूर्ति हेतु एक शैक्षिक नवाचार है।

आपको दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा और सैद्धांतिक आधारों को समझने की आवश्यकता है ताकि आप इसके सापेक्षिक गुणों, अन्य प्रासंगिक पदों के साथ इसकी भिन्नता तथा शैक्षिक प्रणाली में इसकी पकड़ की प्रशंसा कर सकें। यह इकाई आपके लिए दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा और सिद्धांत का एक परिदृश्य, जो इस क्षेत्र के विभिन्न विचारकों के परिप्रेक्ष्य से है, को प्रस्तुत करती है।

2.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :

- दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा की व्याख्या कर सकेंगे;
- दूरस्थ शिक्षा और अन्य संबंधित पदों के बीच अंतर कर सकेंगे; और
- दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न सिद्धांतों का विश्लेषण कर सकेंगे।

2.2 दूरस्थ शिक्षा की परिभाषा

दूरस्थ शिक्षा अपने संकेतार्थ और भावार्थ दोनों के संदर्भ में एक विस्तृत पद है। ज्ञान, समझ और विचारधारा के आधार पर विभिन्न व्यक्तियों ने दूरस्थ शिक्षा को भिन्न-भिन्न प्रकार से परिभाषित किया है। अतः एक व्यापक परिभाषा तक पहुँचना बहुत कठिन है, जो इसके सभी संकेतार्थों और भावार्थों को सम्मिलित करे। यद्यपि दूरस्थ शिक्षा की एक संक्षिप्त और वैश्विक रूप से मान्य परिभाषा निर्मित करना कठिन है, तथापि दूरस्थ शिक्षा के विविध व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत विभिन्न पक्षों पर आधारित परिभाषाएं हमें दूरस्थ शिक्षा की व्यापक छवि प्रदान करेंगी।

दूरस्थ शिक्षा स्टाफ प्रशिक्षण एवं शोध संस्थान (इग्नू, 1995) ने वेडेमेयर, मूर, डोहमेन, पीटर्स और होमबर्ग द्वारा दी गई परिभाषाओं को उन पर संक्षिप्त टिप्पणी के साथ प्रस्तुत किया।

आइए हम इन परिभाषाओं का अध्ययन करें, क्योंकि ये दूरस्थ शिक्षा की परिभाषा निर्माण के विस्तृत पक्षों को प्रस्तुत करते हैं।

2.2.1 वेडेमेयर

वेडेमेयर (1977) ने अपने कार्यों में 'मुक्त अधिगम', 'दूरस्थ शिक्षा' और 'स्वतंत्र अध्ययन' शब्दों का उपयोग किया, परन्तु अंतिम शब्द को निरन्तर समर्थन किया। उसने 'स्वतंत्र-अध्ययन' को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है :

“स्वतंत्र अध्ययन में शिक्षण-अधिगम व्यवस्थाओं के विभिन्न रूप सम्मिलित हैं, जिसमें शिक्षक और शिक्षार्थी एक दूसरे से अलग रहते हुए विविध प्रकार के संप्रेषण द्वारा अपने आवश्यक कार्यों और उत्तरदायित्वों का निर्वहन करते हैं। इसके उद्देश्य हैं कैम्पस या आंतरिक शिक्षार्थियों को अनुचित कक्षा या प्रारूप से मुक्त करना, कैम्पस के बाहर या बाह्य शिक्षार्थियों को उनके स्वयं के वातावरण में अधिगम को सतत बनाए रखने का अवसर प्रदान करना, और सभी शिक्षार्थियों में स्व-निर्देशित अधिगम करने की क्षमता का विकास करना, जो एक शिक्षित व्यक्ति के लिए आवश्यक अंतिम परिपक्वता है”।

ध्यान दीजिए कि इसमें दो प्रकार के 'स्वतंत्र-अध्ययन' के लिए सुझाव है : एक कैम्पस के अंदर के शिक्षार्थी के लिए जो व्याख्यानों में नियमित उपस्थिति नहीं चाहता/आवश्यक नहीं मानता; दूसरा कैम्पस के बाहर के शिक्षार्थी के लिए जो किसी भी प्रकार से स्वयं पर ही निर्भर है। परन्तु, ये दोनों ही शिक्षा के अंतिम सामाजिक उद्देश्य के विशेष गंभीर विचार-सामाजिक कल्याण के लिए उदार शिक्षा के अधीन हैं। अतः यह समझना कठिन नहीं है कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में 'स्वतंत्र अध्ययन' शब्द का उपयोग 'पत्राचार' और 'दूरस्थ शिक्षा' दोनों के लिए व्यापक रूप से क्यों किया जाता है। इसके अतिरिक्त, यह अभिव्यक्ति 'मुक्त अधिगम' की भी समर्थन करती है, क्योंकि वास्तविक रूप में 'शिक्षित व्यक्ति' बनने के लिए उसे शिक्षा तक मुक्त पहुँच की आवश्यकता होती है।

2.2.2 मूर

मूर (1972 और 1973) दूरस्थ शिक्षा की विशेषताओं के संबंध में अधिक स्पष्ट विचार रखते हैं। उनके अनुसार, दूरस्थ शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है :

“अनुदेशनात्मक विधियों का एक परिवार जिसमें शिक्षण व्यवहारों का निष्पादन अधिगम व्यवहारों से अलग होता है। इसमें वे व्यवहार भी सम्मिलित हैं जो सन्निहित स्थितियों में शिक्षार्थी की उपस्थिति में निष्पादित होते, ताकि शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच संप्रेषण को मुद्रित, इलैक्ट्रॉनिक, यांत्रिक या अन्य यंत्रों द्वारा सरलीकृत किया जा सके। उसकी परिभाषा में दूरस्थ शिक्षा की कम से कम तीन विशेषताएं स्पष्ट दृष्टिगोचर होती हैं—

- i) शिक्षण व्यवहार अधिगम व्यवहार से पृथक रहता है (उदाहरण: पत्राचार पाठ्यक्रम)।
- ii) आमने-सामने शिक्षण-अधिगम प्रणाली का एक अंग बनता है (उदाहरण: संपर्क कार्यक्रम)।
- iii) इलैक्ट्रॉनिक और अन्य मीडिया का उपयोग शिक्षण और अधिगम को प्रभावी बनाने के लिए किया जा सकता है (उदाहरण: ऑडियो और वीडियो कैसेट्स का उपयोग)।

इनमें से पहली दो विशेषताएं उनके समान हैं जो वेडेमेयर ने व्यक्त की है। और यदि हम वेडेमेयर की अभिव्यक्ति 'विविध प्रकार से संप्रेषण' की व्याख्या करें : यहाँ तक कि विस्तृत रूप से उक्तलिखित तीसरी विशेषता का स्थान भी उसकी (वेडेमेयर) परिभाषा में निहित है। मूर संप्रेषणात्मक (शिक्षण-शास्त्रीय) पक्ष को प्रकाशित करता है, जबकि वेडेमेयर समाजशास्त्रीय पक्ष को केन्द्रित करता है।

2.2.3 डोहमेन

डोहमेन (1977) दूरस्थ शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित करता है; “एक व्यवस्थित रूप से संगठित स्व-अध्ययन का रूप, जिसमें विद्यार्थी परामर्श, अधिगम-सामग्री का प्रस्तुतीकरण और विद्यार्थी की सफलता का संरक्षण एवं पर्यवेक्षण शिक्षकों की एक टीम द्वारा किया जाता है, जिनमें से प्रत्येक पर उत्तरदायित्व होते हैं। यह दूरस्थ शिक्षण में मीडिया के माध्यम से संभव होता है जो लम्बी दूरियों को सम्मिलित कर सकता है।”

यह परिभाषा स्व-अध्ययन पर अधिक बल देती है। दूरस्थ शिक्षा की इस विशेषता पर वेडेमेयर की परिभाषा में भी बल दिया गया है। वेडेमेयर और मूर की भांति ही डोहमेन ने भी उचित रूप से मीडिया के उपयोग पर बल दिया है; जो दूरस्थ शिक्षा को शिक्षा के उपभोक्ताओं तक पहुंचाने में सक्षम बनाता है।

हम देखते हैं कि उपरोक्त सभी तीनों विचारकों ने दूरस्थ शिक्षा के दो मुख्य पक्षों की स्पष्टता या अस्पष्टता पर ध्यान केन्द्रित किया है :

i) स्व-अध्ययन

ii) शैक्षिक संप्रेषण के लिए मीडिया का उपयोग

मुख्य बात यह है कि यह परम्परागत प्रकार की कक्षा-कक्षा शिक्षण में उपयोग किए जाने वाले मौखिक संप्रेषण के विपरीत है, जो एक स्व-अध्ययन की प्रक्रिया नहीं है। दूरस्थ-शिक्षा मुद्रित, इलैक्ट्रॉनिक मीडिया और आमने-सामने या मौखिक स्थितियों का उपयोग स्व-अध्ययन के लिए करती है, जो दूरस्थ शिक्षा का आधार है।

आइए, अब एक अन्य परिभाषा को देखते हैं जो दूरस्थ शिक्षा की संपूर्ण प्रक्रिया के लिए एक सैद्धांतिक ढाँचा प्रस्तुत करती है।

2.2.4 पीटर्स

पीटर्स (1973) दूरस्थ शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित करते हैं; “ज्ञान, कौशलों और अभिवृत्तियों प्रदान करने की एक विधि है जिसको श्रम के विभाजन और संगठनात्मक सिद्धांतों, साथ ही तकनीकी मीडिया के व्यापक उपयोग द्वारा तर्कसंगत सिद्ध किया गया है। विशेषरूप से उच्च कोटि की शिक्षण-सामग्री के पुनरोत्पादन हेतु, जो एक ही समय में अधिक संख्या में विद्यार्थियों को, जहाँ भी वे रहते हों निर्देशित करने को सम्भव बनाता है। यह शिक्षण और अधिगम का एक औद्योगिक रूप है।”

पीटर्स की परिभाषा रोचक है क्योंकि, तकनीकी मीडिया और जन शिक्षा के उपयोग के अतिरिक्त, वह एक विशिष्ट प्रकृति पर बल देता है जो दूरस्थ शिक्षा को औद्योगिक समाज की प्रकृति से जोड़ता है। यह भी संभव है कि दूरस्थ शिक्षा को एक ऐसी प्रणाली के रूप में देखा जाए जो औद्योगिक समाज की नई और विशिष्ट आवश्यकताओं से उत्पन्न हो रही है जिसमें शिक्षा सहित लगभग सभी क्रियाकलापों को समय-सारिणी के अनुकूल होना है जो कार्य करने और अधिगम स्थितियों के लिए अधिक कठोर बनाई गई हैं।

2.2.5 होल्मबर्ग

होल्मबर्ग (1981) दूरस्थ शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित करते हैं जिसमें सम्मिलित है:

“सभी स्तरों पर अध्ययन के विभिन्न रूप जो एक ही परिसर के व्याख्यान कक्षाओं में अपने विद्यार्थियों के साथ ट्यूटर्स के निरंतर और तत्काल पर्यवेक्षण के अधीन नहीं होते, परंतु फिर भी एक ट्यूटोरियल व्यवस्था के संचालन, मार्गदर्शन और ट्यूशन से लाभान्वित होते हैं”।

होलम्बर्ग की परिभाषा के बारे में क्या रोचक है कि दूरस्थ शिक्षा को एक **'संगठित शैक्षिक कार्यक्रम'** के रूप में देखा जा रहा है।

आइए अब हम कीगन द्वारा प्रस्तुत परिभाषा को देखते हैं; जिसने विभिन्न परिभाषाओं में पाए गए दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न पक्षों को चुना और उन्हें एक साथ एक परिभाषा में रखा।

2.2.6 कीगन

कीगन (1986) ने दूरस्थ शिक्षा की व्यापक परिभाषा दी है जो सभी आवश्यक तत्वों को इंगित करती है। उसने दूरस्थ शिक्षा को शिक्षा के एक ऐसे रूप में परिभाषित किया है, जिसकी विशेषताएं हैं :

- शिक्षक और शिक्षार्थी का संपूर्ण अधिगम प्रक्रिया के दौरान अर्द्ध-स्थायी रूप से पृथक होना; यह इसे परंपरागत आमने-सामने की शिक्षा से भिन्न बनाता है;
- अधिगम सामग्री की योजना और निर्माण तथा विद्यार्थी सहायता सेवाओं दोनों में एक शैक्षिक संगठन का प्रभाव, जो इसे निजी अध्ययन और स्वयं-शिक्षण कार्यक्रमों से भिन्न बनाता है;
- तकनीकी मीडिया का उपयोग; शिक्षक और शिक्षार्थी को जोड़ने तथा पाठ्यक्रम सामग्री को पहुंचाने में मुद्रित, ऑडियो, वीडियो या कंप्यूटर का उपयोग;
- द्विमार्गीय संप्रेषण का प्रावधान, ताकि विद्यार्थी इसका लाभ उठा सके या वार्ता की पहल भी कर सके; इससे यह शिक्षा में तकनीकी के अन्य उपयोगों से भिन्न बनता है;
- अधिगम प्रक्रिया की संपूर्ण अवधि के दौरान अधिगम समूह की अर्द्ध-स्थायी अनुपस्थिति, ताकि शिक्षार्थियों को शैक्षिक और समाजीकरण प्रक्रियाओं दोनों के लिए आकस्मिक बैठक की संभावनाओं के साथ व्यक्तिगत रूप से शिक्षित किया जाय, न कि समूहों में;

कीगन की इस व्यापक परिभाषा में दूरस्थ शिक्षा के सभी आवश्यक तत्व, पक्ष और विशेषताएं सम्मिलित हैं, जो कि उपरोक्त सभी परिभाषाओं में पाई जा सकती हैं। जैसा कि कीगन (1986) ने बताया है – यह कहना महत्वपूर्ण है कि क्या दूरस्थ शिक्षा को उसी के समान या भिन्न कहा जा सकता है जैसे बिना दिवारों का विश्वविद्यालय, अतिरिक्त मौलिक अध्ययन, अनुभवात्मक अधिगम, कैम्पस के बाहर शिक्षा, मुक्त अधिगम, विस्तारत-कैम्पस आदि। कीगन ने इस क्षेत्र में संप्रेषण और सिद्धांत निर्माण के सभी आधुनिक विकासों को सम्मिलित किया है।

इन शब्दों और कुछ अन्य संबंधित शब्दों के बारे में आप संक्षेप में आगे के भाग में जानेंगे।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

- 1) किस विचारक ने कहा कि एक औद्योगीकृत शिक्षण-अधिगम प्रणाली में मानव सहायता की आवश्यकता होती है?

.....

.....

.....

2) वेडमेयर, मूरे और डोहमेन की परिभाषाओं में क्या सामान्य है?

.....

.....

.....

.....

.....

2.3 प्रासंगिक पदों की व्याख्या

कई व्यक्तियों द्वारा 'दूरस्थ शिक्षा' को कुछ शब्दों जैसे अनौपचारिक शिक्षा, अपारम्परिक शिक्षा, मुक्त शिक्षा, पत्राचार-शिक्षा आदि शब्दों के पर्याय के रूप में गलत समझा गया है। यहाँ आप कीर्गन और अन्य विचारकों द्वारा उपयोग किए गए अन्य शब्दों का पुनः स्मरण कर सकते हैं जो पूर्व के भागों में दिए गए हैं। वर्तमान समय में उपयोग हो रहे ये सभी शब्द उनके सही अर्थ के बारे में संदेह उत्पन्न करते हैं। विशेषरूप से यह तब होता है, जब इन शब्दों को अनुपयुक्त ढंग से परिभाषित किया जाता है और/या अनुचित तरीके से समझा जाता है।

मुझे विश्वास है कि शायद आप 'दूरस्थ शिक्षा' शब्द की अवधारणा और उपयोग के विषय में स्पष्ट हो गए हैं और उपरोक्त पैराग्राफ में दिए गए संबंधित शब्दों के साथ भ्रमित नहीं हैं। यदि आप अभी भी भ्रमित हैं तो चिंता मत कीजिए। इन संबंधित शब्दों पर निम्नलिखित संक्षिप्त चर्चा आपके भ्रम को दूर करेगी।

2.3.1 अनौपचारिक शिक्षा

अनौपचारिक शिक्षा, जैसा शब्द से बोध होता है, यह औपचारिक या परंपरागत प्रणाली से बाहर कई शिक्षार्थियों की पहुंच के लिए उपलब्ध होना माना जाता है। यह इंगित करता है कि यह एक ऐसी शिक्षा है जो औपचारिकताओं से मुक्त या सुगम औपचारिकताओं के साथ शिक्षा की विभिन्न प्रकार के शिक्षार्थियों तक अधिक पहुंच बनाती है।

कुछ लोग अनौपचारिक शिक्षा को अपारंपरिक शिक्षा कहते हैं। हार्टनैट (1972) के अनुसार *अपारंपरिक शिक्षा* शिक्षण अनुभवों का एक युग्म है जो समय और स्थान की सीमाओं से मुक्त है। कूमब्स तथा अन्य (1973) ने अनौपचारिक शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया है: "स्थापित औपचारिक प्रणाली के बाहर कोई संगठित शैक्षिक क्रियाकलाप - स्वतंत्र रूप से परिचालित या किसी विस्तृत क्रियाकलाप के एक अंग के रूप में परिचालित - जिसका प्रयोजन पहचान योग्य अधिगम ग्राहकों और अधिगम उद्देश्यों के लिए कार्य करना है।" इस परिभाषा को स्पष्ट करने के लिए उन्हीं लेखकों ने औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के बीच भेद किया। अनौपचारिक शिक्षा "वास्तविक रूप में एक आजीवन प्रक्रिया, जिसके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति दैनिक अनुभवों, और अपने वातावरण के शिक्षाप्रद अनुभवों एवं प्रभावों और संसाधनों से, परिवार एवं पड़ोसियों से, कार्य एवं खेलों से, बाजार से, पुस्तकालय एवं जन मीडिया से अभिवृत्तियों, मूल्यों, कौशलों और ज्ञान को अर्जित करता है।" उनके द्वारा औपचारिक शिक्षा को इस प्रकार परिभाषित किया गया है "पदानुक्रमित संरचित, कालक्रमानुसार श्रेणीबद्ध 'शिक्षा प्रणाली' जो प्राथमिक विद्यालय से विश्व-विद्यालय तक चलती है और सामान्य शैक्षिक अध्ययन के अतिरिक्त, पूर्णकालिक व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण हेतु विविध विशेषीकृत कार्यक्रम और संस्थानों को सम्मिलित करती है।"

यद्यपि, राडक्लीफ और कोल्लेट्टा (1989) ने कहा – “व्यवहारिक रूप में औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा के बीच सीमांकन की कोई कठोर रेखा नहीं है। बहुत से क्रियाकलाप मात्र एक वर्ग में रखे जा सकते हैं, जबकि कई दो या सभी क्षेत्रों को साझा करते हैं।” दूसरे शब्दों में, यह बोध होता है कि औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा के बीच सैद्धांतिक अंतर मान्य है।

अनौपचारिक शिक्षा को विद्यालयों में प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक किसी भी स्तर पर संगठित किया जा सकता है। विश्व विद्यालयों या उच्च शिक्षा संस्थानों में मुक्त विश्वविद्यालय आजकल अधिक प्रचलित पद (शब्द) है जिसको एक ऐसे संस्थान हेतु उछाला गया है जो उच्च शिक्षा को अनौपचारिक और मुक्त ढंग से प्रदान कर रहा है। यह विविध आवश्यकताओं और रुचियों के शिक्षार्थियों के लिए प्रासंगिक, लचीली, व्यवस्थित और विविध प्रकार की शिक्षा प्रदान करने की संभावनाओं में वृद्धि करती है।

2.3.2 डी-स्कूलिंग

डी-स्कूलिंग एक दर्शन है जो अनौपचारिक शिक्षा की अवधारणा को रेखांकित करता है। सरल शब्दों में इसका अर्थ है शिक्षा को विद्यालय के सीमाओं से बाहर लाना। दूसरे शब्दों में, यह औपचारिक प्रणाली की सभी कठोरताओं से हटकर मुक्त शिक्षा का समर्थन करता है जैसे— एक समय पर प्रवेश, निश्चित कक्षा-कक्ष, नियमित उपस्थिति, निर्धारित और सामान्य पाठ्यक्रम, कठोर समय/शिक्षण और अधिगम के कालांश, परीक्षा आदि।

सन् 1970 के प्रारम्भ में, ईवान इलिच एक शैक्षिक भविष्य की कल्पना कर रहे थे जिसमें पारंपरिक कक्षा-कक्ष के स्वामित्व ज्ञान संबंधों को परिवर्तित किया गया। एक मुख्य भ्राति जिस पर विद्यालय प्रणाली आधारित है, वह है कि ‘अधिकांश अधिगम शिक्षण का परिणाम होता है। यह सत्य है कि नियत परिस्थितियों के अर्न्तगत शिक्षण कुछ निश्चित प्रकार के अधिगम में योगदान करता है। परन्तु, अधिकांश व्यक्ति अपने अधिकांश ज्ञान का अर्जन विद्यालय के बाहर से करते हैं और विद्यालय में मात्र विद्यालय से प्राप्त ज्ञान, और यह उनके जीवन के बढ़ते हुए भाग के दौरान परिरोध का स्थान बन जाता है। अधिकांश अधिगम आकस्मिक रूप से संपन्न होता है, यहां तक कि अधिकांश इच्छानुसार अधिगम क्रमादेशित निर्देश का परिणाम नहीं होता है (<http://newlearningonline.com/new-learning/chapter-2/ivan-illich-on-deschooling>)।

अब देखना है कि अनौपचारिक शिक्षा, डी-स्कूलिंग और मुक्त अधिगम में क्या अंतर है? वास्तव में, ये शब्द पर्यायवाची हैं और एक ही दर्शन का समर्थन करते हैं। अनौपचारिक शिक्षा, शैक्षिक प्रक्रिया को औपचारिकताओं/कठोरताओं से मुक्त रखने पर बल देती है, जबकि डी-स्कूलिंग शिक्षा को विद्यालय के भौतिक वातावरण से बाहर लाने पर बल देती है जिसमें मुख्य रूप से सभी शैक्षिक संस्थान सम्मिलित होते हैं।

क्या पत्राचार शिक्षा इस दिशा में एक कदम है? इसका उत्तर जानने के लिए आइए समझते हैं कि पत्राचार शिक्षा क्या है?

2.3.3 पत्राचार शिक्षा

पत्राचार शिक्षा की साधारण शुरुआत को सन् 1840 में ढूंढा जा सकता है, जब आइजेक पिटमैन ने डाक द्वारा आशु लिपि (शार्टहैंड) का शिक्षण प्रारम्भ किया (मोरिस, 2011; रौन्ट्री 1992)। पिटमैन ने अपने कई शिक्षार्थियों तक पहुंचने के लिए डाक का उपयोग किया जो उसी माध्यम द्वारा उसके पास वापस जाते थे। प्रारम्भ के इस अनुभव के बाद पत्राचार शिक्षा

पूरे विश्व में फैली और शीघ्र ही सभी प्रकार के विषय और पाठ पत्राचार शिक्षा द्वारा पढ़ाए जाने लगे।

आइए, पत्राचार शिक्षा की कुछ प्रगतिशील परिभाषाओं और अभ्यास पर दृष्टि डालते हैं। पत्राचार शिक्षा में सम्मिलित है “विद्यार्थी के पास भेजे गए अध्ययन-सामग्री के बैच, जो तब आवश्यक पठन और अभ्यासों को पूरा करता है और उसे नियत व्यक्तिगत ट्यूटर द्वारा ऑकलन हेतु महाविद्यालय के पास वापस भेजता है। अभ्यासों की जांच होती है और विद्यार्थी टिप्पणी, सलाह और सामान्य मार्गदर्शन प्राप्त करता है” (लेग्गे, 1982)।

उपरोक्त परिभाषा में, निम्नलिखित आवश्यक तत्वों का अवलोकन किया जा सकता है :

- i) डाक द्वारा विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री की आपूर्ति;
- ii) विद्यार्थियों द्वारा पठन एवं लेखन अभ्यास/सत्रीयकार्य; तथा
- iii) विद्यार्थियों को ट्यूटर द्वारा उनके अभ्यासों/सत्रीयकार्य पर ऑकलन और प्रतिपुष्टि।

यद्यपि यह परिभाषा आमने-सामने संपर्क की आवश्यकता की उपेक्षा करती है, फिर भी यह इंगित करती है कि वहां डाक द्वारा संगठित निर्देश और शिक्षा होते हैं।

पत्राचार शिक्षा वह शिक्षा है जो शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच बिना आमने-सामने संपर्क के डाक द्वारा संचालित होती है। शिक्षण शिक्षार्थी को भेजी गई लिखित या टेप द्वारा रिकार्ड की गई सामग्री द्वारा होता है, जिसकी प्रगति का पर्यवेक्षण शिक्षक को भेजी गई लिखित या टेप-रिकॉर्डेड सामग्री द्वारा की जाती है। शिक्षक उनमें सुधार करता है और उन्हें आलोचना और परामर्श के साथ शिक्षार्थी के पास वापस भेजता है। इसे पत्राचार अध्ययन भी कहा जाता है (टिटमस, 1989) हम देख सकते हैं कि यह परिभाषा भी आमने-सामने संपर्क और मानव-तत्त्व पर खामोश है। परंतु यह इस भाव से अधिक नवीन है कि यह इलैक्ट्रॉनिक मीडिया को पत्राचार शिक्षा की सीमा के अंदर लाती है।

उक्त परिभाषाओं से एक चीज पत्राचार शिक्षा के बारे में बहुत स्पष्ट होती है कि यह उनके लिए शिक्षा का एक माध्यम है जो लिखित भाषा में प्रवीणता के साथ साक्षर हैं और पहले से ही कुछ शैक्षिक योग्यताओं और कौशलों को धारण करते हैं। साधारणतः ये साक्षर व्यक्ति अपेक्षाकृत अधिक परिपक्व होते हैं और इस स्थिति में होते हैं कि उनके पास भेजी गई सामग्री के स्व-अध्ययन या स्वयं की समझ द्वारा अपने आप सीख सकते हैं और वहाँ शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच आमने-सामने संपर्क के प्रावधान भी हो सकता है और नहीं भी हो सकता है। सामान्यतया, यह मुद्रित अधिगम सामग्री कुछ प्रशिक्षित विषय-विशेषज्ञों द्वारा तैयार की जाती है और शिक्षार्थियों के पास उनके पढ़ने के लिए डाक द्वारा भेजी जाती है, साथ ही उन्हें कुछ लिखने के सत्रीय कार्य भी दिए जाते हैं। सामान्य रूप से, शिक्षार्थियों को औपचारिक विद्यालय/कक्षा-कक्ष के वातावरण का अनुभव विकसित करने के लिए किसी सुविधाजनक स्थान पर संपर्क कक्षाएं/कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं, जहाँ पर शिक्षक और शिक्षार्थियों को अंतःक्रिया का अवसर मिलता है। पाठ्यक्रम के अंतिम समय में परीक्षाओं का संचालन किया जाता है और योग्य अभ्यर्थियों/शिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र, डिप्लोमा, और/या डिग्री प्रदान किए जाते हैं।

पत्राचार शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा से किस प्रकार भिन्न है?

पत्राचार शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा में अंतर

भाग 2.2 और उपभाग 2.3.3 का संयुक्त रूप से अध्ययन के बाद, हमारे लिए पत्राचार शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा में अंतर करना सरल हो जाता है। पत्राचार शिक्षा में, मुद्रण अनुदेश का

एकमात्र साधन है और मुद्रित सामग्री/पाठ, शिक्षक और विद्यार्थियों के बीच एवं विद्यार्थियों में आमने-सामने संपर्क के प्रावधान के साथ या बिना प्रावधान के, अधिगम का एकमात्र साधन है। दूरस्थ शिक्षा में, प्रिंट मीडिया के अतिरिक्त ऑडियो, वीडियो, रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, कंप्यूटर्स आदि अनुदेश का माध्यम बनाते हैं। पत्राचार एवं दूरस्थ शिक्षा दोनों में सामग्री को डाक द्वारा भेजा जाता है, परन्तु दूरस्थ शिक्षा में मल्टीमीडिया उपागम का उपयोग होता है, जिसमें मानव संपर्क (आमने-सामने) का उपयोग अनुदेशनात्मक प्रयोजनों के लिए सम्मिलित है। पत्राचार शिक्षा की तुलना में दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थी सहायता सेवाएं अधिक संशोधित हैं। पत्राचार शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा दोनों ही प्रमाण-पत्र प्रदान करने के लिए नियत ज्ञान देती है, परन्तु दूरस्थ शिक्षा के विविध लक्ष्य हैं जिनमें सम्मिलित हैं: बेहतर रोजगार संभावनाओं के लिए प्रशिक्षण और रोजगार वृद्धि, अभिवृत्तियों में परिवर्तन, व्यक्तिगत विकास आदि। यद्यपि प्रवेश और परीक्षा विधि पत्राचार शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा दोनों में समान है, तथापि पहली शिक्षा साधारणतः पारंपरिक महाविद्यालय/विश्वविद्यालय के विस्तार के रूप में प्रस्तुत की जाती है, जबकि दूसरी उन संस्थानों द्वारा प्रस्तुत की जाती है, जो अधिकतर स्वतंत्र और स्वायत्त होते हैं। इस प्रकार, आपने ध्यान दिया कि पत्राचार और दूरस्थ शिक्षा में अंतर का आधार उनके उद्देश्य, उपागम, विधियाँ, मीडिया और अभिविन्यास है।

क्या दूरस्थ शिक्षा और दूरस्थ अधिगम एक तथा समान है?

2.3.4 दूरस्थ अधिगम

दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण और अधिगम दोनों पर बल होता है। अर्थात्, वहाँ दूरस्थ शिक्षार्थियों में अधिगम को बढ़ावा देने के लिए संगठित शिक्षण होता है। दूरस्थ-अधिगम में अधिगम पर अधिक बल होता है न कि शिक्षण पर। दूरस्थ अधिगम यह मानता है कि एक शैक्षिक उद्यम में अधिगम का उत्तरदायित्व शिक्षार्थियों पर अधिक होता है, जबकि एक दूरस्थ शिक्षक मात्र अधिगम को बढ़ावा देने वाले या सुविधाप्रदाता की भूमिका का निर्वाह करता है, जो सामान्यतः शिक्षार्थी से समय, स्थान और दूरी द्वारा पृथक होता है। इस प्रकार, दूरस्थ शिक्षा में दूरस्थ शिक्षक शिक्षार्थियों की सहायता हेतु विधि, मीडिया, सामग्री और सहायता सेवाओं को चुनने में स्वतंत्र होता है। दूरस्थ अधिगम मानता है कि अधिगम का उत्तरदायित्व मुख्य रूप से दूरस्थ शिक्षार्थी पर है जिसमें शिक्षार्थी एक विशेष पाठ्यक्रम/या कार्यक्रम के नामांकन हेतु चयन और निर्णय स्वयं करता है। साथ ही मीडिया का चयन भी उसी का होता है; जिसके द्वारा क्या, कैसे और किस गति से सीखना है।

अधिकांश मनोवैज्ञानिक यह मानते हैं कि अधिगम का अर्थ सूचना और ज्ञान का अर्जन है जिसका परिणाम व्यवहार में परिवर्तन होता है (यही शिक्षा का लक्ष्य और दूरस्थ शिक्षा का उद्देश्य है)। परन्तु, दूरस्थ शिक्षा शिक्षार्थी के लिए प्रस्तुत सूचना और सामग्री को उसकी स्वयं की समझ के आधार पर अध्यारोपित करने का स्थान रखती है, जोकि सुविधाप्रदाता द्वारा प्रस्तुत प्रयोजन की समझ से भिन्न हो सकती है। इसके अतिरिक्त, शिक्षार्थी को यह स्वतंत्रता होती है कि वह अपनी समझ और प्रस्तुत सूचना का उपयोग किसी भी रचनात्मक तरीके से परिस्थितियाँ और वातावरण जो उसकी इच्छा के अनुकूल हो, बिना उस सुविधाप्रदाता या संस्थान, जिसने अधिगम सामग्री सृजित की है, का आश्रय लिए हुए के द्वारा कर सकता है (<http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf>)। इस प्रकार, दूरस्थ शिक्षा संगठित शिक्षण और अधिगम की पूर्वमान्यता है, दूरस्थ अधिगम शिक्षार्थी को स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व की अनुमति देती है।

तब 'दूरस्थ अधिगम,' 'मुक्त और दूरस्थ अधिगम' से किस प्रकार भिन्न है?

2.3.5 मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम

दूरस्थ अधिगम को बिल्कुल भी मुक्त होने की आवश्यकता नहीं है (राउनट्री, 1992: 30)। यह सुझाता है कि 'मुक्त अधिगम' और 'दूरस्थ अधिगम' में अंतर है। कई दशकों तक "दूरस्थ अधिगम" का वर्णन दूर से संगठित, वितरित और अर्जित अधिगम के रूप में किया गया है। बीसवीं शताब्दी के अंत तक 'मुक्त' शब्द दूरस्थ अधिगम के साथ पूर्व में जुड़ गया। यह तीन महत्वपूर्ण विकासों: औपचारिक विद्यालयी प्रणाली के विरोध में आलोचनाओं, जी. ए.टी.टी. (जनरल एग्रीमेंट ऑन टैरिफ्स एंड ट्रेड्स) और वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप हुआ (<http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf>)। इसका अर्थ है दूरस्थ अधिगम मुक्त या अधिक औपचारिक हो सकता है।

वर्ष 1994 में, जब जनरल एग्रीमेंट ऑन टैरिफ्स एंड ट्रेड्स (जी.ए.टी.टी) ने शिक्षा को अन्तर्राष्ट्रीय विक्रेय वस्तु बनाया, तो इस समझौते का मुक्त और दूरस्थ अधिगम के विकास पर गहरा सकारात्मक प्रभाव पड़ा और इससे भी अधिक उन समाजों में शैक्षिक परस्पर क्रिया को बढ़ावा देने में, जोकि विशाल भौगोलिक दूरी के परिणाम स्वरूप एक दूसरे से पृथक हैं और उन्होंने कभी भी शैक्षिक सहयोग के बारे में कल्पना नहीं की (प्रीसे और बियो, 2011)।

इस प्रकार, पृथ्वी के बहुत से निवासियों के लिए अधिगम अवसरों को आरंभ किया उनकी भौगोलिक अवस्थिति के भेदभाव के बिना यह पूर्व में कभी नहीं किया था। मुक्त अधिगम की अवधारणा तब शैक्षिक पदावली में प्रवेश किया एवं दूरस्थ से किए जा रहे अधिगम प्रबंधन के अतिरिक्त "दूरस्थ अधिगम" को द्योतित करने हेतु "मुक्त" उपसर्ग जोड़ा गया, यह "मुक्त अधिगम" के समान ही है, जिसमें "मुक्त अधिगम" को निम्नलिखित होना समझा जाता है

"... व्यक्तियों को ऐसा समय, स्थान और जगह जो उनकी परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं को संतुष्ट करती है पर अधिगम हेतु सक्षम बनाने के लिए व्यवस्थाएं उन बाधाओं जो भौगोलिक अलगाव, व्यक्तिगत कार्य प्रतिबद्धताओं या पारंपरिक पाठ्यक्रम संरचना का परिणाम है, जिन्होंने व्यक्तियों की प्रायः उनकी आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षण तक पहुंच को रोका है को दूर करके अवसरों को खोलने पर बल है।" (राउनट्री, 1992, <http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf>)।

और होने के लिए :

"... अधिगम अवसरों की वृहद श्रृंखला, जिसका दो लक्ष्य शिक्षार्थियों को ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में सहायता देना है जो अन्यथा प्राप्त नहीं होते और शिक्षार्थियों को उनके स्व-अधिगम पर नियंत्रण का अनुकूलतम अंश प्रदान करना।" (डिक्सॉन, 1987; <http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf>)।

मुक्त अधिगम की एक आवश्यक विशेषता पहुंच और अधिगम में जो बाधाएँ समय, स्थान, गति और तकनीकी के संदर्भ में है को दूर करना है। आदर्श रूप में कहा जाय तो, किसी भी व्यक्ति को मुक्त दूरस्थ अधिगम कार्यक्रम की पहुंच से वंचित नहीं किया जा सकता। परन्तु, वास्तव में कोई भी मुक्त दूरस्थ अधिगम कार्यक्रम पूर्णरूप से सही अर्थ में मुक्त नहीं होता। दूसरे शब्दों में, 'मुक्त अधिगम, और 'दूरस्थ अधिगम' लचीलेपन की मात्रा के आधार पर पैमाने बढ़ाने लायक होने चाहिए जो दिए गए संदर्भों में संभव होता है।

2.3.6 मुक्त शिक्षा

हम सब जानते हैं कि औपचारिक शिक्षा संस्थाओं की अपनी औपचारिकताएं तथा प्रतिबंध होते हैं, जो प्रवेश, सीटों की संख्या, पाठ्यक्रम अवधि, निर्देश, परीक्षा एवं अन्य प्रविधियां हैं। यदि इन प्रतिबंधों और औपचारिकताओं को लचीला कर दिया जाय या हटा दिया जाय तो अधिगम और शिक्षा अधिक लचीली तथा मुक्त बन सकती है।

जरविस (1990) के अनुसार "मुक्त शिक्षा एक ऐसा शीर्षक है जो शिक्षण और अध्ययन की अधिक लचीली विधियों के लिए दिया गया है। इसमें पहुंच, विषय वस्तु, संचालन प्रणाली और आँकलन में स्वतंत्रता होती है। कुछ महाविद्यालय या प्रदाता-आधारित प्रणाली हैं, जिनमें शिक्षार्थी केन्द्रों पर उपस्थित होते हैं; कुछ स्थानीय-आधारित प्रणाली हैं जो अध्ययन में लचीलापन और सहायता रखते हैं, परंतु यहाँ पर अधिगम शिक्षार्थियों द्वारा उनके घर पर संचालित होता है और दूरस्थ अधिगम प्रणाली। वास्तव में मुक्तता की विशेषता है : लचीलापन या बिना कठोरता के प्रवेश, योग्यता, व्यक्ति की स्वयं की गति और सुविधा के अनुसार अधिगम, पाठ्यक्रम के चयन में लचीलापन, आधुनिक और उपयुक्त शैक्षिक एवं संप्रेषण तकनीकी का उपयोग। मुक्त अधिगम/शिक्षा दूरस्थ अधिगम प्रणाली या संस्पर्शी/पारंपरिक प्रणाली के माध्यम से उसमें स्वतंत्रता और लचीलेपन के समावेश द्वारा भी प्रदान की जा सकती है। अतः यह एक दर्शन या उपागम को संदर्भित करता है, जो दोनों स्थितियों में प्रयुक्त हो सकता है।

एस्कोटेट (1983) मुक्त शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा में अंतर करते हैं। उनके लिए मुक्त शिक्षा की मुख्य विशेषता है : प्रतिबंधों, पर्यटनों और विशेष अधिकारों से मुक्त करने का दर्शन विद्यार्थियों के पूर्व अनुभवों का प्रमाणन, समय चर के प्रबंधन में लचीलापन और प्रोफेसर्स एवं विद्यार्थियों के बीच पारंपरिक संबंधों में ठोस परिवर्तन। दूसरी ओर, दूरस्थ शिक्षा एक ऐसा साधन है, जो शिक्षार्थियों को स्वयं के निवास स्थान या कार्य-स्थान से अधिगम के अवसर प्रदान करती है। इस प्रकार, दूरस्थ शिक्षा का प्रयोजन मुक्त शिक्षा को प्रोत्साहन देना है।

अब, शायद आप दो अवधारणाओं के बारे में स्पष्ट हो गए होंगे – दूरी और मुक्तता। 'दूरी' पद्धति को संदर्भित करती है, जबकि 'मुक्तता' दर्शन को। मुक्तता को लचीलेपन या सुविधाजनक या प्रतिबंधों के अभाव के संदर्भ में देखा जाता है। जबकि औपचारिक/पारंपरिक शिक्षा आवश्यक नहीं है कि अवरुद्ध या बन्द हो, दूरस्थ शिक्षा मुक्त हो सकती है और नहीं भी। मुक्त शिक्षा पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं दोनों के द्वारा संभव है। लेकिन, व्यावहारिक रूप में यह सत्य है कि अपनी प्राकृतिक विशेषताओं के कारण औपचारिक संस्थान प्रतिबंधों में उस सीमा तक छूट नहीं दे सकते जितना कि दूरस्थ शिक्षा संस्थान, यह छूट प्रवेश, पाठ्यक्रम का चयन, पाठ्यक्रम के संयोजन, मूल्यांकन आदि में होती है।

कुछ अन्य शब्द भी हैं जैसे गृह अध्ययन, स्वतंत्र अध्ययन, कैम्पस के बाहर अध्ययन, सीमा के बाहर अध्ययन जो प्रायः दूरस्थ शिक्षा या मुक्त शिक्षा के पर्यायवाची के रूप में उपयोग में लाए जाते हैं। इन शब्दों की संक्षेप में व्याख्या निम्न हैं :

- i) **गृह अध्ययन** : यह एक ऐसी शिक्षा है जो विद्यार्थियों के लिए घर पर अध्ययन के लिए रूपांकित की गई है। यह शब्द मुख्य रूप से यूरोप तक सीमित है, शायद यह स्वीडिश स्कूल ऑफ कौरेस्पोंडेंस कोर्सेस के प्रभाव के कारण हो सकता है। तथापि, यह कनाडा और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के कई स्थानों पर भी उपयोग में लाया जा रहा है।

**मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा :
उद्भव एवं विकास**

- ii) **स्वतंत्र अध्ययन:** हमने वेडेमेयर द्वारा दी गई स्वतंत्र अध्ययन की परिभाषा के बारे में पढ़ा है जो स्पष्ट रूप से वर्णित है। वास्तव में यह उनके लेखों द्वारा ही आज उत्तरी अमेरिका में प्रचलित हो गया है।
- iii) **कैम्पस के बाहर अध्ययन :** यह कैम्पस के अंदर परंपरागत प्रकार के अध्ययन के विपरीत है और प्रशांत (पेसिफिक) क्षेत्रों – ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण एशियाई देशों – में विस्तृत रूप से उपयोग में लाया जाता है।
- iv) **बाह्य अध्ययन :** इसका उपयोग ऑस्ट्रेलिया में होता है। यह व्यक्ति को भ्रमित कर सकता है जब कोई व्यक्ति इसे 'वाह्य प्रणाली' समझता है, जैसा कि वर्षों पूर्व यह लंदन में क्रियान्वित था। लंदन का 'बाह्य प्रणाली' मॉडल ने शिक्षार्थियों के लिए मान्य परीक्षाओं में बैठना संभव बनाया, परंतु शिक्षण प्रणाली के साथ आवश्यक रूप से संबद्ध नहीं है। ऑस्ट्रेलिया ने इस शब्द को स्पष्ट कारणों से अपनाया। यह भी स्पष्ट है कि यह शब्द उन सबका भाव नहीं बताता जो आज 'दूरस्थ शिक्षा' शब्द का अर्थ समझे जाते हैं।
- v) **दीवार के बारह अध्ययन :** यह अभिव्यक्ति न्यूजीलैंड में उपयोग की जाती है जो यह संप्रेषित करता है कि दूरस्थ शिक्षा का अर्थ अधिकांश व्यक्तियों के लिए क्या है।
- vi) **दीवार रहित विश्वविद्यालय:** यह अमेरिका में एक 'मुक्त अधिगम' आंदोलन है जो जीविका और जीवन अनुभवों के लिए शैक्षिक साख (क्रेडिट) प्रदान करता है और शिक्षण एवं अधिगम कोर्सेस का संगठन करता है।

इन शब्दों की स्थानीय प्रचलन को सम्मान देते हुए, निस्संदेह ये सभी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जाने गए शब्दों के भाग हैं जो मुक्त और दूरस्थ शिक्षा (ओ.डी.ई.) को संदर्भित करते हैं।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

2) दूरस्थ शिक्षा, पत्राचार शिक्षा से कैसे भिन्न है? इस संदर्भ में 'दूरस्थ' एवं 'मुक्त' पदों की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.3.7 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा, मुक्त शिक्षा/मुक्त अधिगम और दूरस्थ शिक्षा का संयुक्त प्रभाव है। इसका अर्थ है दर्शन (मुक्त शिक्षा या मुक्त अधिगम के अन्तर्गत) और पद्धति (दूरस्थ शिक्षा के अन्तर्गत) का संयोजन। अर्थात् मुक्त और दूरस्थ शिक्षा। इसका तात्पर्य है – दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से मुक्त शिक्षा। इसका आशय यह भी है कि दूरस्थ शिक्षा सदैव 'दूरी' और 'मुक्तता' के वास्तविक संदर्भ में मुक्त हो, यह आवश्यक नहीं है। क्योंकि कार्यक्रम की मुक्तता एक सापेक्षिक विशेषता है, अतः सभी दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को समान मात्रा में मुक्त होना आवश्यक नहीं है और न ही हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में, दूरस्थ शिक्षा भी अधिक पारंपरिक प्रकृति की हो सकती है, यदि यह कठोर मापदंडों पर आधारित हो। इस प्रकार, स्पष्ट है कि दूरस्थ शिक्षा 'मुक्त दूरस्थ शिक्षा' या 'पारंपरिक दूरस्थ' शिक्षा हो सकती है। तथापि एक भी दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम ऐसा नहीं है जो पूर्णतया मुक्त हो, क्योंकि इसे हमेशा अन्य कार्यक्रमों के साथ इसके संबंध के रूप में माना और व्यक्त किया जाता है।

उपर्युक्त पदों के बीच समानताएं और भिन्नताएँ : अधिक स्पष्टता के लिए, हमें सदैव इन शब्दों – मुक्त अधिगम, लचीला अधिगम, ऑनलाइन /वर्चुवल लर्निंग, मुक्त शिक्षा और दूरस्थ शिक्षा को उनके सापेक्षिक और तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य में समझने की आवश्यकता है। क्योंकि ये शब्द कई व्यक्तियों द्वारा प्रायः समान अर्थ के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं; यद्यपि इनके बीच कुछ महत्वपूर्ण अंतर है। अतः इन शब्दों में अंतर और समानताएं उनकी मुक्तता, दूरी, लचीलापन, ऑनलाइन और वर्चुवललिटी के संदर्भ में है।

2.3.8 आजीवन अधिगम/शिक्षा

यह मान्यता नयी नहीं है कि शिक्षा एक आजीवन प्रक्रिया है और बालपन एवं युवावस्था तक सीमित नहीं है। इसका कारण यह सत्य है कि एक व्यक्ति अपनी प्रौढ़ावस्था में बचपन और युवावस्था की तुलना में अधिगम वर्ष व्यतीत करता है तथा जिन क्रियाकलापों में वह संलग्न रहता है, उसमें उसका निष्पादन, उसकी कार्यात्मक क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली कई क्षेत्रों में निष्फल रही है और विविध व्यक्तियों की बदलती हुई आवश्यकताओं और माँगों की पूर्ति करने में असफल सिद्ध हुई है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण हैं: सीमित लक्ष्य और उद्देश्य, शिक्षाप्रद प्रक्रिया में असुविधाएँ और कमियाँ, अप्रासंगिक पाठ्यक्रम और पूर्ण रूप से पारंपरिक प्रणाली की असफलता। परिणाम स्वरूप शिक्षा में संकट उत्पन्न हो गया और यह प्रणाली व्यक्तियों को उनके आधुनिक और परिवर्तनशील जीवन की चुनौतियों का सामना करने के योग्य नहीं बना सकी। संकट के समाधानों को ढूँढ़ने की प्रक्रिया में और एक अधिगमशील समाज या एक शिक्षात्मक समाज की ओर प्रयासरत रहने के लिए 'आजीवन शिक्षा' को पूरे विश्व में बढ़ती हुई मान्यता और स्वीकार्यता प्राप्त हुई।

यूनेस्को की रिपोर्ट 'लर्निंग टू बी' (फारे, 1972), आजीवन शिक्षा पर एक महत्वपूर्ण अग्रणी दस्तावेज है। इसमें व्यक्ति, शिक्षा और समाज के बारे में विकसित सुसंगत दर्शन सम्मिलित है, जिसका संबंध आजीवन अधिगम से है। समाज को परिवर्तित करने के लिए यह शिक्षा के प्रति एक आशावादी विचार अपनाता है। सीखने की उत्सुकता, 'लिबिडो सेडी' मानव प्रकृति में गहरी जड़ें रखता है और एक बार बाह्य बाधाओं को दूर कर दिया तो यह आजीवन अधिगम के लिए आवश्यक प्रेरणा प्रदान करेगा। भावी समाज अधिगमशील समाज होगा और भावी समाज की संस्कृति 'वैज्ञानिक मानववाद' होगी। रिपोर्ट के अनुसार "प्रत्येक व्यक्ति इस स्थिति में होना चाहिए कि वह अपने जीवन पर्यन्त सीखना जारी रख सके? आजीवन शिक्षा का विचार अधिगमशील समाज की कुंजी है। आने वाले समय में आजीवन

2.3.8.1 अवधारणा

अवधारणा की बेहतर समझ के लिए आइए हम आजीवन शिक्षा की कुछ परिभाषाओं का अवलोकन करें। यूनेस्को (1976) परिभाषित करता है, आजीवन शिक्षा एक प्रक्रिया है, जो एक व्यक्ति के बचपन में आरम्भ होती है और उसके जीवन भर निरंतर चलती है। इसमें सम्मिलित हैं व्यक्ति द्वारा प्राप्त की जाने वाली औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक शिक्षा। शैक्षिक और अधिगम प्रक्रिया जिसमें सभी आयु के बच्चे, युवा और प्रौढ़ अपनी जीवनयात्रा के दौरान संलग्न रहते हैं, वे जिस रूप में भी हो, सभी को समग्र रूप में समझा जाना चाहिए। दवे (1976) आजीवन शिक्षा को इस प्रकार मानते हैं : “व्यक्तियों और उनके समुदाय दोनों के जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि हेतु उनकी संपूर्ण जीवन अवधि के दौरान व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक विकास के संपूर्ण प्रक्रिया है। यह एक व्यापक और एकीकृत विचार है, जिसमें व्यक्ति के जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में संभावित पूर्ण विकास की प्राप्ति हेतु ज्ञानार्जन और उसमें वृद्धि हेतु औपचारिक, अनौपचारिक और निरौपचारिक अधिगम सम्मिलित हैं। यह व्यक्तिगत प्रगति और सामाजिक विकास दोनों से संबंधित है”। जारविस (1990) के अनुसार; आजीवन शिक्षा घटनाओं की नियोजित श्रृंखला है, जिसके मानवीय आधार हैं, जो प्रतिभागियों के अधिगम और समझ की ओर दिशा-निर्देशित हैं, जो जीवन अवधि की किसी भी अवस्था में हो सकते हैं। कुछ नियत उपागमों और उसके अन्तर्गत दर्शनों के पुनरावलोकन द्वारा वह व्यक्त करते हैं कि आजीवन शिक्षा एक अवधारणा और आदर्श है जो तब तक निरर्थक रहता है, जब तक कि इसे वास्तव में क्रियान्वित नहीं किया जाता।

यद्यपि परिभाषाओं की शब्दावली भिन्न है, तथापि हम आजीवन शिक्षा को एक अवधारणा के रूप में समझ सकते हैं, जो :

- सभी आयु वर्ग के सभी व्यक्तियों की शिक्षा के सभी प्रकार और प्रक्रियाओं को सम्मिलित करती है।
- पूर्णकालिक शिक्षा के प्रारंभिक चक्र तक सीमित सभी अनुभवों, जो बचपन से शुरू होते हैं, को एक बार में समाहित करने का प्रयोजन नहीं रखती, परंतु एक प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति के जीवन पर्यन्त निरंतर चलनी चाहिए।
- निरंतर अधिगम प्रक्रिया है, जो प्रत्येक व्यक्ति को जीवन-पर्यंत आगे की ओर नई शिक्षा के व्यावसायिक और सामान्य क्षेत्रों में अवसर प्रदान करती है।
- व्यक्ति को अपनी परिस्थितियों (विवाह, अभिभाविकी, व्यावसायिक स्थिति, वृद्धावस्था, आदि) के परिवर्तनों को अपनाने और अपने स्वयं के विकास हेतु अपनी पूर्ण क्षमता प्राप्त करने हेतु तकनीकी और सामाजिक परिवर्तनों से अवगत कराने का प्रयास करती है।
- व्यक्ति के प्रयोजनात्मक और आकस्मिक दोनों प्रकार के अनुभवों को समाहित करती है।

क्रोप्ले (1982) ने आजीवन शिक्षा की उभरती अवधारणा का तीन शब्दों में बदल दिया है जिसमें बदलाव और जोर के मुख्य दिशा निर्देश हैं— विस्तार नवाचार और एकीकरण। **विस्तार** का अर्थ है – समय पर अधिगम, शिक्षार्थी की संपूर्ण जीवन अवधि में अधिगम स्थितियों के गुणज सभी अवस्थाओं एवं रूपों को समाहित करना और सभी प्रकार के

अवसर प्रदान करना। *नवाचार* में अधिगम की वैकल्पिक संरचनाएं एवं प्रारूप, सामान्य और व्यावसायिक शिक्षा के बीच सार्थक परस्पर संबंध प्रदान करना तथा नवीन आवश्यकताओं के अनुसार वर्तमान प्रथाओं को अपनाना आते हैं। *एकीकरण* इनको संदर्भित करता है—शैक्षिक प्रक्रिया को अधिक प्रभावशाली बनाने और नई अधिगम स्थितियों अन्तर्विषयी के अतिरिक्त, के सृजन हेतु घर की शिक्षात्मक क्षमताएं, स्थानीय समुदाय, वृहद् समाज, कार्य संसार और मीडिया का उपयोग।

अब समझ सकते हैं, कि आजीवन शिक्षा में वृहद् रूप से सम्मिलित है वे सभी प्रक्रियाएं जिनके द्वारा व्यक्ति अपने आवश्यक व्यावसायिक विकास और मूल्यवान निजी समृद्धि हेतु आजीवन शिक्षा निरंतर अर्जित करता है। इसका अर्थ यह है कि, विद्यालयी शिक्षा में सीमित समय की उपस्थिति के अतिरिक्त अधिगम जीवन भर चलना चाहिए जिसमें सभी प्रकार के कौशलों और ज्ञान शाखाओं का संमिलन, सभी व्यक्तियों को उनके व्यक्तित्व के समग्र विकास हेतु सभी संभव माध्यमों का उपयोग और अवसर प्रदान करना सम्मिलित है।

तथापि, 'education permanente' 'आजीवन शिक्षा' के लिए प्रयुक्त एक फ्रेंच शब्द है, जो स्पष्ट करता है कि उच्च शिक्षा, औपचारिक विद्यार्थियों, साथ ही उन परिपक्व विद्यार्थियों, जिन्हें पहले उच्च शिक्षा का अवसर प्राप्त नहीं हुआ, यहां तक कि उनमें प्रवेश के लिए आवश्यक योग्यताएं भी न हों, दोनों के लिए उच्च शिक्षा मुक्त होनी चाहिए। इसका आशय यह है कि व्यक्तियों की आजीवन परंतु बाधित आवश्यकताओं जो सामाजिक, शैक्षिक और व्यावसायिक जीवन में पुनरावृत्ति हो सकती हैं, की पूर्ति हेतु शिक्षा प्रणाली के पुनर्निर्माण की आवश्यकता है।

सामयिक साहित्य में आजीवन शिक्षा के दो उपागम दिखाई देते हैं। एक है जो प्रारंभिक शिक्षा को आगे बढ़ाने पर बल देती है — जिसको कहते हैं '*आगे की शिक्षा*', और दूसरा *निरंतर शिक्षा* के विचार का उपयोग करते हुए इसे जीवन भर चलाने पर जोर देता है। आजीवन शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए, "प्रत्येक व्यक्ति को उसके बौद्धिक, भावनात्मक, सामाजिक और व्यावसायिक धरातलों पर साथ ही दो लिंगों के बीच में अभिभावकों, माता-पिता और बच्चों के बीच और इसी तरह आगे संबंधों में स्वयं को व्यक्त करने की संभावनाओं में वृद्धि करना होना चाहिए" (टिटमस, 1989)।

इस प्रकार, आजीवन शिक्षा वह है जहां व्यक्ति के जीवनभर में शैक्षिक अनुभवों का प्रावधान और उपयोग हो। इसका निहितार्थ है जीवन भर सीखना। अतः यह एक समग्र योजना है जिसका लक्ष्य वर्तमान शैक्षिक प्रणाली की पुनर्रचना और शैक्षिक प्रणाली के भीतर और बाहर पूर्ण शैक्षिक योग्यता का विकास करना, दोनों को दर्शाती है। इसके अन्तर्गत संगठन में मूल-परिवर्तन आंतरिक रूप से सम्मिलित है; शिक्षा के अन्य सभी चरणों के रूपों और विषय वस्तु में। इसका आशय यह भी है कि यह गैर-शैक्षिक संस्थाओं जैसे व्यापार, औद्योगिक, और कृषि कंपनियों के शैक्षिक कार्यों को अधिक मान्यता देती है।

2.3.8.2 सिद्धांत और विशेषताएं

आजीवन शिक्षा के वैश्विक संदर्भ में आजीवन शिक्षा अपने उद्देश्यों, संरचनाओं, पाठ्यक्रमों और विधियों में ठोस परिवर्तन की मांग करती है। क्योंकि एक संपूर्ण घटक में शिक्षा और जीवन के सभी क्षेत्र परस्पर बुने हुए हैं, इसलिए महत्वपूर्ण परिवर्तन न केवल प्रथम चरण में ही आवश्यक है बल्कि इसे एक सुसंगठित प्रणाली बनाने के लिए प्रौढ़-शिक्षा में भी आवश्यक है।

**मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा :
उद्भव एवं विकास**

अधिकांश लोग अपने जीवन का अधिक समय बचपन की तुलना में वयस्कता में व्यतीत करते हैं और प्रौढ़ावस्था में अधिगम एक आवश्यक भूमिका अदा करता है। अतः यह स्पष्ट है कि किसी भी आजीवन शिक्षा प्रणाली या योजना में प्रौढ़ शिक्षा एक मुख्य अंग होना चाहिए। टिट्मस (1989) के अनुसार, आजीवन शिक्षा के मुख्य सिद्धांत हैं :

- आजीवन शिक्षा की प्रविधियों को बढ़ावा देने के लिए इसे शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग होना चाहिए;
- विद्यालयों और विश्वविद्यालयों के समान ही शिक्षा के सभी अंशों का स्तर भी होना चाहिए; और
- सभी प्रौढ़ों को प्राकृतिक और सामान्य रूप से अधिगम में संलग्न होना चाहिए – जिस प्रकार बच्चों के लिए सार्वभौमिक शिक्षा है, उसी प्रकार प्रौढ़ों के लिए सार्वभौमिक शिक्षा।

ये सभी सिद्धांत एक व्यापक और समेकित/एकीकृत शिक्षा प्रणाली का आह्वान करते हैं जो समाज को एक अधिगमशील समाज बनाने के लिए सभी व्यक्तियों को निरंतर अधिगम प्रक्रिया में संलग्न रख सकती है।

आजीवन शिक्षा की विशेषताओं पर एक विचार इस अवधारणा की बेहतर समझ प्रदान कर सकता है। दवे (1973) द्वारा आजीवन शिक्षा की प्रासंगिक पारिभाषिक विशेषताएं संक्षेप में म्निलिखित हैं :

- व्यवस्था में तथा सेवा प्राप्त ग्राहकों की समग्रता और सार्वभौमिकता;
- शिक्षण और अधिगम विधियों और सामग्री में गतिशीलता और विविधता; तथा
- शिक्षार्थियों में आजीवन अधिगम हेतु आवश्यक व्यक्तिगत विशेषताओं के बढ़ावा पर बल (अभिप्रेरणा, स्व-छवि, मूल्य, अभिवृत्तियां और अन्य)।

परंतु, क्रोप्ले (1982), आजीवन शिक्षा की मुख्य विशेषताओं को एक विस्तृत रूप में रखते हैं। उनके अनुसार, आजीवन शिक्षा प्रदान करती है :

- जीवनपर्यंत निरन्तर अधिगम* – बचपन और युवावस्था के अतिरिक्त संपूर्ण प्रौढ़ावस्था में शिक्षा को जारी रखने के लिए;
- बाल्यावस्था की आवश्यकताएं* – युवा लोगों के लिए चिंता के साथ; क्योंकि उनकी शिक्षा भावी मनोवैज्ञानिक विकास का आधार बनाती है;
- प्रौढ़ों की आवश्यकताएं* – प्रौढ़ों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उनके निरंतर विकास के लिए उच्च स्तरीय पहलों को बढ़ावा देना;
- मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों का समन्वयन* – व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक कार्यात्मकता के कई क्षेत्रों को समन्वित करने के लिए समस्तरीय एकीकरण के सिद्धांत का अनुसरण करना;
- व्यक्तिगत वृद्धि हेतु शिक्षा* – अन्तरव्यक्तिगत/अन्तर-मानसिक वृद्धि को प्रोत्साहन देना।
- सामाजिक विकास हेतु शिक्षा* – विविध भूमिकाओं और उनकी बदलती हुई प्रकृति के बारे में शिक्षित करना तथा बदली हुई भूमिकाओं को अपनाने के लिए योग्यता में वृद्धि करना; तथा
- समता शिक्षा* – सभी व्यक्तियों का सभी अवस्थाओं पर शिक्षा की समान पहुंच प्रदान करना।

‘इंटरनेशनल कमीशन ऑन एजुकेशन फॉर ट्वंटी फर्स्ट सैन्चुरी’ पर यूनेस्को की रिपोर्ट “लर्निंग : द ट्रेजर विथिन” (यूनेस्को, 1996) के अनुसार, शिक्षा की पुनर्रचना के लिए निम्नलिखित चार स्तम्भ बुनियादी सिद्धांत हैं :

- **जानने के लिए सीखना** : संसार और उसकी जटिलताओं को बेहतर रूप से समझने के लिए आवश्यक ज्ञानात्मक उपकरण प्रदान करना तथा भावी अधिगम हेतु उपयुक्त और पर्याप्त आधार प्रदान करना।
- **करने के लिए सीखना** : वैश्विक अर्थव्यवस्था और समाज में प्रभावशाली ढंग से सहभागिता हेतु व्यक्तियों को सक्षम बनाने के कौशल प्रदान करना।
- **एक साथ मिलकर रहने के लिए सीखना** : व्यक्तियों और समाजों को शांति और भाईचारे के साथ रहने में सक्षम बनाने के लिए उन्हें मानवाधिकारों, लोकतांत्रिक सिद्धांतों, समाज के सभी स्तरों पर अन्तर्सांस्कृतिक समझ, आदर और शांति एवं मानव संबंधों का सम्मान में निहित मूल्यों के प्रति व्यक्तियों को जागरूक करना।
- **अपने अस्तित्व के लिए सीखना** : व्यक्तियों को सम्पूर्ण व्यक्ति बनने के लिए अपनी पूर्ण क्षमता – मनोसामाजिक, भावात्मक और साथ ही शारीरिक – को विकसित करने में सक्षम बनाने के लिए आत्मविश्लेषणात्मक और सामाजिक कौशल प्रदान करना।

उपयुक्त चर्चा द्वारा आप स्पष्ट रूप से समझ गए होंगे कि आजीवन शिक्षा को शिक्षा की अवधारणा में संपूर्ण परिवर्तन की आवश्यकता है और आधुनिक मानव के जीवन की अभी अवस्थाओं में आवश्यक शिक्षा और प्रशिक्षण के सभी रूपों में आमूल परिवर्तन की भी आवश्यकता है। संपूर्ण शिक्षा प्रणाली को सुधारने की प्रक्रिया सरल कार्य नहीं है, क्योंकि प्रणाली के विभिन्न अंगों के लिए इसके कई निहितार्थ हैं। उनमें से कुछ को हम यहां समझेंगे।

2.3.8.3 कार्यान्वयन के निहितार्थ

यद्यपि इस अवधारणा को सैद्धांतिक रूप से बड़ी स्वीकार्यता मिली है परंतु व्यवहार में अभी भी यह सिद्धांत की तुलना में बहुत पीछे है। इसका कारण यह है कि आजीवन शिक्षा के शिक्षार्थियों और अधिगम प्रक्रियाओं, शिक्षकों और अनुदेशनात्मक विधियों, शैक्षिक संस्थानों और आजीवन अधिगम का मूल्यांकन पर व्यापक निहितार्थ है। नेप्पर और क्रोप्ले (1985) और यूनेस्को (1996) ने इन निहितार्थों की चर्चा वैश्विक ग्राम को शिक्षित करने के प्रयासों में विस्तृत रूप से बुनियादी शिक्षा से लेकर विश्वविद्यालयी शिक्षा तक की। इन निहितार्थों का विस्तृत विवरण बहुत ही सामान्य रूप में आपकी स्पष्ट समझ के लिए निम्नलिखित है।

i) शिक्षार्थी और अधिगम प्रक्रियाएं

सभी शिक्षार्थी जब अपने जीवन में विभिन्न क्रियाकलापों में संलग्न होते हैं तो वे अधिगम की औपचारिक, निरौपचारिक और अनौपचारिक प्रक्रियाओं द्वारा शिक्षा अर्जित करते हैं। यद्यपि विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों में व्यय समय की मात्रा एक शिक्षार्थी और दूसरे शिक्षार्थी के लिए भिन्न हो सकती है। इस प्रकार की व्यापक गतिविधियों या अनुभवों के प्रावधान के लिए पाठ्यक्रम की पुनर्रचना की आवश्यकता है दैनिक जीवन की शिक्षा के सभी रूपों और सभी प्रकार के जिसमें पाठ्यक्रम-अनुभवों का उपयुक्त ऊर्ध्ववाधर और क्षैतिक एकीकरण के साथ शिक्षार्थियों-पूर्णकालिक और अंशकालिक, पारंपरिक और गैर-पारंपरिक, वृद्ध और युवा इसी प्रकार अन्य के सभी को सम्मिलित किया जाएगा।

ii) **शिक्षक एवं अनुदेशनात्मक विधियाँ**

विषमजातीय समूहों के शिक्षार्थियों में आजीवन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए प्रयुक्त की जाने वाली अनुदेशनात्मक रणनीतियां वास्तविक रूप से उनकी आयु, पृष्ठभूमि, अनुभव, ज्ञान आदि के लिए विभिन्न, विविध तथा धारणीय होनी चाहिए। सस्ता, व्यक्तिगत एवं जन अनुदेशनात्मक रणनीतियां और विधियां जो अधिगम के समय और स्थान की भौतिक बाधाएँ कम उत्पन्न करती हैं। तथा शिक्षा एवं कार्य को संबद्ध करती हैं उनको अनुदेशन हेतु उपयोग में लाने की आवश्यकता है इसके अनुरूप शिक्षकों की बदलती हुई भूमिकाओं एवं उत्तरदायित्वों को पुनर्परिभाषित करना और इनकी स्वीकार्यता को बढ़ावा देना, इस सुधार के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण है।

iii) **शैक्षिक संस्थान**

शैक्षिक संस्थानों के लिए शिक्षण और अधिगम प्रक्रियाओं की प्रकृति और लक्षणों में परिवर्तन, शिक्षकों और शिक्षार्थियों की भूमिकाओं और कार्यों में परिवर्तनों के स्वयं के निहितार्थ हैं। इसमें वर्तमान संस्थानों का परिवर्तन और/या एकीकरण की उपयुक्त कार्यविधि के साथ नए प्रकार के संस्थानों का प्रारम्भ सम्मिलित हो सकता है। व्यवहारिक समस्याएं और कठिनाइयां जो प्रवेश की नीतियों और प्रविधियों, शिक्षण-अधिगम सुविधाओं का प्रावधान, संस्थानों के विभिन्न इकाइयों के बीच और विभिन्न संस्थानों के बीच समन्वयन प्राप्त करना, और विभिन्न कार्यों का नियोजन, वित्तीयकरण तथा प्रशासन आदि में परिवर्तन लाने की संदर्भ में हैं को ध्यान में रखना होता है।

iv) **मूल्यांकन**

चूँकि आजीवन शिक्षा में शैक्षिक संस्थानों का विशेष रूप से उच्च शिक्षा संस्थानों का परिवर्तन सम्मिलित है – अतः यह शिक्षार्थियों के मूल्यांकन, शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएं, कार्यक्रम, प्रविधियां और समग्र रूप में व्यवस्था/संस्थान हेतु नवाचार की मांग करता है। यह आजीवन शिक्षा प्रणाली पर पुनर्विचार करने, पुनर्निर्देशन और आगे सुधार हेतु सहायता करेगी।

हम समझ सकते हैं कि दूरस्थ और मुक्त विश्वविद्यालयों एवं पूरे विश्व में सभी प्रकार के उच्च शिक्षा संस्थानों द्वारा प्रयुक्त व्यक्तिगत अधिगम पर प्रकाश के साथ अनुदेशनात्मक उपागम जैसे दूरस्थ और मुक्त अधिगम में आजीवन शिक्षा के कुछ सिद्धांत समाहित हैं। यद्यपि यह तथ्य स्पष्ट है कि आजीवन शिक्षा का अभ्यास इसके सिद्धांत से बहुत पीछे है, तथापि यह भी सत्य है कि आजकल आजीवन शिक्षा काफी हद तक वास्तविकता बन गई है और शैक्षिक नीति के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में पहचानी गई है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

3) पूर्व के भाग में आपके द्वारा अध्ययन किए गए विभिन्न शब्दों के साथ 'आजीवन शिक्षा' शब्द को आप कैसे संबंधित करते हैं? आजीवन शिक्षा के क्रियान्वयन के निहितार्थों को स्पष्ट कीजिए।

.....
.....

2.4 दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत

आप जानते हैं कि दूरस्थ शिक्षा की जड़ें 'पत्राचार पाठ्यक्रम' से संबंधित परंपरागत अभ्यासों में है जिसने एक नई कार्यविधि (मोडस औपरेंडी) को जन्म दिया। परिणाम स्वरूप शिक्षण और अधिगम अभ्यासों का व्यापक स्तर पर पुनरोत्पादन हुआ। इस घटना के कारण, औद्योगिकृत शिक्षा की अवधारणा के साथ दूरस्थ शिक्षा का एक नया मॉडल उभरा। इसका मूल आधार उत्पादन के मानकीकरण और शिक्षा के वितरण की प्रक्रियाओं के माध्यम से अर्थव्यवस्थाओं का व्यापक पैमाना का सृजन था।

दूरस्थ शिक्षा के सैद्धांतिक आधारों पर चर्चा आपको अधिकांश सामान्य मुद्दों और दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांतों से परिचित कराएगी। आपको दूरस्थ शिक्षा के इस विषय से संबंधित महत्वपूर्ण विचार और विचारधाराओं की विविध स्पष्ट पंक्तियों का अवलोकन कराने के लिए हम दूरस्थ शिक्षा पर प्राथमिक साहित्य का अवलोकन करेंगे। भाग 2.3 ने आपको प्रासंगिक शब्दावली सहित दूरस्थ शिक्षा अवधारणा की संपूर्ण समझ प्रदान की है। इस भाग में प्रस्तुत विचारधाराओं की स्पष्ट पंक्तियाँ आपको दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत और दर्शन से परिचित होने में सक्षम बनाएंगी और शिक्षण एवं अधिगम के दूरस्थ माध्यम की प्रभावकारिता के प्रति उपयोगी अर्न्तदृष्टि का विकास करेंगी।

शोध और सिद्धांत के एक मजबूत आधार के बिना दूरस्थ शिक्षा पारंपरिक शैक्षिक समुदाय द्वारा मान्यता के लिए संघर्षरत रही (गेरिसन, 1990, हेस 1990, <http://www.aect.org/edtech/ed1/13/13-03.html>)। हालांकि 1970 के दशक के प्रारम्भ से, जब ब्रिटिश ओपन यूनिवर्सिटी, दूरस्थ और मुक्त शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण संदर्भ बनी, शैक्षिक अनुसंधान के एक बढ़ते निकाय ने दूरस्थ शिक्षा पर शोध के संबंध में सिद्धांत निर्माण के साथ काम किया है (इबांस एण्ड नेशन, 1990; गैरिसन, 1993, 2000; होलम्बर्ग, 1983, 1995; कीगन, 1993; मूरे 1973; 1990; पीटर्स, 1983, 1989; 1993 <http://www.aect.org/edtech/ed1/13/13-03.html>)।

इवान्स और नेशन (2003, पृ. 789) के अनुसार, शैक्षिक प्रयासों की कोई भी उपयोगी समझ के लिए सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनैतिक संदर्भों जिसमें वे संपन्न होते हैं, की गहन मीमांसा की आवश्यकता होती है। यहां पर विश्लेषित सभी सिद्धांत बताते हैं कि दूरस्थ शिक्षा को सामाजिक, आर्थिक और बीसवीं शताब्दी की अन्य विशिष्ट परिस्थितियों से उत्पन्न होने वाली घटना के रूप में समझा जाना चाहिए।

2.4.1 दूरस्थ शिक्षा सिद्धांत का विकास : एक परिदृष्टि

यह एक स्थापित सत्य है कि शोध और सिद्धांत के मजबूत आधार के बिना दूरस्थ शिक्षा ने पारंपरिक शैक्षिक समुदाय द्वारा मान्यता पाने के लिए संघर्ष किया है। क्योंकि दूरस्थ शिक्षा उपयुक्त सैद्धांतिक ढांचों की पहचान के लिए संघर्षरत है, अतः कार्यान्वयन का मुद्दा भी अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है। इन मुद्दों में शिक्षार्थी, निर्देशक (शिक्षक) और तकनीक सम्मिलित हैं। पारंपरिक रूप से, दूरस्थ शिक्षा में सैद्धांतिक निर्माणों और शोध अध्ययनों दोनों को शैक्षिक उपक्रम के संदर्भ में समझा गया है जो मानक, कक्षाकक्ष-आधारित एवं मान्य निर्देशात्मक मॉडल से पूर्णतया भिन्न था। अतः यहां हमारा प्रयास सुसंगत, दृढ़ और वैध सिद्धांत या सिद्धांतों को समझना है जो दूरस्थ शिक्षा अभ्यास का आधार बने जिसके द्वारा पूरे विश्व में विद्यार्थी नामांकन और दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की संख्या के संदर्भ काफी वृद्धि हुई।

**मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा :
उद्भव एवं विकास**

दूरस्थ शिक्षा के सैद्धांतिक आधार हमें इसके अभ्यास के बारे में वर्णन और सूचना देते हैं और इसके भावी विकासों के बारे में मार्गदर्शन हेतु प्राथमिक साधन प्रदान करते हैं। आपको दूरस्थ शिक्षा के आधारभूत सिद्धांतों और दर्शनों का एक विहंगावलोकन प्रदान करने के विचार से महत्वपूर्ण सिद्धांतों को चुनकर उनकी चर्चा नीचे की गई है। इनमें से कुछ सिद्धांत और उनके समर्थक नीचे दिए गए हैं।

तालिका 2.1: दूरस्थ शिक्षा : विचारक और सिद्धांत

क्र.सं.	विचारक का नाम	मुख्य सैद्धांतिक योगदान
1.	चार्ल्स ए वेडेमेयर	स्वतंत्र अध्ययन
2.	माइकेन जी मूर	स्वतंत्र अध्ययन (पुनरावलोकित) <ul style="list-style-type: none"> ● 'दूर': 'संवाद' और 'निश्चयीकरण' का कार्य ● शिक्षार्थी स्वायत्तता
3.	ओट्टो पीटर्स	शिक्षण का औद्योगिकीकृत रूप i) श्रम विभाजन ii) बड़े पैमाने पर उत्पादन iii) व्यवस्थापन, तथा iv) भवनों की संरचना
4.	बोर्जे होलम्बर्ग	निर्देशित व्यवहारिक वार्तालाप
5.	जॉन ए बॉथ	द्विमार्गीय डाक संप्रेषण i) प्रभावशाली ट्यूटर-टिप्पणी, तथा ii) नामांकन-पूर्व परामर्श
6.	डेविड सेवार्ट	सरोकार की निरंतरता <ul style="list-style-type: none"> ● शिक्षण और अधिगम के औद्योगिक रूप में मानव तत्व
7.	गेरिसन और बेयंटन	संप्रेषण और शिक्षार्थी नियंत्रण <ul style="list-style-type: none"> ● समष्टि-संरचनात्मक स्तरीय तत्व ● व्यक्ति-संरचनात्मक संचालक तत्व
8.	कीगन	शिक्षण और अधिगम कार्यों का पुनः एककीकरण <ul style="list-style-type: none"> ● समय एवं स्थान में अधिगम कार्यों से शिक्षण कार्यों का पृथकीकरण ● शिक्षण एवं अधिगम कार्यों का पुनःएकीकरण
9.	साइमनसन और स्क्लोस्सर	अधिगम अनुभवों की समतुल्यता <ul style="list-style-type: none"> ● स्थानीय शिक्षार्थी ● दूरस्थ शिक्षार्थी

आइए अब हम दूरस्थ शिक्षा के प्रासंगिक सिद्धांतों की चर्चा विस्तार पूर्वक करते हैं, जो इसे नई शैक्षिक घटना के रूप में उभरने में सहायता किए।

2.4.2 स्वतंत्र अध्ययन सिद्धांत

यह सिद्धांत चार्ल्स ए. वेडेमेयर द्वारा रचा गया, जो विस्कॉंसिन-मैडीसन विश्वविद्यालय में शिक्षा के प्रोफेसर थे – स्वतंत्र और दूरस्थ अधिगम के क्षेत्र में प्रथम अन्वेषक थे और आधुनिक दूरस्थ शिक्षा के पिता माने जाते हैं।

1965 के शुरुआत में ही वेडेमेयर ने आज की ई-लर्निंग की भविष्यवाणी की (<http://www.uwex.edu/disted/conference/wedemeyer/aboutcw.cfm>)।

“...भविष्य के विस्तार विद्यार्थियों संभवतः कक्षा में उपस्थित न हों; परंतु, अधिगम के अवसर और प्रक्रियाएं उसके पास आएंगी। वह घर में, कार्यालय में, कार्य पर फ़ैक्ट्री में, भंडार या विक्रय कक्ष या कृषि भूमि में सीखेगा”

“... शिक्षक, विद्यार्थियों तक केवल अपने राज्य और क्षेत्र में ही नहीं बल्कि पूरे देश में पहुंचेंगे, क्योंकि उसके द्वारा शिक्षण में अपनाए गए मीडिया और विधियाँ, अधिगम में स्थान और समय की बाधाओं को दूर कर देंगे।”

‘स्वतंत्र अध्ययन, शब्द का उपयोग वेडेमेयर के द्वारा (1973; mentioned at <http://www.uwex.edu/disted/conference/wedemeyer/aboutcw.cfm>) महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर दूरस्थ शिक्षा का वर्णन करने के लिए किया गया था। उसने विद्यार्थी की स्वतंत्रता को दूरस्थ शिक्षा का मूल तत्व माना और इस प्रकार दूरस्थ शिक्षा के लिए ‘स्वतंत्र अध्ययन’ शब्द को प्राथमिकता दिया। वह उच्च शिक्षा के समकालीन प्रतिरूप के प्रति गम्भीर थे, जो आधुनिक तकनीकों का उपयोग उन तरीकों से करने में असफल रहे जो एक संस्थान को परिवर्तित कर सकते थे।

वेडेमेयर ने शिक्षण को अधिगम से इस प्रकार अलग करने का प्रस्ताव दिया जिससे शिक्षा की “स्थान-समय की बाधाएं” खत्म हो जाएं। उन्होंने स्वतंत्र अध्ययन प्रणाली की छः विशेषताएं सुझाईं (<http://www.c3l.uni-oldenburg.de/cde/found/simons99.htm>)।

- 1) विद्यार्थी और शिक्षक पृथक होते हैं।
- 2) शिक्षण और अधिगम की सामान्य प्रक्रियाएं लिखकर या कुछ अन्य माध्यम द्वारा संपन्न होती हैं।
- 3) शिक्षण निश्चयीकृत होता है।
- 4) अधिगम विद्यार्थी क्रियाकलाप द्वारा संचालित होता है।
- 5) विद्यार्थी के लिए अधिगम उसके स्वयं के वातावरण में सुविधाजनक बनाया जाता है।
- 6) शिक्षार्थी अधिगम की गति को स्वतंत्रता के साथ किसी भी समय पर शुरु और समाप्त करने का उत्तरदायित्व लेता है।

वेडेमेयर ने प्रत्येक शिक्षण अधिगम स्थिति के चार सामान्य तत्व बताए हैं : एक शिक्षक, एक शिक्षार्थी या कई शिक्षार्थी, संप्रषण प्रणाली या पद्धति और शिक्षण या अधिगम हेतु कुछ विषय वस्तु। उसने इन तत्वों के पुनर्गठन को प्रस्तावित किया, जो भौतिक स्थान का समायोजन करेगा और अधिक शिक्षार्थी-स्वतंत्रता संपन्न होने देगा। यही दूरस्थ शिक्षा की सफलता की कुंजी है।

वेडेमेयर उदार दृष्टिकोण वाले हैं, जो दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में इनके कार्य में स्पष्ट होता है। दूरस्थ शिक्षा के सैद्धांतिक आधारों में उनके योगदान में सम्मिलित हैं : दूरस्थ शिक्षा और

पारंपरिक आमने-सामने की शिक्षा के बीच अंतर का उसके द्वारा विश्लेषण। दोनों के बीच मुख्य अंतरों पर प्रकाश डालते समय उसका विश्लेषण तीन मुख्य विचार प्रस्तुत करता है :

- i) शिक्षार्थी की स्वयत्तता;
- ii) शिक्षण और शिक्षार्थी के बीच दूरी; तथा
- iii) संरचना प्रणाली

जो अब दूरस्थ शिक्षा की संपूर्ण अवधारणा के मुख्य आधार बन गए हैं। हम इन तीनों विचारों की चर्चा करेंगे और इस प्रकार आपको वेडमेयर का 'स्वतंत्र अध्ययन' का परिचय कराएंगे।

a) शिक्षार्थी की स्वायत्तता

वेडमेयर की स्वतंत्र अध्ययन की परिभाषा (उपभाग 2.2.1 देखें) शिक्षार्थी स्वायत्तता की अवधारणा को समझने के लिए संकेत देती है। उनके अनुसार, शिक्षण/अधिगम व्यवस्थाएं इस प्रकार होनी चाहिए कि शिक्षक और शिक्षार्थी एक दूसरे से दूर रहें और कैम्पस के अंदर एवं कैम्पस के बाहर, दोनों प्रकार के विद्यार्थियों की अधिगम गतिविधियों की सुविधा हेतु शैक्षिक संप्रषण विविध प्रकार से होना चाहिए। ऐसी व्यवस्थाओं को शिक्षार्थी की स्वयं की परिचित स्थिति में अधिगम अवसर प्रदान करने चाहिए और साथ ही यह व्यक्ति को स्व-निर्देशित अधिगम द्वारा परिपक्वता के निर्माण में सहायता करे जो एक शिक्षित व्यक्ति की विशेषता है।

स्वतंत्र अध्ययन का स्पष्ट आधार 'निरंतर शिक्षा' के लिए वेडमेयर का उदार शैक्षिक दर्शन है। उनका विचार है कि कुछ कारकों जैसे भौगोलिक सुदूरता, निर्धनता या अन्य किसी प्रकार का अभाव, खराब स्वास्थ्य या हानिकारक भौतिक स्थितियां, या कोई मनोवैज्ञानिक स्थितियां, जो एक व्यक्ति को संस्थागत शिक्षा से रोकते हों, को किसी भी प्रकार से एक व्यक्ति के शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के मार्ग में नहीं आना चाहिए। ऐसे दर्शन का तत्काल शिक्षणशास्त्रीय आशय है कि हम उनके लिए जो शिक्षित होने के इच्छुक हैं, शिक्षा के अरुद्धिवादी साधनों और तरीकों को देखें। यदि कोई अपनी आर्थिक या शारीरिक परिस्थितियों के कारण अपने कार्य स्थल या निवास स्थान से दूर नहीं जा सकता, यदि कोई कक्षा में उपस्थित नहीं हो सकता, क्योंकि उसके लिए कक्षा-कक्ष का वातावरण मनोवैज्ञानिक या सामाजिक रूप से प्रतिकूल है, या मात्र सामाजिक प्रतिबद्धताओं की विवशता के कारण एक व्यक्ति शिक्षा के पारंपरिक विद्यालय, महाविद्यालय या विश्वविद्यालय के तरीकों में समायोजित नहीं हो सकता, तो राज्य को उसकी रुचि के अनुसार उसके दरवाजों तक शिक्षा को लाना चाहिए। यह तभी संभव होता है, जब उस अरुद्धिवादी प्रणाली की मूल विशेषता शिक्षकों के एक दूसरे से अलग काम करने की अनुमति देना है। इस बन्यादी विशेषता को स्वीकार करने के फलस्वरूप, हमें यह स्वीकारना पड़ेगा कि इस प्रणाली में मौखिक संवाद संप्रषण का प्रमुख माध्यम/साधन नहीं हो सकता। तात्पर्य है कि, शिक्षक-शिक्षार्थी संप्रषण विभिन्न रूपों में होना आवश्यक है; मुद्रित शब्द, फोन द्वारा बातचीत, रेडियो द्वारा बातचीत आदि। विद्यार्थी को अपने शैक्षिक लक्ष्यों का चयन करने के योग्य होना चाहिए और अधिगम के लिए अपनी स्वयं की गति और तरीके से कार्य करे और यह भी निश्चित करे कि उसकी उपलब्धियों का आँकलन किस प्रकार किया जाए।

उपर्युक्त विवरण वाला विद्यार्थी, **स्वायत्त विद्यार्थी** है – शब्द के वास्तविक भाव में एक शिक्षित व्यक्ति। शिक्षण का यह दूरस्थ प्रणाली ही है जो उपर्युक्त विद्यार्थी विशेषताओं के लिए है।

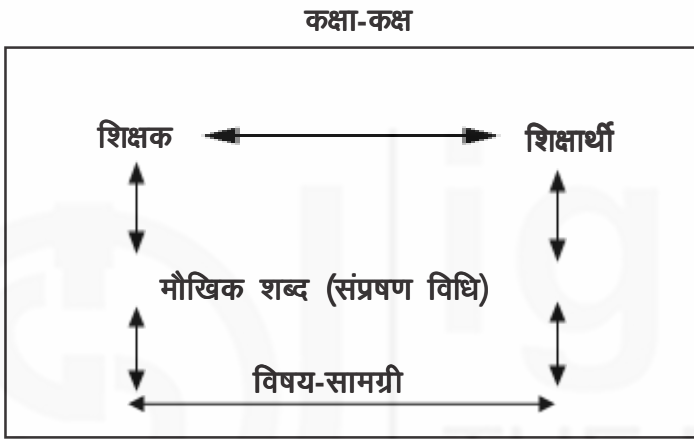
b) शिक्षार्थी और शिक्षक के बीच दूरी

जैसा उपर इंगित किया गया है, विद्यार्थी स्वायत्तता के कई शिक्षण शास्त्रीय प्रभाव हैं। इन सबमें से सर्वाधिक मजबूत यह है कि शिक्षार्थी शिक्षक से अलग रहकर सीखता है।

एक कक्षा-कक्ष स्थिति में पाँच अंग सम्मिलित हैं :

- शिक्षक;
- शिक्षार्थी;
- विषय-सामग्री जिसे पढ़ाना और सीखना है;
- एक संप्रषण प्रणाली; तथा
- कक्षा-कक्ष अर्थात् शिक्षण शास्त्रीय स्थान।

वेडेमेयर इस विवरण को संक्षिप्त रूप से निम्नलिखित रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट करते हैं।



चित्र 2.1: औपचारिक कक्षा-कक्ष की स्थिति

शिक्षण और अधिगम के इस मॉडल की एक प्रतिष्ठा है, जो सदियों से सामाजिक रूप से मान्य अभ्यास का परिणाम है। यह एक सार्वभौमिक प्रमाणित सामाजिक-शैक्षिक मानदंड है।

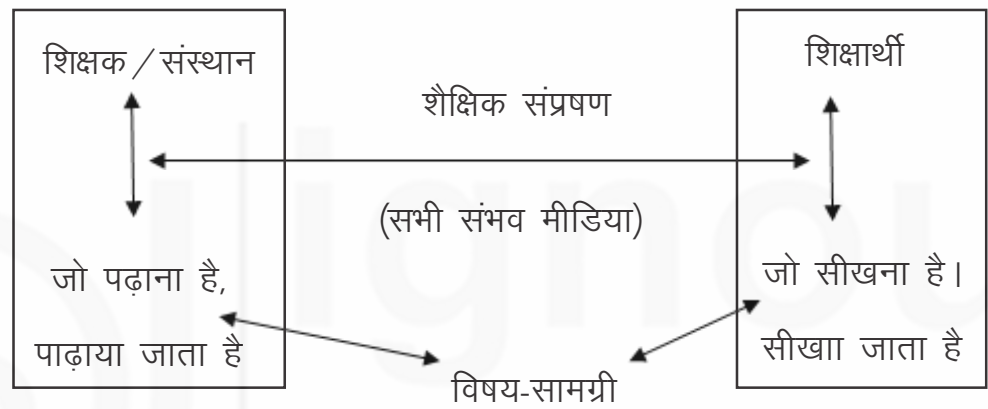
उपरोक्त नए प्रस्ताव में शिक्षार्थी स्वायत्तता के अंतर्गत वेडेमेयर पुराने सामाजिक-शैक्षिक मानदंड को चुनौती देते हैं – एक सांस्कृतिक कलाकृति जिसमें शताब्दियों से अपने अस्तित्व के कारण किसी परिवर्तन या विकल्पों की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती है।

वेडेमेयर सामाजिक विकास की क्रमिक परंतु निश्चित विकास प्रक्रिया का संकेत देते हैं, जिसने इस प्रबल सांस्कृतिक कलाकृति के लिए व्यवहार्य विकल्प बनाया है। जैसे उनके द्वारा उल्लेख किया गया है सामाजिक विकास की इस प्रक्रिया में सम्मिलित है।

- लेखन** के आविष्कार ने संप्रषण के माध्यम के रूप में भाषण या वाणी के पूर्ण एकाधिकार को ध्वस्त किया। इसके अतिरिक्त, लेखन ने संप्रषणों को रिकार्ड करना और उन्हें समय और स्थान के पार स्थानान्तरित करना भी संभव बनाया।
- मुद्रण** के आविष्कार ने एकल-प्रति-लेखन संप्रषण के एकाधिकार को समाप्त किया। मुद्रण द्वारा यह संभव हुआ कि एक ही संप्रषण को एक ही या भिन्न समयों पर, कितनी ही दूरियों पर एक व्यक्ति जितने प्राप्तकर्ताओं को भेजना चाहे भेज सकता है।
- टेलीकम्यूनिकेशन** के विकास ने समय और स्थान के आयामों को समाप्त किया और जब इसे शिक्षा में उपयोग किया गया तो इसने अब तक शिक्षक शिक्षार्थी संपर्क को अज्ञात संभावनाओं को खोला है।

- iv) **लोकतंत्रात्मक दर्शनों** के विकास ने शिक्षा के संभ्रांतवादी और संप्रदायिक स्वरूप को समाप्त किया।
- v) **पत्राचार शिक्षा** का प्रारम्भ मात्र सामाजिक आवश्यकताओं और दबावों का परिणाम था। आरम्भ में यह न तो राज्य द्वारा प्रायोजित आंदोलन था और न ही शिक्षाविदों द्वारा व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से किए गए प्रयासों का परिणाम था।
- vi) **क्रमादेशित अधिगम** और **शिक्षण मशीनों** के विकास ने स्व-निर्देश और शिक्षार्थी आधारित शिक्षा की संभावनाओं को इंगित किया।

इन परिवर्तनों ने यह संभव बनाया कि शिक्षण और अधिगम को संगठित करने के तरीके उन तरीकों से काफी भिन्न हैं जो चित्र 2.1 में दर्शाये गए माडल में प्रस्तुत किए गए हैं। शिक्षण और अधिगम को संगठित करने के संभव नए तरीकों में से एक निम्नलिखित रूप (चित्र 2.2) में प्रस्तुत किया जा सकता है।



चित्र 2.2: औपचारिक कक्षा-कक्ष की स्थिति से प्रस्थान

पारंपरिक सामाजिक शैक्षिक मानदंडों में सुधार : ऊपर दिए गए रेखाचित्र (चित्र 2.2) से यह समझा जा सकता है कि एक शिक्षण-अधिगम स्थिति में शामिल आवश्यक अंग हैं : शिक्षक, शिक्षार्थी, विषय सामग्री और शिक्षण अधिगम संप्रषण का तरीका सभी अक्षुण्ण हैं। इसमें सुझाया गया अंतर यह है कि अब हमारे पास एक बॉक्स (चित्र 2.1 देखें) के स्थान पर दो बॉक्स (चित्र 2.2) हैं, दोनों एक दूसरे से स्वतंत्र हैं और दोनों बॉक्सों की दूरी को गैर-पारंपरिक शैक्षिक संप्रषणों के माध्यम से भरा गया है, जो आमने-सामने (एक बॉक्स) के पारंपरिक संप्रषण साधनों से पूर्णतया भिन्न नहीं है। इस प्रकार, उपरोक्त मॉडल चित्र 2.2 में दिखाए गए चित्र से भिन्न नहीं है, जहां तक कि शिक्षण अधिगम स्थिति के बुनियादी अंगों और उनकी उद्देश्यपूर्ण परस्पर क्रिया का संबंध है। परन्तु, यदि हम स्थिति की विशेषता के लिए इन अंगों की निकटता को मुख्य मापदंड के रूप में उपयोग में लाए तो उपर्युक्त मॉडल पारंपरिक कक्षा-कक्ष माडल से पूर्ण प्रस्थान को चिन्हित करता है, जो आमने-सामने शैक्षिक संप्रषण का सुविधाजनक सहगामी है। स्पष्ट रूप से 'तब' यदि आमने-सामने शैक्षिक संप्रषण के जुनून को रोक दिया जाये, अर्थात् संप्रषण के एक न्यायसंगत प्रकार को अपनाया जाय और शिक्षण शास्त्रीय रूप में प्रभावी बनने के लिए निपुणता से उपयोग किया जाय तो कक्षा-कक्ष की सीमाओं को तोड़ा जा सकता है, और शिक्षार्थियों के लिए यह संभव हो जाएगा कि वे शिक्षकों से दूरस्थ रहकर स्वयं सीखें और शिक्षकों के लिए पढ़ाना यहाँ तक कि जब वे शिक्षार्थियों से दूर भी हों। यह स्थिति, जो मूल रूप से शिक्षक और शिक्षार्थी के बीच दूरी द्वारा चिन्हित की जाती है; संपूर्ण शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के लिए महत्वपूर्ण प्रभाव रखती है। इसमें से कुछ अधिक महत्वपूर्ण निम्नलिखित हैं :

- i) शिक्षार्थी को अपनी अधिगम गतिविधियों को प्रारम्भ करने, उसकी गति और समाप्त करने की स्वतंत्रता होती है – वह अपनी प्रगति और असफलता के लिए स्वयं ही उत्तरदायी होती/ता है;
- ii) शिक्षार्थी के लिए यह आवश्यक नहीं है वह पूरी तरह अपने वातावरण से अलग हो जाय – भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और भौगोलिक;
- iii) बोलने के अतिरिक्त अन्य मीडिया जैसे मुद्रित सामग्री, श्रव्य-दृश्य आदि का उपयोग शिक्षक और शिक्षार्थी के लाभ के लिए किया जाता है; तथा
- iv) अधिगम को शिक्षार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार अधिक से अधिक प्रासंगिक बनाया जा सकता है और यह अधिगम क्रियाकलाप ही है जो शिक्षण-प्रयास की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है।

इस प्रकार, दूरस्थ शिक्षा शिक्षार्थी संस्कृति और शिक्षक संस्कृति दोनों में परिवर्तन को आवश्यक मानती है। शिक्षार्थी को ऐसे उत्तरदायित्व और भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है जो पारंपरिक रूप से उसकी संस्कृति से संबंधित नहीं होते और यही बात शिक्षक के लिए भी है।

c) संरचनात्मक प्रणाली

उपरोक्त सुझाए हुए अपेक्षित सांस्कृतिक परिवर्तन स्पष्ट रूप से असन्निहित शैक्षिक संप्रषण को शिक्षण शास्त्रीय रूप में प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षक, शिक्षार्थी और शिक्षा प्रणाली की विशेषताओं को पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता बताते हैं। दूरस्थ शिक्षा की इस विशेषता का अर्थ यह है कि शिक्षार्थी, शिक्षक से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान कुछ समय, कुछ अधिक समय या पूरे समय के लिए शारीरिक रूप से एक लम्बी दूरी पर होता है, इसके वित्तपरीत, कक्षा-कक्ष की स्थिति में शैक्षिक संप्रषण सन्निहित होता है। इन विशेषताओं की ऐसी पुनर्परिभाषा एक ऐसी प्रणाली का आधार बनाते हैं जो संरचनात्मक रूप से पारंपरिक, औपचारिक शैक्षिक प्रणाली से भिन्न होती है। यह नई प्रणाली निम्नलिखित विशेषताओं में दृष्टिगोचर होती है :

- i) शिक्षार्थी को पहले की अपेक्षा अधिगम की अधिक जिम्मेदारी लेनी पड़ती है;
- ii) शिक्षार्थी को विषय वस्तु और विधियों दोनों में चयन के विस्तृत अवसर दिए जाते हैं;
- iii) शिक्षार्थियों के बीच व्यक्तिगत विभिन्नताओं को पहचानना ही नहीं जाता बल्कि इनका ध्यान भी रखा जाता है;
- iv) पाठ्यक्रम के द्वारा अपने कार्य को पूरा करने के लिए शिक्षार्थियों को अपनी गति से काम करने की अनुमति दी जाती है – वे अपनी सुविधा और योग्यताओं के अनुसार पाठ्यक्रम को शुरू, रोकना या पूरा कर सकते हैं;
- v) विद्यार्थी निष्पादन का मूल्यांकन परिणाम, विधियों और स्थान से स्वतंत्र होना चाहिए।
- vi) शिक्षकों को सामाजिक और प्रशासनिक कार्यों से अलग होकर शैक्षिक कार्यों पर केंद्रित होना चाहिए – उन्हें सही सूचना और/या ज्ञान के पारंपरिक स्रोत के रूप में नहीं बल्कि शैक्षिक सामग्री के प्रबंधकों के रूप में अधिक कार्य करना चाहिए।
- vii) शिक्षकों को मीडिया की भूमिका को अपनी भूमिका के संपूरक के रूप में स्वीकार करना चाहिए – आशय यह है कि पाठ्यक्रम सामग्री पर पुनर्विचार और उसे नए प्रकार से स्वरूपित करना।

- viii) शैक्षिक संचालन को एक न्यायसंगत मीडिया मिश्रण प्रभाव होना चाहिए – पाठ्यक्रम स्वरूप और उत्पादन का मुख्य सिद्धांत सभी मीडिया और विधियों का उपयोग करना होना चाहिए;
- ix) जहाँ कहीं भी शिक्षार्थी हों, प्रणाली संचालित होनी चाहिए – इसे स्थाई निवासी और शिक्षार्थियों की समूहन विशेषताओं से स्वतंत्र होना चाहिए।

इस प्रकार, वैडेमेयर के अनुसार, एक शिक्षा प्रणाली जो उपर्युक्त विशेषताओं को सम्मिलित करने के लिए संरचित की गई है, वह एक 'स्वतंत्र अध्ययन प्रणाली, है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

- 4) एक 'स्वतंत्र अध्ययन प्रणाली' में यह दावा क्यों किया जाता है कि इसमें शिक्षार्थियों और शिक्षकों की संस्कृति में परिवर्तन लाने की क्षमता होती है? दो कारण लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

इस अभ्यास को पूरा करने के बाद आइए अब दूसरी विचारधारा की ओर मुड़ते हैं।

2.4.3 संव्यावहार दूरी एवं शिक्षार्थी स्वायत्तता सिद्धांत

यह वास्तव में स्वतंत्र अध्ययन का यूरोपियन सिद्धांत है। इसे पुनर्रचित स्वतंत्र अध्ययन या स्वतंत्र अध्ययन पुनरावलोकित या स्वतंत्रता और नियंत्रण का सिद्धांत भी कहा जाता है। माइकेल जी मूर इस सिद्धांत के प्रतिपादक हैं, जो नोवा स्कोटिया विश्वविद्यालय और विसकोंसिन विश्वविद्यालय, मेडीसन में कार्य किया है। दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत में इनका योगदान नई अवधारणा के प्रस्तुतीकरण में नहीं मिलता, परंतु एक अधिक अंतर्दृष्टिपूर्ण और विश्लेषणात्मक मॉडल में है जो आवश्यक रूप से वेडेमेयर के विचारों की पुष्टि करते हुए स्वतंत्र अध्ययन के विविध स्तर और प्रकारों को मानने के लिए विस्तृत वर्गीकरण हेतु उन्हें तीव्र बनाता है।

स्वतंत्र अध्ययन पर मूर का विचार

मूर के लिए, स्वतंत्र अध्ययन एक सामान्य शब्द है जो इन सभी शैक्षिक संचालनों का वर्णन करते हैं जो 'दूरी' या/और 'स्वायत्तता' इन दो चरों के संदर्भ में परंपरागत औपचारिक शिक्षा से भिन्न किए जा सकते हैं। उसके लिए, वे सभी शैक्षिक संव्यवहार जिनमें ये दोनों चर होते हैं, वे स्वतंत्र अध्ययन के रूप होते हैं। ये मुक्त विश्वविद्यालय कार्यक्रम, पत्राचार पाठ्यक्रम, बाह्य डिग्री कार्यक्रम या स्वयं को पढ़ाएँ कार्यक्रम, हो सकते हैं। इस प्रकार,

सभी शैक्षिक संव्यवहारों को इन दो चरों के संदर्भ में वर्गीकृत किया जा सकता है। इन्हें स्वतंत्र अध्ययन प्रणाली की दो मुख्य विशेषताओं के आधार पर अबाधक्रम या सतति के रूप में अभिव्यक्त या प्रस्तुत किया जा सकता है –

- संवाद, तथा
- निश्चयीकरण

यह संवाद और निश्चयीकरण के स्तर में अंतर है जो एक दूरस्थ शिक्षक, दूरस्थ शिक्षार्थी और दूरस्थ शिक्षण/अधिगम को पारंपरिक औपचारिक शिक्षा में अपने समकक्षों से भिन्न करता है। हमें इस पर विस्तार से चर्चा करनी चाहिए।

- i) **संवाद** : 'संवाद' शब्द का उपयोग परस्पर क्रिया या परस्पर क्रियाओं की श्रृंखला का वर्णन करने के लिए किया जाता है जिसमें सकारात्मक गुण होते हैं, जो शायद दूसरी परस्पर क्रियाओं में न हों। एक संवाद उद्देश्यपूर्ण, रचनात्मक और प्रत्येक दल द्वारा मूल्यवान माना जाता है। संवाद में प्रत्येक दल एक सक्रिय श्रोता होता है, प्रत्येक दल, दूसरे दल या दलों के लिए योगदान करता है। परस्पर क्रियाएं नकारात्मक और तटस्थ भी हो सकती हैं। परंतु, संवाद शब्द सकारात्मक परस्पर क्रियाओं के लिए आरक्षित है। एक शैक्षिक संबंध में संवाद की दिशा विद्यार्थी की संशोधित समझ की ओर होती है (मूर, 1997)। इस प्रकार, यह एक विस्तृत शब्द है जिसकी सर्वोत्तम व्याख्या 'शैक्षिक परस्पर क्रिया' के रूप में व्यक्त की जा सकती है। इसका लक्ष्य है : शिक्षण और अधिगम को प्रभावित करना; शिक्षण जहाँ तक कि शिक्षक और संस्थान का संबंध है, और अधिगम जहाँ तक कि शिक्षार्थी का संबंध है। यह संवाद आमने-सामने की स्थिति में, व्यक्तिगत या समूह-टेलीफोन द्वारा, व्यक्तिगत या सामूहिक पत्राचार द्वारा अथवा एक तरफा भी हो सकता है, जैसा कि कम्प्यूटर समर्थित अनुदेश, कार्यक्रमित अनुदेश, टेलीविजन, रेडियो और विषय सामग्री में।
- ii) **निश्चयीकरण** : एक शैक्षिक कार्यक्रम उच्च रूप से व्यक्तिगत माना जाता है, यदि इसके पाठ्यक्रम घटक जैसे उद्देश्य, विधियाँ, सामग्री और मूल्यांकन का शिक्षार्थी के अधिगम-कार्यक्रम के घटकों के साथ बहुत उच्च सह-संबंध हो। हम समझते हैं कि कार्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्य, शिक्षण रणनीतियाँ और मूल्यांकन की विधियों की संरचना, कार्यक्रम की कठोरता या लचीलेपन को व्यक्त करती है। पारंपरिक शैक्षिक कार्यक्रम इस प्रकार उच्च रूप से 'संरचित' है। अर्थात् उनके पाठ्यक्रम अंग यानी उद्देश्य, विधियाँ, सामग्री और मूल्यांकन सामान्यतया पूर्व-निश्चित होते हैं, बिना यह ध्यान में रखे कि एक विशेष शिक्षार्थी की क्या आवश्यकताएं हो सकती हैं। इसके विपरीत, एक शैक्षिक कार्यक्रम जो विविध शिक्षार्थी विशेषताओं और आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पर्याप्त रूप से लचीला है, उसकी संरचना कठोर नहीं हो सकती। वह कार्यक्रम जिसमें इस संरचना (जिस भाव से इस शब्द का उपयोग ऊपर किया गया है) का अभाव होता है, वह अधिगम का 'निश्चयीकरण' संभव बनाएगा। इसका अर्थ यह है कि संरचना का अभाव 'व्यक्तिकरण' को सुनिश्चित करता है। दूसरे शब्दों में, यह बताता है कि एक शैक्षिक कार्यक्रम प्रत्येक शिक्षार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को किस सीमा तक समायोजित कर सकता है या उसके लिए उत्तरदायी होता है।

इस सिद्धांत के अनुसार, दूरस्थ शिक्षा में **संव्यवहारिक दूरी** शिक्षकों और शिक्षार्थियों के बीच मात्र भौगोलिक पृथक्करण नहीं है बल्कि अधिक महत्वपूर्ण रूप से यह एक शिक्षण शास्त्रीय अवधारणा है। यह एक अवधारणा है जो शिक्षक-शिक्षार्थी संबंधों के संसार का वर्णन करती है, जो शिक्षार्थी और शिक्षक को स्थान और/या समय द्वारा पृथक् होने के कारण बनते हैं।

संबंधों के इस संसार को एक समान अध्ययन के क्रम में रखा जा सकता है, जो क्षेत्र के अधिकांश प्रारंभिक निर्माणों द्वारा बनता है, जैसे अनुदेशनात्मक कार्यक्रमों की संरचना शिक्षार्थियों और शिक्षकों के बीच परस्पर क्रिया (संवाद) और शिक्षार्थी का 'स्वनिर्देशन' या स्वायत्तता की प्रकृति और स्तर। क्या **अनुदेशनात्मक संवाद** इसका स्तर और प्रकृति संपन्न होता या नहीं है को पाठ्यक्रम के स्वरूप के लिए उत्तरदाई व्यक्ति या समूह के शैक्षिक दर्शन, शिक्षक और शिक्षार्थी के व्यक्तियों, पाठ्यक्रम की विषय वस्तु और वातावरण के कारकों द्वारा निर्धारण होती है। संव्यवहार दूरी को किस सीमा तक कम किया जा सकता है का एक प्रमुख निर्धारक है – क्या शिक्षार्थियों और अनुदेशकों के बीच अनुदेशनात्मक संवाद सम्भव है और किस स्तर तक इसे प्राप्त किया जा सकता है? क्योंकि संवाद के साथ संरचना एक गुणात्मक चर है और एक कार्यक्रम में संरचना की मात्रा का निर्धारण मुख्य रूप से प्रयुक्त किए जाने वाले संप्रषण मीडिया के प्रकृति द्वारा होता है, परन्तु शिक्षकों की दर्शन और भावनात्मक विशेषताओं, शिक्षार्थियों के व्यक्तित्वों और अन्य विशेषताओं तथा शैक्षिक संस्थानों द्वारा अधिरोपित प्रतिबंधों द्वारा भी होता है। **कार्यक्रम संरचना** चर, चरों के एक दूसरे युग्म का निर्माण करती है संव्यवहार दूरी का निर्धारण करता है, और इसके अन्तर्गत पाठ्यक्रम के स्वरूप के तत्व या वे तरीके जिनके द्वारा शिक्षण कार्यक्रम की संरचना की गई है ताकि इसे विविध संप्रषण मीडिया द्वारा संचालित/प्रस्तुत किया जा सके। संरचना कार्यक्रम के शैक्षिक उद्देश्यों, शिक्षण रणनीतियों और मूल्यांकन विधियों की कठोरता या लचीलापन को व्यक्त करती है। यह बताती है कि एक शैक्षिक कार्यक्रम किस स्तर तक प्रत्येक शिक्षार्थी की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को समायोजित कर सकता है या उनका उत्तरदायित्व लेता है (मूर, 1997; <http://www.c3l.uni-oldenburg.de/cde/found/moore93.pdf>)।

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के परिवार के अन्तर्गत संव्यवहार दूरी के कई विभिन्न स्तर हैं। संव्यवहार दूरी सापेक्षिक है न कि निरपेक्ष चर। एक शैक्षिक कार्यक्रम में संव्यवहार दूरी चरों के तीन युग्म का कार्य है : शिक्षण में, अधिगम में और शिक्षण एवं अधिगम की परस्पर क्रिया में। चरों के इन समूहों के नाम हैं: **संवाद, संरचना** और **शिक्षार्थी स्वायत्तता** (मूर, 1997, ओप सिट)।

मूर दावा करते हैं कि परंपरागत सामाजिक-शैक्षिक मानदंडों की पुनर्रचना की आवश्यकता वांछित ही नहीं बल्कि अनिवार्य है। इस लक्ष्य को दूरस्थ शिक्षा के अभ्यास द्वारा प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि यह शिक्षार्थी स्वायत्तता को बढ़ावा देता है। वे सुझाते हैं कि दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा को समझने में भौतिक दूरी ही अकेले महत्वपूर्ण नहीं है। इसके अतिरिक्त, निश्चयीकरण और 'संवाद' चरों का भी महत्व है, क्योंकि इन दोनों चरों की बहुत उच्च स्तर एक पाठ्यक्रम/कार्यक्रम को शिक्षण शास्त्रीय रूप से कम दूरी का बनाती है और, इसके विपरीत, इन दोनों चरों का कम स्तर एक पाठ्यक्रम/कार्यक्रम को अधिक दूरी का बनायेगी। इस संदर्भ में, हम व्याख्या करते हैं कि मूर संवाद और निश्चयीकरण से क्या समझते हैं।

उनके लिए, **संवाद** 'एक दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम में संप्रषण माध्यम शिक्षार्थी-शिक्षक परस्पर क्रिया को किस स्तर तक अनुमति देता है, का माप है', और **निश्चयीकरण** 'व्यक्तिगत शिक्षार्थी के उद्देश्यों के प्रति एक शिक्षण कार्यक्रम की उत्तरदायित्व की सीमा का माप है'। इस प्रकार, एक **शैक्षिक कार्यक्रम**, जिसमें **अधिगम कार्यक्रम, शिक्षण कार्यक्रम** से समय और स्थान के संदर्भ में अलग संपन्न होता है, जो अधिगम उद्देश्यों, अधिगम उपकरण, विधियों और मूल्यांकन पर **शिक्षार्थी नियंत्रण** (भिन्न भिन्न स्तर पर) को स्वीकारता है, वह एक **स्वतंत्र अध्ययन** कार्यक्रम है। मूर का **'संवाद'** और **'निश्चयीकरण'** एवं **संरचना** के विचार

उनके 'स्वतंत्र अध्ययन' के विचार के विश्लेषण में अध्ययन के बाद' हम आपको बताएंगे कि उन्होंने इस विचार को 'दूरी' और 'स्वायत्तता' की व्याख्या करने में किस प्रकार उपयोग किया।

A) दूरी : संवाद और निश्चयीकरण का एक प्रकार

एक शैक्षिक कार्यक्रम में 'संवाद' और 'संरचना' की विशेषताओं का एक विशेष संयोग इसे इसके स्वयं का एक स्वरूप प्रदान करेगा और इन विशेषताओं का भिन्न संयोग हमें शैक्षिक कार्यक्रमों की भिन्न श्रेणियां प्रदान करेगा। कुछ अक्षर संकेत +D उच्च संवाद के लिए, -D संवाद के अभाव के लिए, -S संरचना के अभाव के लिए, +S उच्च रूप से संरचित के लिए का उपयोग करके मूर ने संभव शैक्षिक कार्यक्रमों को निम्नलिखित रूप से वर्गीकृत किया (तालिका 2.2 देखें)।

तालिका 2.2: 'संवाद' और 'संरचना' के संदर्भ में कार्यक्रमों के प्रकार

दूरी एक चर	प्रकार	कार्यक्रम के प्रकार	उदाहरण
सर्वाधिक दूरी ↑	-D +S	1. बिना संवाद, परंतु संरचना के साथ कार्यक्रम	ऐसे कार्यक्रम जिनमें संप्रषण विधि रेडियो और टेलीविजन होते हैं।
	-D -S	2. बिना संवाद और बिना संरचना के कार्यक्रम	स्वतंत्र पठन/अध्ययन कार्यक्रम-स्व-निर्देशित प्रकार के
	+D +S	3. संवाद और संरचना के साथ कार्यक्रम	द्वि-मार्गीय संप्रषण विधियों का उपयोग वाले कार्यक्रम
सबसे कम दूरी ↓	+D -S	4. संवाद के साथ परंतु बिना संरचना के कार्यक्रम	एक ट्यूटोरियल कार्यक्रम

इस प्रकार, मूर ने इन चरों, **संवाद** और **निश्चयीकरण**, को न केवल शैक्षिक कार्यक्रमों के वर्गीकरण के लिए किया बल्कि दूरी के अपने विचार की रचना के लिए भी किया। उनके अनुसार, शिक्षार्थी और शिक्षक/संस्थान के बीच की वास्तविक दूरी को उन दोनों के बीच स्थान की दूरी के संदर्भ में नहीं मापा जा सकता, परंतु **संवाद** और **निश्चयीकरण** के संदर्भ में मापा जा सकता है, जिसे शैक्षिक कार्यक्रमों द्वारा प्रदान किया जाता है। संवाद और निश्चयीकरण की परिवर्तनशीलता के आधार पर दूर शिक्षण/अधिगम विधियों का यह वर्गीकरण यह स्पष्ट करता है कि दूरी शब्द को भौतिक समीपता के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, शिक्षार्थी X अपने शिक्षण संस्थान से 400 मील की दूरी पर है और शिक्षार्थी Y मात्र 4 मील दूर अपने शिक्षण संस्थान से है। परंतु, वहां ऐसी व्यवस्थाएं बनी हैं कि शिक्षार्थी X अपने शिक्षक/संस्थान के साथ परस्पर क्रिया टेलीफोन के द्वारा एक दिन में जितनी बार चाहे, उतनी बार कर सकता है। इसके विपरीत, शिक्षार्थी Y को पूर्ण रूप से पाठ्य सामग्री पर निर्भर रहना है जो उसके संस्थान ने उसके पास भेजी है और संस्थान ने अतिरिक्त शैक्षिक परस्पर क्रिया हेतु अन्य कोई व्यवस्थाएं नहीं की है। ऐसी स्थिति में, हम कहेंगे कि शिक्षार्थी Y अपने संस्थान से शिक्षार्थी X की तुलना में अधिक दूर है। इस प्रकार, इस संदर्भ में दूरी को संवाद और निश्चयीकरण के एक कार्य

के रूप में देखना चाहिए। कहने का तात्पर्य है कि, संवाद और निश्चयीकरण का स्तर जितना ऊँचा होगा, शिक्षार्थी अपने शिक्षक/संस्थान से कम दूरी पर होगी/होगा और संवाद एवं निश्चयीकरण का स्तर जितना कम होगा, शिक्षार्थी अपने शिक्षक/संस्थान से अधिक दूरी पर होगा।

अब तक हमने मूर की 'दूरी' की अवधारणा की चर्चा दूरस्थ शिक्षा की एक विशेषता के रूप में की, अब हम इसकी दूसरी विशेषता 'शिक्षार्थी स्वायत्तता' की ओर बढ़ते हैं।

B) शिक्षार्थी स्वायत्तता

मूर के अनुसार, शिक्षार्थी स्वायत्तता वह सीमा है जिससे शिक्षण अधिगम संबंध में लक्ष्य निर्धारण, अधिगम अनुभवों और अधिगम कार्यक्रम के मूल्यांकन संबंधी निर्णय, शिक्षार्थी न कि शिक्षक द्वारा निश्चित किए जाते हैं। दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों की जांच यह देखने के लिए कि प्रमुख शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं को शिक्षक या शिक्षार्थी किस सीमा तक नियंत्रित करते हैं और उसके बाद शिक्षार्थी स्वायत्तता के स्तर (प्रत्येक कार्यक्रम में) के अनुसार वर्गीकृत किए जाते हैं। उसने संव्यवहारिक दूरी और शिक्षार्थी स्वायत्तता में एक संबंध पाया कि उच्च क्षमता वाले विद्यार्थी, स्वायत्त शिक्षार्थियों के रूप में कम संवाद और छोटी संरचना वाले कार्यक्रमों के साथ काफी सुविधापूर्ण दिखाई दिए, अधिक आश्रित शिक्षार्थियों ने अधिक संवाद वाले कार्यक्रमों की प्राथमिकता दी। कुछ ने अधिक संरचना की इच्छा की, जबकि अन्य ने एक निर्देशक के निकट संबंध में प्रदत्त निरौपचारिक संरचना में विश्वास को प्राथमिकता दी।

हमने संक्षेप में व्याख्या किया कि शिक्षार्थी स्वायत्तता क्या है। यह एक अच्छा विचार होगा कि हम इस पर एक झलक डालें। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षार्थियों पर शिक्षा का जोर ऊपर से था, जो एक ऊपर से नीचे का मॉडल है। पाठ्यचर्या घटकों का चयन और/या निर्धारण संस्थान और/या शिक्षक द्वारा किया जाता है, जो शिक्षार्थियों द्वारा पालन किए जाने वाले निर्देशों को निर्धारित करते हैं। हमें इस बिंदु पर विस्तृत बताएं।

हमने पहले इंगित किया है कि पाठ्यचर्यागत इकाई की रचना एक कार्यक्रम के उद्देश्यों के प्रस्तुतीकरण, इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उपयोग की जाने वाली विधियां, इन विधियों के लिए उपयुक्त सामग्री और मूल्यांकन प्रणाली जो उन उद्देश्यों को सुझायी गई विधियों और सामग्री द्वारा प्राप्त करने में सहायक होते हैं। तदनुसार, एक शैक्षिक कार्यक्रम जिसके लिए उद्देश्य, विधियां, सामग्री और मूल्यांकन का निर्धारण संस्थान/शिक्षक द्वारा किया जाता है, उन्हें 'संस्थान/शिक्षक-निर्धारित' कहा जाता है। इस पृष्ठभूमि के विपरीत, एक ऐसे कार्यक्रम को दृष्टिगत करना कठिन नहीं होना चाहिए जिसे 'शिक्षार्थी-निर्धारित' कहा जा सकता है। हम एक कार्यक्रम को 'शिक्षार्थी निर्धारित' कह सकते हैं, जब इसके उद्देश्य विधियां, सामग्री और मूल्यांकन (सभी चार पाठ्यअंग) का निर्धारण शिक्षार्थी द्वारा स्वयं किया जाता है। इसे भिन्न प्रकार से ऐसे कहा जा सकता है, एक शिक्षार्थी की निर्धारित कार्यक्रम में 'शिक्षार्थी स्वायत्तता' स्वीकार्य है। किसी विशेष कार्यक्रम में शिक्षार्थी स्वायत्तता की स्तर के आधार पर हम इसे 'शिक्षार्थी-निर्धारित' या 'स्वायत्त' से 'संस्थान/शिक्षक-निर्धारित' या 'गैर-स्वायत्त' तक में वर्गीकृत कर सकते हैं। इस संबंध में एक उदाहरण निम्नलिखित है।

तालिका 2.3 दर्शाती है कि अधिगम कार्यक्रमों की सीमा 3N प्रकार से 3A प्रकार तक हो सकती है। आइए इसकी आगे व्याख्या करने के लिए उदाहरण के रूप में एक बी.एड. कार्यक्रम को लेते हैं। इस कार्यक्रम के उद्देश्य एनसीटीई द्वारा पूर्व निर्धारित होते हैं या संबंधित विश्वविद्यालय द्वारा तय किए जाते हैं। इस प्रकार, जहां तक कार्यक्रम के उद्देश्यों

का संबंध है जो शिक्षार्थियों को स्वायत्तता प्रदान नहीं करते उन्हें हम इसे 'N' अक्षर (गैर-स्वायत्त) से इंगित करते हैं। शिक्षा को प्रभावित करने वाली विधियां और सामग्री जो उपयोग की जाती है, भी विश्वविद्यालय और/या शिक्षक द्वारा निर्धारित किए जाते हैं; अतः इसमें भी शिक्षार्थी को कोई स्वायत्तता नहीं दी जाती तो पुनः हम इसे N अक्षर द्वारा चिन्हित करते हैं। यही स्थिति मूल्यांकन के साथ भी है, जिसका निर्धारण भी विश्वविद्यालय द्वारा किया जाता है। इस प्रकार एक BEd कार्यक्रम गैर-स्वायत्त कार्यक्रम है जो पूरी तरह से 3N प्रकार का है। दूसरी ओर, एक शिक्षित इंजीनियर अपने व्यवसाय में व्यक्तिगत सुधार हेतु एक कोर्स में प्रवेश ले सकता है। अर्थात् स्वयं को अपने व्यवसाय क्षेत्र की विशेषता में नवीनतम क्या हो रहा है, उससे परिचित रखने के लिए। यह मानते हुए कि ऐसे कई कोर्स उपलब्ध हैं, यह इंजीनियर अपनी आवश्यकताओं और/या रुचियों को ध्यान में रखकर कोर्स का चयन करेगा। अर्थात्, वह कोर्स के उद्देश्यों, विधियों और सामग्री को अपनी रुचि के अनुसार निश्चित करेगी/करेगा। अंत में, वह निर्धारित करेगा कि उसके उद्देश्य प्राप्त हुए या नहीं। उसके प्रकार का यह कोर्स पूर्णतया 'स्वायत्त' होगा और हम इसे 3A प्रकार का कार्यक्रम कह सकते हैं। उपरोक्त उदाहरणों के दो प्रकारों के बीच पाठ्यक्रम/कार्यक्रम के प्रकारों की श्रेणी हो सकती है – अन्य की तुलना में कुछ अधिक स्वायत्त और कुछ कम हो सकते हैं।

तालिका 2.3: शिक्षार्थी स्वायत्तता के संदर्भ में कार्यक्रम के प्रकार

कार्यक्रम प्रकारों की सीमा	क्र. सं.	कार्यक्रम के प्रकार	उद्देश्यों का निर्धारण	प्रविधि (विधियां +सामग्री)	मूल्यांकन
शिक्षक-निर्धारित (गैर-स्वायत्त) N	1.	भारत में अधिकांश पत्राचार कोर्सेस	N	N	N
	2.	कई निजी अध्ययन कोर्सेस	N	A	N
	3.	ऐसे अध्ययन जिनमें शिक्षार्थी केवल मूल्यांकन को नियंत्रित करता है।	N	N	A
	4.	अध्ययन, जिनमें शिक्षार्थी कोर्स की विषय वस्तु और मूल्यांकन को नियंत्रित करता है।	N	A	A
	5.	कार चलाना सीखना	A	N	N
	6.	खेल कौशल सीखना	A	N	A
शिक्षार्थी-निर्धारित (स्वायत्त) (A)	7.	व्यक्तिगत सुधार के लिए अध्ययन	A	A	A

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

5) आइटम 5, अर्थात् 'कार चलाना सीखना' (तालिका 2.3 में) को ANN प्रकार के कार्यक्रम के रूप में क्यों वर्गीकृत किया गया है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.4.4 शिक्षण का औद्योगीकरण सिद्धांत

शिक्षण का औद्योगीकरण का सिद्धांत या शिक्षण और अधिगम का औद्योगीकृत रूप का प्रतिपादन होट्टो पीटर्स द्वारा किया गया। वह 1975 में फर्न विश्वविद्यालय (पश्चिमी जर्मनी-एस्टव्हाइल का मुक्त विश्वविद्यालय) के प्रथम उपकुलपति थे। इससे पूर्व उन्होंने पूर्व संघीय गणतंत्र, जर्मनी में जर्मन इंस्टीयूटी ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन में कार्य किया, जहाँ उन्होंने दूरस्थ शिक्षा प्रक्रिया में महत्वपूर्ण अन्तर्दृष्टियां विकसित की। उनका विश्वास था कि उच्च विकसित औद्योगिक समाज ने शिक्षा के लिए आवश्यकता की व्यापक विविधताओं को जन्म दिया। उनके अनुसार इस तथ्य ने जनसंख्या विस्फोट की घटना के साथ मिलकर शिक्षा की पारंपरिक प्रणाली को प्रतिपादित किया, जो शिक्षार्थियों की बढ़ती हुई संख्या की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपर्याप्त थीं। अतः उन्होंने तर्क दिया कि नए उपागमों की खोज की आवश्यकता है, नई तकनीकों का विकास और उपयोग हेतु उपलब्ध कराई गई- इन सबको औद्योगिक विशेषताओं वाला होना चाहिए क्योंकि इनकी आवश्यकता औद्योगीकरण के परिणाम स्वरूप उत्पन्न हुई।

सिद्धांत का तर्काधार : शिक्षा में घटनात्मक परिवर्तन

पीटर्स (1973) ने अपनी पुस्तक – 'द डाइजेक्टकल स्टक्चर ऑफ डिस्टेंस टीचिंग : इनवेस्टीगेशन टूवर्ड्स एन इंस्टीएलाइज्ड फॉर्म ऑफ टीचिंग एंड लर्निंग द्वारा दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत में अपना प्रमुख योगदान दिया। (यह पुस्तक मूल रूप से जर्मन भाषा में लिखी गई) उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि 'दूरस्थ अधिगम/शिक्षण, शिक्षण और अधिगम का एक औद्योगिक रूप है। तथापि उसने इन निष्कर्षों तक पहुंचने में पारंपरिक सैद्धांतिक अवधारणाओं की उपेक्षा नहीं की। उन्होंने इन इनपुटों का उपयोग अपने इस विचार को सुदृढ़ करने हेतु किया कि दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा का एक औद्योगीकृत रूप है। उदाहरण के लिए जर्मन सिद्धांतवादियों जैसे हनीमन और शल्ज द्वारा औपचारिक शिक्षा के लिए विकसित अवधारणाएं: 'उद्देश्य' (इंटेंशन), 'विषय वस्तु' (कौन्टेंट), 'विधि' (मैथोडोलौजी), 'माध्यम का चयन' (चोइस ऑफ मीडिया), 'व्यक्तिगत विशेषताएं' और सामाजिक सांस्कृतिक स्थिति', जब दूरस्थ शिक्षा प्रक्रिया के लिए उपयोग की जाती है, तो यह दर्शाती है कि दूरस्थ शिक्षा एक घटना है जो पारंपरिक शिक्षा से बहुत भिन्न है। हम इस बिंदु पर यहां विस्तार से चर्चा करेंगे:

i) एक दूरस्थ शिक्षक का **शैक्षिक संकल्प** निश्चित रूप से उच्च ज्ञानात्मक क्षेत्र का होना चाहिए; परंतु मनोगत्यात्मक और भावनात्मक पक्षों में निम्नतम स्तर का।

ii) पारंपरिक शिक्षा प्रणाली की भांति दूरस्थ शिक्षा में **विषय वस्तु** का चयन विस्तृत और

विविध नहीं हो सकता है। (आमने-सामने या नियमित शिक्षा— के घटकों को शामिल करने की आवश्यकता है, यदि विभिन्न प्रकार के प्रयोग, विषय वस्तु के अंग बनाते हैं।)

- iii) **शिक्षण विधि** और माध्यमों के चयन में भी परिवर्तन होता है, क्योंकि सभी पारंपरिक विधियों का उपयोग दूरी के लिए नहीं किया जा सकता।
- iv) शिक्षार्थियों की **व्यक्तिगत विशेषताओं** और **सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों** में अंतर भी अपारंपरिक है - प्रथम पीढ़ी के शिक्षार्थी पारंपरिक रूप से उत्कृष्ट वर्ग के साथ प्रतियोगी होते हैं, मध्यम आयु वर्गीय शिक्षार्थी स्वयं को युवा शिक्षार्थियों के साथ समूह में पाते हैं आदि।

इस विश्लेषण से पीटर ने निष्कर्ष निकाला कि पारंपरिक शैक्षिक संरचना के विश्लेषण हेतु प्रस्तावित वर्ग, दूरस्थ शिक्षा की संरचना और/या प्रक्रियाओं के विश्लेषण के लिए उपयुक्त नहीं है।

पीटर्स (1988) ने 'औद्योगिक' सिद्धांत और व्यवहार' के वर्गों की सहायता से दूरस्थ शिक्षा का विश्लेषण किया और निष्कर्ष निकाला कि दूरस्थ शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए '**श्रम के विभाजन का सिद्धांत**' एक गम्भीर तत्व है। '**औद्योगीकरण**' के सिद्धांत में शिक्षण प्रक्रिया को धीरे-धीरे यांत्रिकरण और स्वचालन के माध्यम से पुनर्चित किया जाता है। पीटर ने निम्नलिखित बिंदुओं का उल्लेख किया :

- दूरस्थ अध्ययन कोर्स का विकास उसी प्रकार मात्त्वपूर्ण है जिस प्रकार उत्पादन प्रक्रिया से पूर्व तैयारी का कार्य होता है।
- शिक्षण प्रक्रिया की प्रभाविकता विशेष रूप से नियोजन और संगठन पर आश्रित होती है।
- पाठ्यक्रमों को औपचारिक रूप देना चाहिए और विद्यार्थियों से अपेक्षाएं मानकीकृत की जानी चाहिए।
- शिक्षण प्रक्रिया वृहद रूप से वस्तुनिष्ठ है।
- दूरस्थ शिक्षण का कार्य पारंपरिक शिक्षण में विश्वविद्यालय शिक्षकों की तुलना में काफी परिवर्तित हो गया है।
- दूरस्थ अध्ययन तभी मितव्ययी हो सकता है जब उपलब्ध संसाधनों का उपयोग और केन्द्रीय प्रशासन हो।

पीटर्स के अनुसार जब दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण और अधिगम प्रक्रियाओं के बारे में निर्णय लिए जाएं तो औद्योगिक संरचनाएं और दूरस्थ शिक्षण की विशेषताओं को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

दूर शिक्षण की औद्योगिक विशेषताएं : समानान्तरता

यहाँ हम दूरस्थ शिक्षा की कुछ विशेषताओं की चर्चा करेंगे जो औद्योगिक क्षेत्र के समांतर हैं।

- i) **श्रम का विभाजन** : दूरस्थ शिक्षा के लिए शिक्षण सामग्री का उत्पादन एक औद्योगिकृत प्रक्रिया है। विशेषज्ञों की एक संपूर्ण श्रेणी : विषय विशेषज्ञ, कोर्स लिखने वाले और संपादकों से लेकर अनुदेशन स्वरूपक, मुद्रक आदि तक परंपरागत पुस्तकों से सीखने

के लिए उपयोग किए जाने वाले तरीकों से भिन्न सामग्री के उत्पादन के लिए औद्योगिक तरीकों से कार्य करते हैं। इसमें संलग्न बुनियादी सिद्धांत हैं – 'श्रम का विभाजन', यह सिद्धांत केवल सामग्री उत्पादन में ही लागू नहीं होता बल्कि अन्य शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रियाओं में भी उपयोग होता है। जो सूचना और शैक्षिक कार्य तैयार करते हैं वे उसको आपूर्ति या संप्रेषण नहीं करते, जो इनकी आपूर्ति/संप्रेषण करते हैं उनका सीधा संबंध पढ़ाने या परामर्श से नहीं होता, जो ट्यूटोरिंग और परामर्श में संलग्न होते हैं, वे शिक्षार्थी की प्रगति का मूल्यांकन या उनके निष्पादन का आँकलन करने वाले से भिन्न हो सकते हैं। सारांश के रूप में, प्रत्येक कार्य का ध्यान एक विशेषज्ञ द्वारा रखा जाता है।

ii) **शिक्षण सामग्री का व्यापक पैमाने पर उत्पादन** : बड़े पैमाने पर उत्पादन, स्पष्ट रूप से उद्योगों की घटना है। यदि ऐतिहासिक विचार से देखा जाय तो उद्योग और दूरस्थ शिक्षा के बीच स्पष्ट समानताएं नजर आती हैं। उदाहरण के लिए उद्योग की वृद्धि व्यक्तिगत श्रमिक से लेकर सामूहिक प्रयास तक दिखाई देती है और अधिक मांगों की पूर्ति हेतु बड़े पैमाने पर उत्पादन करना होता है। यही केस दूरस्थ शिक्षा के उद्भव के साथ भी है। हम उपकरणों के प्रारंभिक उपयोग से सरल यंत्रीकरण द्वारा स्वचालीकरण और कंप्यूटरीकरण तक की प्रगति में भी समानताएं देख सकते हैं यह समानता बड़ी अदभूत है।

iii) **कार्य प्रक्रियाओं का व्यवस्थीकरण** : औद्योगीकरण और दूरस्थ शिक्षा के परिणामों के बीच स्पष्ट परिलक्षणीय समानताएं हैं। उदाहरण के लिए यह माना गया है कि औद्योगीकरण की भांति दूरस्थ शिक्षा में भी सफलता, काफी मात्रा में निम्नलिखित पर निर्भर करती है :

- 'नियोजन' जो वैज्ञानिक प्रकृति का होता है;
- प्रक्रियाओं का औपचारिकरण;
- उत्पादों का मानकीकरण;
- संपूर्ण प्रक्रिया का व्यवस्थीकरण;
- 'यंत्रीकरण' जिसका उद्देश्य प्राप्ति के लिए प्रयुक्त मानव शक्ति में सामाजिक और दृष्टिकोण परिवर्तन का आशय है;
- केन्द्रीकरण पर भारी निर्भरता।

iv) **खाका (Layout)** : यद्यपि इमारतों के स्वरूप में भी समानताएं ढूंढना नगण्य है परंतु यह महत्वपूर्ण है। हम कहना चाहते हैं कि एक मुक्त विश्वविद्यालय का कैम्पस एक विशिष्ट पारंपरिक विश्वविद्यालय से पूर्णतया भिन्न होता है। पहले में संरचनाएं लगभग एक उद्योग के सामन होती हैं जिसमें 'उत्पादन', 'स्वरूप' आदि के अनुभाग अलग अलग होते हैं और शिक्षकों की भूमिका प्रायः प्रबंधकों के समान होती है।

यह संभव है कि इसमें और अधिक समानताएं जोड़ी जा सकती हैं। तथापि हमारा उद्देश्य एक विस्तृत सूची प्रस्तुत करना नहीं है। जो यहां प्रस्तुत किए गए हैं वे उदाहरण हैं जिन्होंने पीटर्स को प्रभावित किया। दूरस्थ शिक्षा और उद्योग के बीच समानताओं को देखने के बाद हमें यह भी जानना चाहिए कि शिक्षा का यह औद्योगीकृत रूप शिक्षा की आमने-सामने की प्रणाली से भिन्न है।

पीटर्स ने दूरस्थ शिक्षा के अपने सैद्धांतीकरण में इन समानताओं को उच्चतम मूल्य प्रदान किया।

दूरस्थ शिक्षा : शिक्षा का सर्वाधिक औद्योगिक रूप

पीटर्स का निष्कर्ष था कि शिक्षा के सभी रूपों में दूरस्थ शिक्षा सर्वाधिक औद्योगिकीकृत रूप है; और औद्योगिकीकरण के सिद्धांत के साथ वहां पर प्रयुक्त शोधकर्ताओं का वर्ग इस नई शैक्षिक घटना की व्याख्या हेतु सर्वोत्तम साधन हैं। पीटर्स पारंपरिक शिक्षा में होने वाले शैक्षिक संप्रेषण में भेद करते हैं, जिसके लिए माना जाता है कि वह अन्तर्वैयक्तिक संप्रेषण पर आधारित होना चाहिए और दूरस्थ शिक्षा में संप्रेषण अप्रत्यक्ष होता है। अर्थात् वह संप्रेषण अधिकांशतः विविध मीडिया द्वारा प्रभावित होता है।

पीटर के सिद्धांत के शिक्षण शास्त्रीय पक्ष

पीटर के सिद्धांत के कुछ महत्वपूर्ण शिक्षण शास्त्रीय पक्ष निम्नलिखित हैं :

- i) दूरस्थ शिक्षा में शैक्षिक संप्रेषण कृत्रिम होता है क्योंकि संपूर्ण संप्रेषण कुछ अंगों में टूटा हुआ है – मुद्रित, श्रव्य, दृश्य आदि जो यांत्रिक रूप से प्रभावित हैं। शैक्षिक संप्रेषण में इस प्रकार के रूपांतरण ने शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को नई भूमिकाएं सौंप दी है। शिक्षण क्रियाएं और अधिगम क्रियाएं भी शिक्षक और शिक्षार्थी के उत्तरदायित्वों के साथ परिवर्तित हो गई हैं।
- ii) शिक्षक सूचना का एक भंडार और व्याख्याकर्ता या उद्घोषक की अपेक्षा एक 'प्रबंधक' अधिक है। तब शिक्षक का प्रथम कार्य इस नई भूमिका को स्वीकारना है और स्वयं को दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के अनुकूल बनाना है। उसे ऐसी स्थिति का सामना करना है जहां संपूर्ण शिक्षण प्रक्रिया और शिक्षण सामग्री कई भागों में वितरित हैं। उसमें से प्रत्येक का निष्पादन और प्रबंधन विभिन्न व्यक्तियों और उपकरणों द्वारा किया जाता है जो प्रणाली की रचना करते हैं। इस नई प्रणाली को अपनाने के लिए सदियों पुराने व्यावसायिक प्रतिरूप को तोड़ने की आवश्यकता है।
- iii) दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में आने वाले अधिकांश शिक्षार्थियों के पास परंपरागत शिक्षा प्रणाली का आधार होता है। उन्हें दूरस्थ शिक्षा आकर्षक लगती है, क्योंकि यह उन्हें अपने तरीके से काम करने के अवसर देती है- अनुदेशन समयबद्ध, स्थानबद्ध या व्यक्तिबद्ध नहीं होता है। वे अपने लिए विशाल विविध विकल्पों में से चयन कर सकते हैं, अपने समयानुसार पाठ्यक्रम पूर्ण कर सकते हैं, पाठ्यक्रम कार्य करने के लिए स्वयं का स्थान चुन सकते हैं। इन लाभों के होने से दूरस्थ शिक्षार्थियों के उत्तरदायित्व केवल बढ़े ही नहीं बल्कि उनकी प्रकृति भी परिवर्तित हुई। शिक्षार्थी इस औद्योगिकीकृत प्रणाली का सामना करने में कठिनाई का अनुभव करती/ता है और छोड़कर चला जाती/ता है।

शिक्षा के औद्योगिकीकरण के परिणामों के प्रभाव को जैसा उन्होंने देखा, क्रियान्वयन द्वारा शिक्षाविदों के नए वर्ग का प्रादुर्भाव होना चाहिए जो शिक्षा के औद्योगिकीकृत प्रणाली को अधिक मानोचित, शिक्षक को स्वयं को समायोजित करने में सहायक और शिक्षार्थी को इस नई शैक्षिक स्थिति से अधिकतम लाभ उठाने में सहायक हो। यह प्रक्रिया जैसा आज देखा जाता है पहले ही गहरी जड़ें ले चुकी है और पूरे विश्व में फैल चुकी है।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

- ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

6) एक मुक्त विश्वविद्यालय और एक उद्योग में सामान्य चार विशेषताएं लिखिए।

2.4.5 मार्गदर्शित शैक्षिक संवाद सिद्धांत

दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत में चौथा महत्त्वपूर्ण योगदान 'मार्गदर्शित' शैक्षिक संवाद की अवधारणा है, जो वोजे होलम्बर्ग द्वारा प्रतिपादित किया गया, उन्होंने एक अंग्रेजी प्रवक्ता से कार्य आरम्भ किया और 1956 में दूरस्थ शिक्षा की ओर मुड़े और हरमोड्स - माल्यों में एक स्वीडिश अग्रणी पत्राचार संस्थान में कार्य किया। जहां वे 1965 में निदेशक बने। वे दूरस्थ शिक्षा के प्रोफेसर, फर्न यूनीवर्सिटी, हेगन में सेवानिवृत्त होने के पूर्व तक रहे।

मार्गदर्शित शैक्षिक संवाद – एक व्याख्या

एक सफल लेखक और सिद्धांत प्रेमी, होलम्बर्ग का विचार है कि शिक्षा का मूल 'व्यक्तिगत शिक्षार्थियों द्वारा अधिगम' है। इस पर दृढ़ रहते हुए उनका विश्वास है कि दूरस्थ शिक्षा को शिक्षा का एक उपयुक्त तरीका स्वीकार किया जाना चाहिए, विशेषकर व्यक्तिगत अधिगम के लिए उपयुक्त; क्योंकि यह शिक्षार्थी के लिए संभव बनाता है कि वह अपने स्वयं के कार्य पर निर्भर रहे, जो आवश्यक रूप से आमने सामने के प्रत्यक्ष शिक्षण से स्वतंत्र है। दूरस्थ शिक्षार्थी उसके लिए उपलब्ध विविध सहायक सुविधाओं रेडियो और टीवी कार्यक्रम, ऑडियो और वीडियो कैसेट्स, टेलीफोन और कम्प्यूटर, यहां तक कि संपर्क कार्यक्रमों में आमने सामने का शिक्षण आदि में से चुनने के लिए स्वतंत्र है परन्तु अधिगम या शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति का दायित्व उसका स्वयं का है। वह जिसमें संलग्न रहता है, वह **स्व-अध्ययन या 'स्वतंत्र अध्ययन'** कहलाता है। ध्यान में रखने योग्य महत्त्वपूर्ण बिंदु यह है कि स्व-अध्ययन में संलग्न शिक्षार्थी अकेला नहीं होता है। वह अपने अध्ययन को पूर्णतया अकेले नहीं करती/करता है। उसके पास प्रशासकों, लेखकों, मीडिया उत्पादकों, शिक्षक, मूल्यांकनकर्ता, ट्यूटर्स, शिक्षाविदों, परामर्शदाताओं आदि की एक संपूर्ण टीम होती है जो उसके साथ कार्य करते हैं। परन्तु उन सबकी सहायक भूमिकाएं होती हैं, वे व्यक्तिगत-अधिगम या स्व-अध्ययन का समर्थन करते हैं। (यहां पर एक चेतावनी आवश्यक है। भारतीय परिस्थिति में एक व्यक्ति ऐसे अभ्यर्थियों के संपर्क में आ सकती/सकता है, जो कुछ स्थानों पर विश्वविद्यालय परीक्षाओं में निजी रूप से शामिल होते हैं वे 'वाह्य-अभ्यर्थी' कहलाते हैं। ऐसे निजी/बाह्य अभ्यर्थी को उस प्रकार के अभ्यर्थियों के साथ भ्रमित न किया जाय जिन्हें हमने ऊपर परिभाषित करने का प्रयास किया है। होलम्बर्ग के लिए एक निजी/वाह्य शिक्षार्थी पूर्ण रूप से स्वयं के लिए है। वह एक अकेली/ला है; परन्तु एक दूरस्थ शिक्षार्थी के पास उसके स्व-अध्ययन के लिए सभी सहायता उपलब्ध हैं।)

जिस प्रकार की सहायता के लिए हमने पहले बात की है, उसे मुक्त विश्वविद्यालय/पत्राचार संस्थान या जो भी नाम हम इसके लिए चुनते हैं इन्हें उपलब्ध कराना चाहिए। इस

शैक्षिक सहायता का सारांश यह है कि व्यक्तिगत शिक्षार्थी और सहायता प्रदान करने वाले संस्थान के बीच 'शैक्षिक रूप से लाभदायक संबंध बनाना। होलम्बर्ग के अनुसार यह संबंध की विशेषता है जिसे वह 'मार्गदर्शित शैक्षिक वार्तालाप' कहते हैं।

शैक्षिक वार्तालाप के प्रकार

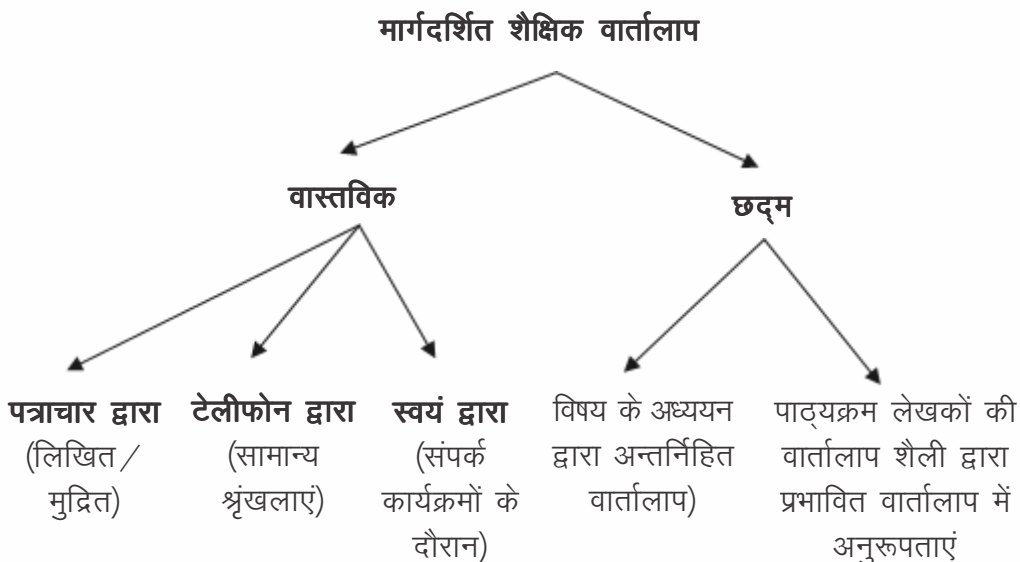
होलम्बर्ग (1981) अपनी पुस्तक 'स्टेटस एंड ट्रेण्ड्स ऑफ डिस्टेंट एजुकेशन' में वार्तालाप के इस प्रकार को प्रस्तुत करते हुए कहते हैं:

“विद्यार्थियों, ट्यूटर और संगठन के अन्य सहायकों के बीच एक प्रकार का वार्तालाप द्विमार्गीय यातायात के रूप में लिखित और टेलीफोन द्वारा परस्पर क्रिया के माध्यम से संपन्न होता है। अप्रत्यक्ष रूप से अध्ययन सामग्री के प्रस्तुतीकरण द्वारा वार्तालाप होता है, क्योंकि यह एक मार्गीय संप्रेषण विद्यार्थियों के लिए विषय वस्तु के साथ स्वयं चर्चा करने का कारण बनता है वार्तालाप इस प्रकार वास्तविक और कृत्रिम दोनों प्रकार का होता है। लेविस कहते हैं- सिमुलेटेड (कृत्रिम) वार्तालाप विषय सामग्री के अध्ययन के कारण अंतर्निहित वार्तालाप मात्र नहीं है, बल्कि कोर्स विकसित करने वालों और विद्यार्थियों के बीच एक संबंध है, जो सरल रूप में पठनीय और उचित बोलचाल की शैली में प्रस्तुति द्वारा रचित हो, तथा कोर्स का निजी वातावरण सतही रूप से चिन्हित हो। उदाहरण के लिए लेखक स्वयं को संदर्भित करने के लिए 'मैं' या 'हम' और विद्यार्थियों जिनसे बात हो रही हो, के लिए तुम/आप का उपयोग करते हैं। मैं अनुशंसा करता हूँ कि आप विद्यार्थियों की विदित समस्याओं हेतु प्रश्न एवं उत्तर, सुझाव एवं संदर्भ यहाँ संबद्ध होते हैं। प्रस्तुतीकरण की यह शैली, क्रियाकलाप को प्रेरित करती है और विद्यार्थियों के पूर्व-अनुभवों को संबंधित करते हुए तर्क, पक्ष एवं विपक्ष की चर्चा का संकेत देती है और इस प्रकार विचार श्रृंखला में बाधा को दूर करती है। पुनरावृत्ति कार्य एवं स्वयं जांच अभ्यास भी छदन वार्तालाप से संबंधित होते हैं।

उपरोक्त अंश में अन्य बिन्दुओं के साथ होलम्बर्ग दो प्रकार के शिक्षात्मक वार्तालापों की पहचान करते हैं:

- i) वास्तविक
- ii) छद्म

इन्हें चित्र द्वारा निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। (चित्र 2.3)



चित्र 2.3: मार्गदर्शित शैक्षिक वार्तालाप

शैक्षिक वार्तालाप की विशेषताएं

होलम्बर्ग (1981) के अनुसार शैक्षिक वार्तालाप की निम्नलिखित विशेषताएं हैं:

- i) अध्ययन सामग्री का सरलता से पहुंचने योग्य प्रस्तुतीकरण: लिखने में प्रिय, कुछ बोलचाल की भाषा, सरलता से पठनीय विषय यदि विषय मुद्रित हो; सूचना का सीमित घनत्व हो।
- ii) विद्यार्थियों को स्पष्ट राय और सुझावा, जैसे क्या करना, क्या नहीं करना है, कहां और कब विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।
- iii) प्रश्नों, क्या स्वीकारना है और क्या नहीं आदि पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए आमंत्रण।
- iv) विद्यार्थियों को भावनात्मक रूप से संलग्न करने के प्रयास ताकि वे विषय और इसकी समस्याओं पर व्यक्तिगत रुचि ले सकें।
- v) व्यक्तिवाचक एवं संबंधवाचक सर्वनामों के उपयोग के साथ व्यक्तिगत शैली;
- vi) स्पष्ट कथनों द्वारा प्रक्ररण के परिवर्तनों को चिन्हित करना; टंकण के साधन या अभिलेखित, मौखिक संप्रेषण वक्ताओं में परिवर्तन द्वारा उदाहरण के लिए पुरुष के बाद महिला, या विरामों द्वारा (यह वार्तालाप की अपेक्षा मार्गदर्शन की विशेषता है।)

‘मार्गदर्शित शैक्षिक संवाद’ की उपरोक्त विशेषताएं स्पष्ट रूप से सुझाती हैं कि दूरस्थ अधिगम को सफलता पूर्वक प्रभावित करने के लिए पाठ्यक्रम स्वरूपकर्ताओं और पाठ्यक्रम लेखकों को क्या करना चाहिए।

इस प्रकार ‘मार्गदर्शित शैक्षिक संवाद’ की अवधारणा को प्रस्तुत करने और कोर्स सामग्री के योजना और विकास में इसके प्रभावों को भी प्रदर्शित करने के बाद होलम्बर्ग (1981), अपनी परिकल्पना को संपेक्ष में निम्न प्रकार से प्रस्तुत करते हैं:

“‘मार्गदर्शित शैक्षिक संवाद’ की विशेषताएं जितनी मजबूत होती हैं, विद्यार्थियों में उनके और सहायक संगठन के बीच व्यक्तिगत संबंध की भावना उतनी ही प्रबल होती है। विद्यार्थियों की भावना कि सहायक संगठन अध्ययन सामग्री को व्यक्तिगत रूप से उनके लिए प्रासंगिक बनाने के लिए इच्छुक हैं, जितनी प्रबल होती है, उतनी ही अधिक उनकी व्यक्तिगत संलग्नता होती है। विद्यार्थियों में यह सहायक संगठन के साथ उनके व्यक्तिगत संबंध और अध्ययन सामग्री के साथ उनकी व्यक्तिगत संलग्नता जितनी मजबूत होती है, उतनी ही मजबूत उनमें प्रेरणा और अधिक प्रभावशाली अधिगम होता है।”

इस प्रकार ‘मार्गदर्शित शैक्षिक संवाद’ की अवधारणा की सहायता से होलम्बर्ग सुझाते हैं कि दूरस्थ शिक्षा क्या है, दूरस्थ शिक्षा की शिक्षण सामग्री की प्रकृति क्या होनी चाहिए, और अंत में किस प्रकार की दूरस्थ शिक्षण विधि सफल सिद्ध होगी।

सन् 1995 में होलम्बर्ग ने अपने दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत को महत्वपूर्ण तरीके से विस्तृत किया। यह व्यापक सिद्धांत कई भागों में विभाजित है। जो ठीक पूर्व में बताया गया सिद्धांत और यह विश्वास की दूरस्थ शिक्षा विविध शिक्षार्थियों के लिए कार्य करती है, जो आमने-सामने के शिक्षण का उपयोग नहीं कर सकते या नहीं करना चाहते, की ओर इंगित करता

है। इस प्रकार दूरस्थ शिक्षा विद्यार्थियों की चयन की स्वतंत्रता एवं आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है। व्यक्तिगत शिक्षार्थियों के लिए एक ओर दूरस्थ शिक्षा की उदार अध्ययन सुविधाओं के प्रावधान से और दूसरी ओर व्यावसायिक प्रशिक्षण से समाज लाभान्वित होता है। दूरस्थ शिक्षा, आर्वतक और आजीवन अधिगम तथा अधिगम अवसरों और समानताओं तक निःशुल्क पहुंच के लिए एक उपकरण है। होलम्बर्ग के अनुसार दूरस्थ शिक्षा की विशेषताएं निम्नलिखित कथनों से स्पष्ट होती हैं :

- सभी प्रकार का अधिगम जो संज्ञानात्मक ज्ञान और कौशलों के अर्जन साथ ही भावात्मक अधिगम और कुछ मनोगत्यात्मक अधिगम से संबंधित है, दूरस्थ शिक्षा द्वारा प्रभावशाली ढंग से प्रदान किया जाता है।
- 'अधिगम एक व्यक्तिगत क्रियाकलाप है, दूरस्थ शिक्षा इस तथ्य पर आधारित है। अधिगम का मार्गदर्शन और समर्थन असन्निहित माध्यमों द्वारा होता है।
- दूरस्थ शिक्षा अधिगम के व्यवहारवादी, ज्ञानवादी, रचनावादी और अन्य पद्धतियों के लिए मुक्त है।
- व्यक्तिगत संबंध अध्ययन का आनन्द और विद्यार्थियों तथा जो उन्हें सहायता दे रहे हैं (शिक्षक, परामर्शदाता), के बीच परानुभूति दूरस्थ शिक्षा में अधिगम के केन्द्र पर है। परानुभूति और लगाव की भावना विद्यार्थियों में सीखने की प्रेरणा को बढ़ावा देती है जो अधिगम को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।
- यद्यपि दूरस्थ शिक्षा प्रशिक्षण का प्रभावशाली तरीका है, तथापि इसमें मात्र तथ्यों का अधिगम और स्वीकृत सत्यों के पुनरोत्पादन की आशंका बन जाती है। फिर भी इसे इस प्रकार संगठित और संपन्न किया जा सकता है कि विद्यार्थी अपनी स्वयं की स्थिति को खोजने समीक्षा करने और पहचानने के लिए प्रोत्साहित हो जाएं।

होलम्बर्ग का विस्तृत सिद्धांत दूरस्थ शिक्षा का विवरण मात्र ही नहीं परन्तु इसकी व्याख्या शक्ति भी प्रस्तुत करता है। यह लाभदायक है कि एक सामान्य उपागम की पहचान की जाय जो शिक्षण अधिगम प्रयासों के अनुकूल तथा अधिगम के भी अनुकूल हो।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

7) होलम्बर्ग ने वार्तालाप को 'मार्गदर्शित' और 'शिक्षात्मक' क्यों कहा?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.4.6 द्विमार्गीय डाक-संचार सिद्धांत

स्वीडेन के जॉन ए.बाथ., जिन्होंने माल्मों में हरमोड्स पर कार्य किया, पत्राचार/दूरस्थ शिक्षा में मुख्य रूप से द्विमार्गीय संप्रेषण से संबंधित रहे। तथापि हम दूरस्थ शिक्षा के प्रतिमान (माडल्स) पर उनकी अन्तर्दृष्टि का वर्णन भी संक्षेप में करेंगे।

यह कहा जा सकता है कि बहुत आरम्भ से बाथ के विचार होलम्बर्ग से भिन्न नहीं हैं। यदि कोई अंतर है तो वह बाथ का “द्विमार्गीय संप्रेषण” पर जोर देना है जैसे दूरस्थ शिक्षा सामग्री के माडल्स। बाथ स्वीकारते हैं कि पत्राचार/दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा के औद्योगीकरण द्वारा जन शिक्षा का साधन बन गई है और इस कारण भी कि दूरस्थ अध्ययन आवश्यक रूप से ‘व्यक्तिगत अध्ययन’ है। तथापि एक लेखक, संपादक, ट्यूटर और कोर्स डिजाइनर के रूप में उनके अनुभवों ने उन पर प्रभाव डाला कि ‘एक पत्राचार शिक्षक, रचनात्मक आलोचना, प्रोत्साहन और व्यक्तिगत विद्यार्थी की अधिगम समस्याओं में निजी संलग्नता द्वारा अपने विद्यार्थियों में अभूतपूर्व सुधार हेतु उन्हें उत्तेजित कर सकता है’ (बार, 1980), उसने यह भी स्पष्टतः पाया कि “शिक्षण प्रणाली में द्विमार्गीय डाक संप्रेषण की मात्रा को कम करने की स्पष्ट प्रवृत्ति थी।” उपभाग 4.4.5 में ऊपर हमने जो प्रस्तुत किया है, उसे हम विस्तृत करेंगे।

शिक्षक टिप्पणियों का शिक्षण शास्त्रीय महत्त्व

यह स्पष्ट है कि पत्राचार/दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक टिप्पणियां सत्रीय कार्य से संबंधित हैं जो दूरस्थ शिक्षार्थियों द्वारा संपन्न किए जाते हैं। “सुझाव यह है कि शिक्षार्थी के निष्पादन में “महत्वपूर्ण सुधार” लाने के लिए दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक टिप्पणी (सत्रीय कार्य आधारित कार्य) द्वारा प्रोत्साहित) एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रकार शिक्षक टिप्पणियां दूरस्थ शिक्षा के उच्च वांछित शिक्षण शास्त्रीय अंगों का निर्माण करती हैं परंतु शिक्षक टिप्पणियों को शैक्षिक सहायता के ‘औद्योगिक’ प्रकार की संपूर्ण योजना में कहीं स्थान नहीं मिलता, जो दूरस्थ शिक्षार्थियों को प्रदान की जाती है। शिक्षक टिप्पणी द्विमार्गीय संप्रेषण की श्रृंखला में मात्र एक संधि के रूप में आ सकती है, जो पत्राचार/दूरस्थ शिक्षा संस्थान द्वारा कोर्स सामग्री के द्वारा आरम्भ किया जाता है। यदि सत्रीय कार्य पर कार्य करने और उन्हें पत्राचार/दूरस्थ शिक्षक द्वारा आँकलन हेतु प्रेषित करने के लिए द्विमार्गीय संप्रेषण की श्रृंखला में एक द्वितीय संधि संपर्क प्रदान करने के लिए बाध्य होता है। शिक्षक द्वारा किया गया आँकलन द्विमार्गी संप्रेषण में तीसरा संपर्क/संधि है। चौथा, शिक्षक द्वारा किए गए आँकलन के प्रत्युत्तर में शिक्षार्थियों द्वारा उठाए गये प्रश्न और शंकाएं हो सकता है। परंतु आइए उपरोक्त तीसरे संपर्क पर दूसरी नजर डालें।

अनुभवों ने दर्शाया है (और यह अभिन्न रूप से सभी केसों पर लागू होता है उदाहरण के लिए भारतीय संदर्भ में पत्राचार/दूरस्थ शिक्षा) कि ट्यूटर्स का शिक्षार्थियों के प्रत्युत्तरों की जांच का एक मात्र प्रत्यक्ष संकेतक एक ग्रेड (बिंदु स्केल/पैमाना पर) या अंक (प्रतिशत में) जो उत्तर पुस्तिका के सबसे ऊपर लिखा जाता है। इस प्रकार का ग्रेड या अंक शिक्षार्थी के लिए कुछ संप्रेषण या क्रिया को प्रेरित कर सकती है, परंतु यह शिक्षण शास्त्रीय रूप से अधिक कार्य नहीं कर सकता, क्योंकि इस प्रकार के केस में ट्यूटर ने एक पत्राचार/दूरस्थ शिक्षक की तुलना में एक ‘परीक्षक’ के रूप में अधिक कार्य किया है। उसका ट्यूटोरियल इनपुट द्विमार्गीय संप्रेषण की श्रृंखला वास्तविक तीसरे संपर्क में संरचनात्मक आलोचना, प्रोत्साहन आदि सम्मिलित होने चाहिए। इसके लिए टिप्पणियां, मात्र ग्रेड्स/अंक नहीं, महत्वपूर्ण हैं जो शिक्षार्थी निष्पादन को सुधारे।

बाथ, ट्यूटर टिप्पणियों के शिक्षण शास्त्रीय महत्त्व पर जोर देते हैं, जो पत्राचार/दूरस्थ शिक्षा में द्विमार्गीय संप्रेषण श्रृंखला में निर्णायक संपर्क बनाता है। दूसरा इनका यह अनुभव कि सत्रीय कार्य के शिक्षण शास्त्रीय महत्त्व के अतिरिक्त डाक द्विमार्गीय संप्रेषण की मात्रा को कम करने की प्रवृत्ति है। हम यह विश्वास कर सकते हैं कि यह एक खतरनाक प्रवृत्ति है। इसके विकल्प पाए जा सकते हैं, जैसा कि बाथ ने किया **“सामग्री में ही कुछ प्रकार का द्विमार्गीय संप्रेषण”** निर्मित करके स्वयं जांच अभ्यास विस्तृत आदर्श/नमूना उत्तर आदि के रूप में परंतु इस चर्चा से उत्पन्न महत्त्वपूर्ण प्रश्न बिंदु यह है कि शिक्षार्थी निष्पादन में सुधार के लिए द्विमार्गीय संप्रेषण की आवश्यकता है।

अब हम बाथ द्वारा प्रस्तुत दूसरे महत्त्वपूर्ण बिंदु की ओर बढ़ते हैं।

नामांकन पूर्व परामर्श

कुछ प्रसिद्ध शिक्षण माडल्स (जैसे स्कनर, रूथकोफ, औसबोल, ब्रूनर, रोजर्स आदि द्वारा प्रस्तुत के आधार पर दूरस्थ शिक्षा के विश्लेषण पर अपने महत्त्वपूर्ण कार्य में बाथ कुछ अन्य बातों के साथ सुझाते हैं कि हम विस्तृत रूप से दूरस्थ शिक्षण के दो माडल्स की बात कर सकते हैं।

- i) वे प्रतिमान जो निश्चित लक्ष्यों (शैक्षिक) की ओर अधिगम का अधिक कठोर नियंत्रण दर्शाते हैं।
- ii) वे माडल्स जो निश्चित (शैक्षिक) लक्ष्यों की ओर अधिगम का कम नियंत्रण दर्शाते हैं।

इन दो विस्तृत प्रतिमान की पहचान के बाद उन्होंने पाया कि पहला प्रतिमान शिक्षण अधिगम सामग्री पर केन्द्रित है— जितना संभव हो उन्हें कई प्रकार से स्वयं में पर्याप्त बनाना और शिक्षार्थी एवं शिक्षक/संस्थान के बीच संपूर्ण शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में द्विमार्गीय संप्रेषण को नगण्य स्थिति तक हटा देना। जबकि दूसरा प्रतिमान शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में द्विमार्गीय शैक्षिक संप्रेषण को महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान करता है। इन दोनों प्रतिमानों पर बिना कोई मूल्य निर्णय किए बाथ यह सुझाने में व्यवहारिक है कि निःसंदेह शिक्षण अधिगम सामग्री का डिजाइन महत्त्वपूर्ण है। (क्योंकि उनमें द्विमार्गीय संप्रेषण बनाया जा सकता है।), परंतु द्विमार्गीय संप्रेषण कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। इसके अपने गुण हैं। चाहे यह मेल द्वारा, टेलीफोन या आमने सामने की स्थिति में हो दूरस्थ शिक्षा की सफलता के लिए इन दो मुख्य कारकों का उत्तरदायित्व है। वे इसमें एक और कारक जो जोड़ते हैं जिसका नाम है 'नामांकन पूर्व परामर्श' उन्होंने इस कारक को इसलिए जोड़ा क्योंकि अधिगम प्रविधियों पर उनका विश्लेषण दर्शाता है कि शिक्षार्थी विशेषकर प्रौढ़ शिक्षार्थियों को निम्नलिखित में सहायता की आवश्यकता होती है।

- i) उनके अधिगम लक्ष्यों को परिभाषित करने और पहचानने में;
- ii) पहचाने गए लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए उपयुक्त सामग्री के चयन में;
- iii) उनकी शैक्षिक कठिनाइयों के समाधान और उनकी प्रेरणा को बढ़ावा देने में या बनाए रखने में।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

8) द्विमार्गीय संप्रेषण को प्रभावित करने के लिए दूरस्थ शिक्षक कैसे कार्य करता है।

2.4.7 सरोकार की निरन्तरता का सिद्धांत

इस भाग में हम डेविड सेवार्ट के विचारों को जानेंगे, जो दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में ब्रिटिश ओपन यूनीवर्सिटी में 1973 में आए ट्यूटोरियल सेवाओं में उनके अनुभवों जो विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय और अध्ययन केन्द्रों में उपलब्ध थे, उन्हें विश्वास दिलाया कि इन सेवाओं का अत्यधिक महत्त्व इस सीमा तक है कि वे मानते हैं कि दूरस्थ शिक्षण का सार दूरी पर सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए सरोकार की निरन्तरता है। 'सरोकार की निरन्तरता' की अभिव्यक्ति शिक्षा के भिन्न प्रकार के 'औद्योगिकीकृत रूप में एक मानव तत्व को प्रस्तावित करती है। एक भाव से सेवार्ट, बाथ के विचार को पुनर्बलित करते हैं, परंतु अधिक बल देकर इस धारणा की दृढ़ता जैसा कि वह सुझाते हैं व्यवहारिक उपागम में निहित है। हम इसकी चर्चा निम्न प्रकार से करेंगे।

मानव सहायता के लिए महत्वपूर्ण आवश्यकता: सेवार्ट तर्क करते हैं कि दूरस्थ शिक्षा संस्थान/विश्वविद्यालय आवश्यक रूप से जन शिक्षा संस्थान हैं। सामग्री का एक विशेष पैकेज सैकड़ों विद्यार्थियों के पास भेजा जाता है और कई बार तो हजारों के पास भेजा जाता है। क्या ऐसा एक पैकेज शिक्षक के सभी कार्यों का निष्पादन कर सकता है? (जिसे, सबसे खराब स्थिति में लगभग सौ या अधिक विद्यार्थियों तक अपनी पहुँच को समायोजित करना होता है) और दूरस्थ शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं एवं विशिष्टताओं की पूर्ति कर सकता है? सेवार्ट द्वारा दोनों प्रश्नों के उत्तर 'नहीं' में प्रतीत होते हैं।

यदि इस प्रकार के गुणों वाली सामग्री के पैकेज का उत्पादन करना हो तो यह बहुत व्ययपूर्ण होगी क्योंकि इसे उन सभी परस्पर प्रक्रियाओं को दर्शाना होगा जो शिक्षक और प्रत्येक विद्यार्थी के बीच प्राप्त किया जा सकता है। आशय यह है कि ऐसी सामग्री का स्वरूप कितना ही परिष्कृत हो और इसकी पहुँच कितनी भी विशाल हो, शिक्षार्थियों को हमेशा अतिरिक्त मानव सहायता की आवश्यकता होगी, जो अकेले ही उन अनन्त विविध प्रकार की समस्याओं को दूर कर सके जो असन्धित शिक्षण/अधिगम में उत्पन्न होती है। दूरस्थ शिक्षण संस्थानों को एक मानव ऐजेंसी द्वारा यह सलाह और ट्यूटर सहायता प्रदान करनी होगी, जो अकेले ही दूरी पर विद्यार्थी अधिगम हेतु संस्था की निरन्तरता का सुनिश्चयन/गारंटी दे सके। सामग्री के पूर्व नियोजित पैकेज नियत होते हैं। दूरस्थ शिक्षार्थियों को उनकी अनन्त विविध आवश्यकताओं और कठिनाइयों की पूर्ति के लिए इस स्थिर सामग्री के उपयोग में सहायता हेतु मानव बहुविधता की आवश्यकता है।

प्रमुख मुद्दे एवं समझौतों : सेवार्ट द्वारा स्वयं के लिए संबोधित प्रमुख मुद्दे हैं :

i) तुरंत प्रतिपुष्टि का अभाव

ii) सहपाठी समूह अन्तर्क्रिया की लगभग पूर्ण अनुपस्थिति

यह ऐसा नहीं है कि अन्य विचारकों ने इस मुद्दों पर नहीं सोचा, परंतु उन्होंने इनके शिक्षण शास्त्रीय महत्त्व को उतना जोर देकर नहीं चुना जितना कि सेवार्ट ने चुना इसका आधार मूल रूप से मुद्दों के प्रति दृष्टिकोणों का है जिसके प्रति सेवार्ट अधिक जोर दे रहे थे। उसके लिए शिक्षाविद दो समूहों में विभाजित हैं:

- i) वे जो ऐसी शिक्षा प्रणाली के लिए तैयार नहीं हैं, जिसमें सभी महत्त्वपूर्ण मानव तत्त्वों की स्वीकार्यता हो जो किसी भी अधिगम प्रक्रिया के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। दूरस्थ शिक्षा के प्रति सम्मान का अभाव, मुख्य रूप से इस संदेहजनक दृष्टिकोण का परिणाम है।
- ii) वे, जो दूरस्थ शिक्षा के लिए बाहर हैं और दूरस्थ शिक्षा में मानव तत्त्व को न्यूनतम रखना चाहते हैं।

सेवार्ट दोनों विचारों को अस्वीकार करते हैं। वह प्रथम के साथ नहीं हैं, क्योंकि वे दूरस्थ शिक्षा की पुष्टि तीन बहुत दृढ़ तर्कों के साथ करते हैं :

- i) नई संप्रेषण तकनीकों से शिक्षा को लाभ होना चाहिए और उनकी क्षमता पूर्ण रूप से प्रदर्शित हो। दूरस्थ शिक्षा ऐसी तकनीकों के उपयोग पर आधारित है और उपयोग के अवसर प्रदान करती है।
- ii) शिक्षा का लोकतांत्रिकरण होना चाहिए, छोटे हुए व्यक्तियों का ध्यान रखना है, ऐसे कदम उठाने हैं कि समाज में कोई भी किसी भी प्रकार से नहीं छूटे। केवल दूरस्थ शिक्षा ही इस चुनौती का सामना कर सकती है।
- iii) सीमित मानव, आर्थिक और स्थान संबंधी संसाधनों के साथ, शिक्षा का एकमात्र व्यवहारिक साधन दूरस्थ शिक्षा ही है।

वह दूसरे समूह के साथ भी नहीं हैं, क्योंकि वे दूरस्थ शिक्षा में मानव तत्त्व पर जोर देते हैं जैसा कि वे दूरस्थ शिक्षण/अधिगम पैकेज की विशेषता आवश्यक रूप से स्थिरता बताते हैं, वे इसके लिए निम्नलिखित को प्रदान करना चाहते हैं:

- i) शिक्षार्थी समस्याओं की अनंत विविधता;
- ii) तुरंत प्रतिपुष्टि;
- iii) तुरंत प्रतिपुष्टि।

इन तीनों मुद्दों को हल करने के लिए सेवार्ट; दूरस्थ शिक्षा में मानव तत्त्व के प्रवेश पर जोर देते हैं जिसके द्वारा दूरी पर शिक्षार्थी अधिगम के लिए संस्थान की निरंतरता को बनाए रखना संभव हो सकता है। यह देखा जा सकता है कि सेवार्ट उपरोक्त दो चरम विचारों के बीच एक समझौता प्रस्तुत कर रहे हैं और ये समझौते आगे जाकर अतिरिक्त समस्याएं (सैद्धांतिक और व्यवहारिक दोनों) लाने के लिए हैं।

सेवार्ट के विचारों द्वारा उठाई गई सैद्धांतिक समस्याएं दूरस्थ शिक्षा की बुनियादी विचारधारा से संबंधित हैं। दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों में आमने-सामने शिक्षण का अधिक भाग शब्दों के बीच विरोध प्रतीत हो सकता है। दूसरा ऐसी व्यापक मानव सहायता का प्रावधान, दूरस्थ शिक्षा के बारे में कुछ आर्थिक सिद्धांतों को असत्य सिद्ध करेंगे। व्यवहारिक रूप में, ऐसी मानव सहायता का विशाल तंत्र स्थापित करने और बनाए रखने

के लिए वह दूरस्थ शिक्षा के संपूर्ण प्रबंधन में काफी कार्य संबंधी जटिलताएं लाते हैं। सेवार्ट इन समस्याओं के समाधान प्रदान करते हैं। वह इसका विरोध करते हैं कि दूरस्थ शिक्षा में आमने सामने के तत्व को इसका न्यायसंगत भाग माना जाय, जैसे कि अन्य सभी मीडिया अंग और मानव सहायता के इस समेकन को प्रभावित करने के लिए कोई अनिवार्य कानूनी व्यय इसकी कार्यात्मक जटिलताओं के बावजूद इसके विपरीत असंतोष नहीं होना चाहिए। क्योंकि संपूर्ण व्यय, अर्थात् सामग्री के पैकेज और मानव सहायता को एक साथ रखकर, प्रदत्त विशाल संख्या में शिक्षार्थियों के लिए संवाद प्रणाली में किए जाने वाले व्यय की तुलना में अभी भी कम होगा।

अपनी प्रगति जाँचें

टिप्पणी : क) अपने उत्तर को नीचे दिए गए खाली स्थान में लिखिए।

ख) इकाई अंत में दिए "अपनी प्रगति जाँचें" प्रश्नों के उत्तर से अपने उत्तर की तुलना कीजिए।

9) सेवार्ट द्वारा उठाए गए मुख्य मुद्दों को सूचीबद्ध कीजिए। इन मुद्दों के समाधान हेतु इनके क्या सुझाव थे?

.....

.....

.....

.....

.....

2.4.8 संप्रेषण एवं शिक्षार्थी नियंत्रण का सिद्धांत

यहां पर चर्चा किया जाने वाला अगला योगदान, स्पष्ट रूप से शैक्षिक अनुभवों के मूल में निरंतर वास्तविक द्विमार्गीय संप्रेषण को रखता है, शिक्षक और शिक्षार्थी के पृथक्करण की परवाह किए बिना दूरस्थ शिक्षा की एक पारिभाषिक विशेषता मध्यस्थ संप्रेषण है और यह एक महत्वपूर्ण स्वरूप संबंध भी है, इस ढांचे को गैरिसन और बेयंटन (1989, गौरिसन, 2000 में बताया गया) द्वारा अद्यतन किया गया। इसने शिक्षण अधिगम संचालन की आवश्यक प्रकृति को पुनर्परिभाषित नहीं किया। उनके अनुसार;

- केन्द्रीय अवधारणा यह है कि शैक्षिक संचालन का आधार संवाद और वाद विवाद द्वारा समझ और ज्ञान का विकास करना है।
- अधिगम प्रक्रिया में शिक्षार्थी और शिक्षक के बीच द्विमार्गीय संप्रेषण की आवश्यकता होती है।
- स्वतंत्रता या स्वायत्तता की अवधारणा के स्थान पर शिक्षार्थी नियंत्रण है। घटनाक्रमों को प्रभावित करने और निर्देशित करने के अवसर और योग्यता, मात्र एक पार्टी द्वारा स्थापित नहीं हो सकती, परंतु स्वतंत्रता (स्व-निर्देशिता) और सहायता के बीच अन्तर्संबंधों पर आधारित होता है।
- अधिगम में प्राथमिक केन्द्र शैक्षिक संचालन की सहायता है।
- शैक्षिक संचालन की सहायता के लिए तकनीकी की आवश्यकता है।

- तकनीकी और दूरस्थ शिक्षा अविभाज्य हैं।

गैरिसन (1989) इस अवधारणात्मक परिवर्तन की मान्यताओं पर विचार करते हैं। दूरी पर शैक्षिक संचालन के इस माडल संचालन के केन्द्र में नियंत्रण की अवधारणा को स्थापित किया। शैक्षिक संचालन को प्रभावित करने के अवसर और योग्यता नियंत्रण' है। यह नियंत्रण की परिभाषा थी। इसका प्रयोजन स्वतंत्रता (स्व अध्ययन) की अवधारणा को प्रतिस्थापित करना था जो प्रायः दूरस्थ शिक्षा के अधिक व्यापक परिप्रेक्ष्य के साथ शैक्षिक संचालन का मूल तत्व है। साझा नियंत्रण शैक्षिक अनुभव संचालन प्रकृति के विचारात्मक रूप में दिखाई दी। द्विमार्गीय संप्रेषण नियंत्रण के केन्द्र में है और स्वतंत्रता के साथ परिवर्तित होता है, जिसके पास शिक्षक की न्यायसंगत और उचित भूमिका को कम करने का प्रभाव है और इस प्रकार पृथक्करण का संकट उत्पन्न करता है।

नियंत्रण प्रतिमान में सम्मिलित हैं : शिक्षक का सूक्ष्म संरचनात्मक स्तर, विद्यार्थी और विषय-वस्तु की निपुणता (योग्यता और प्रेरणा) के सूक्ष्म स्तरीय संचालक तत्त्व, सहायता (मानवीय और गैर मानवीय संसाधन) और स्वतंत्रता (चयन के अवसर) संरचनात्मक बाध्यताओं द्वारा उत्पन्न आवश्यक स्वतंत्रता, एक जटिल शैक्षिक संचालन में समझने के लिए चरों के मात्र एक युग्म को दर्शाती है। इन संचालन तत्वों पर विचार, नियंत्रण का उपयुक्त संतुलन का निर्धारण करेंगे, जिनका आँकलन और निरंतर समायोजन मात्र सतत् द्विमार्गीय संप्रेषण द्वारा ही किया जा सकता है।

2.4.9 शिक्षण एवं अधिगम क्रियाओं के पुनर्समाकलन का सिद्धांत

कीगन (1986, 1990) के अनुसार दूरस्थ शिक्षा मुख्य रूप से अंतर्व्यक्तिक संप्रेषण के लक्षण द्वारा नहीं पहचानी जाती है, परन्तु इसके बदले इसकी पहचान शिक्षण क्रियाओं का अधिगम क्रियाओं से समय और स्थान के संदर्भ में पृथक्करण द्वारा होती है। इस विचार में वे मूर से सहमत हैं, जो दूरस्थ शिक्षण और अधिगम तथा संस्पर्शी (समीपी) शिक्षण एवं अधिगम स्थितियों को विपरीत बताते हैं। इस अंतर के लिए कीगन का आधार परिणाम स्वरूप संप्रेषण की प्रकृति है। कीगन तर्क देते हैं कि दूरस्थ शिक्षा की विशेषता उद्योग के समान है जो शिक्षण संस्थान से विद्यार्थी के पृथक्करण पर जोर देती है, अतः शिक्षण और अधिगम क्रियाओं के पुनर्कीकरण में दूरस्थ शिक्षा के लिए एक सैद्धांतिक औचित्य प्राप्त करना होगा। इस चरण में कीगन मूर और होल्म्बर्ग दोनों से अलग हैं, जो पृथक्करण को स्वायत्त शिक्षार्थी के लिए लाभ और चुनौती, दोनों के रूप में देखने का विचार रखते हैं। कीगन कहते हैं (http://www.prof2000.pt/users/ajlopes/AF22_EAD/teorias_ead/Teorias_Amundsen_English.htm):

“शिक्षक और शिक्षार्थी की अन्तरआत्मीयता, जिसमें अधिगम शिक्षण द्वारा संपन्न होता है, को कृत्रिम रूप से पुनः सृजित करने की आवश्यकता है। एक दूर प्रणाली में स्थान और समय के साथ एक ऐसे क्षण के पुनर्रचना की जरूरत है जिसमें शिक्षण अधिगम परस्पर क्रिया द्वारा संपन्न होती है। अधिगम सामग्री को अधिगम के साथ जोड़ना इस प्रक्रिया के केंद्र में है” (कीगन, 1986)।

कीगन तर्क करते हैं कि यह अधिगम संपर्क (जोड़) पारंपरिक शिक्षा में दिया गया है, क्योंकि शिक्षार्थी एक ऐसे वातावरण में है जो अधिगम के समर्थन हेतु सृजित है (अर्थात् विद्यालय और विश्वविद्यालय)। कीगन का विश्वास है कि दूरस्थ शिक्षार्थी के लिए शिक्षण और अधिगम के बीच संपर्क को अन्तर वैयक्तिक संप्रेषण द्वारा संपूरित किया जाना आवश्यक है जो विचारपूर्वक नियोजित हो। अन्तर वैयक्तिक संप्रेषण की थीम, होल्म्बर्ग की थीम के

समान ही है, परंतु अधिक उचित रूप से सीधे शिक्षण या शिक्षार्थी पर केन्द्रित करती है। कीगन का केन्द्र अधिगम क्रिया पर है। होलम्बर्ग के समान ही कीगन भी मानते हैं कि मुद्रित अनुदेशनात्मक सामग्री के स्वरूपण में अन्तर वैयक्तिक संप्रेषण की कई विशेषताओं को सम्मिलित किया जा सकता है। अतः वे अपने अन्तर वैयक्तिक संप्रेषण को टेलीफोन, ट्यूटोरियल्स टेलीकांफ्रेंसेस या अन्य समान रूपों तक सीमित नहीं करते।

कीगन तर्क देते हैं कि दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम जितनी अधिक सफलतापूर्वक पुनर्देकीकरण का प्रबंध करते हैं, पाठ्यक्रम छोड़ने का दर उतनी ही कम होता है, अधिगम की गुणवत्ता अधिक उच्च और संस्थान का स्तर भी उतना ही ऊँचा होता है। इन परिकल्पनाओं के लिए कुछ समर्थन पाए गए हैं (अमुंडसन और बनोर्ड, 1989)। इस प्रकार जहां कीगन की दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा में समय और स्थान के आधार पर शिक्षा की क्रियाओं का अधिगम क्रियाओं से पृथक्करण मुख्य केंद्र है, वहां वे विश्वास करते हैं कि सफल दूरस्थ शिक्षा में इन दो क्रियाओं के पुनर्देकीकरण की आवश्यकता है। सम्भवतः इसका जोर अधिगम अनुभवों को शिक्षार्थियों के लिए समतुल्य बनाना हो, जो शिक्षण और अधिगम के पुनर्मिलन को एक साथ होने वाली क्रियाओं के रूप में योगदान प्रदान करेंगे।

2.4.10 अधिगम अनुभवों की समानता का सिद्धांत

दूरस्थ शिक्षा में नई टेलीकौम्यूनिकेशन तकनीकों का प्रभाव काफी आगे बढ़ रहा है। वास्तविक समय टेलीविजन तंत्र जैसे आयोवा कौम्यूनिकेशंस नेटवर्क (साइमंसन और स्कौलोस्सर, 1995) शिक्षार्थियों और अनुदेशकों को देखने और दिखाई देने सुनने और सुनाई देने के अवसर प्रदान करते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे एक स्थानीय कक्षा-कक्ष में होता है। कीगन (1995) ने सुझाया कि अनुदेशक और विद्यार्थियों को विभिन्न स्थानों पर इलैक्ट्रॉनिक रूप से जोड़ने से आभासी कक्षा कक्ष का निर्माण होता है। वे आगे कहते हैं :

‘आभासी शिक्षा का सैद्धांतिक विश्लेषण अभी तक साहित्य द्वारा संबोधित नहीं किया गया है : क्या आभासी शिक्षा (परस्पर संवादात्मक, टेलीविजन पर अनुदेश का सीधा प्रसारण), दूरस्थ शिक्षा का सब सैट हो या शैक्षिक प्रयास का एक अलग क्षेत्र माना जाय? (पृष्ठ 18)

दूरस्थ शिक्षण में शिक्षा अधिगम अनुभवों की समानता की अवधारणा पर निर्मित होनी चाहिए, दूरस्थ शिक्षार्थियों के अधिगम अनुभवों की जितनी अधिक समानता स्थानीय शिक्षार्थियों के साथ होगी, उतनी ही अधिक समानता सभी शिक्षार्थियों के शैक्षिक अनुभवों के प्रतिफलों में होगी, दूरस्थ शिक्षा का यह उपागम एक स्वरूप का समर्थन करता है कि अधिगम अनुभवों का एक संग्रह दूरस्थ और स्थानीय शिक्षार्थियों को प्रदान किया जाय, यद्यपि ये अनुभव प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए भिन्न हो सकते हैं। दूरस्थ शिक्षा के अनुदेशनात्मक स्वरूप का उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी के लिए उपयुक्त तथा समान अधिगम अनुभव प्रदान करना है।

इस सिद्धांत का विस्तार करते हुए साइमंसन (1995) कहते हैं कि किसी भी समूह के शिक्षार्थियों के लिए यह आवश्यक नहीं होना चाहिए कि वह विभिन्न निर्देशात्मक अधिगम अनुभवों की (संभवतः कम) क्षतिपूर्ति करे। विद्यार्थियों को वे अधिगम अनुभव मिलने चाहिए जो उनके वातावरण और स्थिति जिसमें वे रहते हैं के अनुरूप हों। इस प्रकार जो दूरस्थ शिक्षा प्रणालियों का विकास कर रहे हैं, वे सभी विद्यार्थियों के लिए समान अधिगम अनुभवों का प्रयास करें, भले ही वे संसाधनों और अनुदेशों, जिनकी उन्हें आवश्यकता है से कैसे भी जुड़े हों। समानता के सिद्धांत के कई मुख्य तत्व हैं : प्रमुख रूप से वे समानता की अवधारणाएं हैं, अधिगम अनुभव, उपयुक्त उपयोग, विद्यार्थी और प्रतिफल।

- i) **समानता** : इस सैद्धांतिक उपागम में 'समानता' की अवधारणा केंद्र पर है। स्थानीय और दूरस्थ शिक्षार्थियों के पास मूल रूप से भिन्न वातावरण होते हैं, जिनमें वे सीखते हैं। दूरस्थ शिक्षक का यह उत्तरदायित्व है कि वह ऐसी अधिगम घटनाएं स्वरूपित करे जो शिक्षार्थियों को ऐसे अनुभव प्रदान करे जिनका सभी शिक्षार्थियों के लिए समान मूल्य हो। स्थानीय और दूरस्थ शिक्षार्थियों के अनुभवों का समान मूल्य होना चाहिए, यद्यपि ये अनुभव काफी भिन्न हो सकते हैं।
- ii) **अधिगम अनुभव** : दूसरा महत्वपूर्ण बिंदु अधिगम अनुभव है। अधिगम अनुभव कोई चीज है जो विद्यार्थी के साथ अधिगम को बढ़ावा देने के लिए संपन्न होती है इसमें सम्मिलित है : जो कुछ भी अवलोकित अनुभव, सुना या किया जाय ऐसी संभावना है कि विभिन्न विद्यार्थी, भिन्न भिन्न स्थानों पर अलग-अलग समय पर सीख रहे हों, उन्हें भिन्न मिलजुले अनुभवों की आवश्यकता हो। कुछ को अधिक मात्रा में अवलोकन की आवश्यकता हो, जब कि कुछ अन्य को अधिक काम करने की आवश्यकता हो सकती है। अनुदेशनात्मक योजना का लक्ष्य प्रत्येक शिक्षार्थी के लिए अनुभवों के योग को समान बनाना है।
- iii) **समुचित अनुप्रयोग** : अधिगम अनुभव, प्रत्येक व्यक्तिगत शिक्षार्थी की आवश्यकता के अनुकूल और अधिगम स्थिति उपलब्ध होनी चाहिए। अधिगम अनुभवों की उपलब्धता उपयुक्त और समय पर होनी चाहिए।
- iv) **विद्यार्थी** : विद्यार्थियों को एक कोर्स में उनके नामांकन द्वारा निर्धारित करना चाहिए न कि उनके स्थान द्वारा। वे आवश्यक रूप से संस्थान आधारित शिक्षा चाहते हैं जो एक मान्यता प्राप्त और प्रमाणित संगठन द्वारा स्वीकृत हो।
- v) **प्रतिफल** : एक अधिगम अनुभव के प्रतिफल वे हैं जो स्पष्ट और मापनीय होते हैं। ये महत्वपूर्ण परिवर्तन हैं जो शिक्षार्थियों में कोर्स या इकाई में उनकी प्रतिभागिता के फलस्वरूप ज्ञानात्मक और प्रभावशाली ढंग से संपन्न होते हैं। प्रतिफलों में कम से कम दो वर्ग सम्मिलित हैं : जो अनुदेशक द्वारा निर्धारित होते हैं और वे जो शिक्षार्थी निर्धारित करते हैं। अनुदेशक निर्धारित प्रतिफल साधारणतया कोर्स लक्ष्य और उद्देश्य कहे जाते हैं और यह पहचान करते हैं कि अधिगम अनुभवों के बाद शिक्षार्थी क्या प्राप्त करने में समर्थ होने चाहिए, जो वे इसमें भाग लेने से पूर्व प्राप्त नहीं कर सके। शिक्षार्थी निर्धारित प्रतिफल, कम विशिष्ट अधिक व्यक्तिगत और शिक्षार्थी, सहभागिता के फलस्वरूप क्या प्राप्त करने की आशा करता है, से संबंधित है।

यदि शिक्षक, शिक्षार्थी और जनता सामान्य रूप से दूरस्थ अधिगम को पारंपरिक अधिगम के समान ही पाते हैं, तब दूरस्थ अधिगम मुख्य धारा बन जाती है। यदि जनता समाता का अनुभव नहीं करती, तो दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा के क्षेत्र में परिधीय या गौण बनी रहेगी।

2.4.11 दूरस्थ शिक्षा सिद्धांतों का मूल्यांकन

दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांतों पर लंबी चर्चा पर निष्कर्ष के रूप में हमें स्वीकार करना चाहिए कि हम व्यापक नहीं रहे हैं और हमने यह कभी चाहा भी नहीं तथापि विभिन्न विचारकों के विचारों को आपके लिए प्रस्तुत करने का उद्देश्य आपको विचारों के मुख्य बिंदुओं से परिचित कराना था जो आज दूरस्थ शिक्षा को दिशा प्रदान करने योग्य प्रतीत होते हैं। क्योंकि हमारा उद्देश्य सीमित है, हमने प्रत्येक सिद्धांत को उसके पक्ष और विपक्ष में तर्क द्वारा मूल्यांकन करने का प्रयास नहीं किया। न ही हमने उनकी एक दूसरे के साथ तुलना और/या विरोध किया।

यह एक मात्र घटना नहीं हो सकती कि यूरोपियन विचारक दूरस्थ शिक्षा के शिक्षण शास्त्रों के बारे में अधिक संबद्ध हैं, जब कि अमेरिकन दूरस्थ शिक्षा में प्रेरणा के पक्ष से अधिक संबद्ध है। सामाजिक सांस्कृतिक भिन्नता का इस प्रकार के विभिन्न झुकाओं में काफी योगदान है हम ऐसे अवसरों को यह देखने के लिए ढूँढ़ेंगे कि किस प्रकार ये सिद्धांत या तो पहले से दृष्टिगोचर है और या इनका उपयोग दूरस्थ शिक्षा में आपके संदर्भ में हो सकता है।

एक ऐसा वातावरण जहां पर तकनीकी, समाज, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र और अधिगम के उपागम सभी एक संक्रमण की स्थिति में हैं सुझाते हैं कि दूरस्थ शिक्षा के सिद्धांत परिभाषाएं और प्रथाएं निरंतर विवाद में रहेंगे। परिवर्तन की यह थीम दूर शिक्षकों और शोधकर्ताओं को चुनौती और प्रेरणा दोनों प्रदान करेंगे, क्योंकि वे विश्व में शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रभावी तरीकों को समझने और विकसित करने के लिए प्रयासरत है।

2.5 सारांश

इस इकाई में हमने आपके लिए दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा, उपयोग में आने वाले कुछ संबंधित, शब्द और आजीवन शिक्षा की अवधारणा एवं क्षेत्र का एक विहंगावलोकन प्रस्तुत किया। इस विहंगावलोकन को प्रस्तुत करने का मूल उद्देश्य यह है कि आप उपरोक्त शब्दों और अवधारणाओं की न केवल व्याख्या करने और अंतर करने में सक्षम होंगे बल्कि इन अवधारणाओं पर सामग्री को अधिक स्पष्टता से पढ़ने और समझने में भी योग्य बनेंगे। आगे हमने दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न सिद्धांतों पर चर्चा की, ताकि आप उन बुनियादी आधारों को समझ सकें, जिन पर यह आधारित है। दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न सिद्धांतों पर चर्चा के दौरान हमने दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिक विचारकों जैसे वेडमेयर, मूरे, डोहमेन, पीटर्स, होलम्बर्ग, बाथ, सेवार्ट, कीगन और अन्य के योगदान को भी प्रकाशित किया। इस चर्चा में हमने दूरस्थ शिक्षा की विकासवादी विशेषता पर वांछित फोकस रखा और स्वतंत्र अध्ययन से आरम्भ करके शिक्षण और अधिगम क्रियाओं के पुनर्कीकरण तक के प्रासंगिक सिद्धांतों पर भी बल दिया। दूरस्थ शिक्षा का सैद्धांतिक स्तर और इस पर आगे सिद्धांत बनाने की आवश्यकता और विस्तार की व्यापक छवि आपके सम्मुख प्रस्तुत करने के विचार से हमने सिद्धांतों में विविधता को प्रकाशित किया।

2.6 'अपनी प्रगति जांचें' प्रश्नों के उत्तर

- 1) i) होलम्बर्ग।
ii) स्वतंत्र अध्ययन, शिक्षार्थी स्वायत्तता और स्व अध्ययन।
- 2) पत्राचार शिक्षा में संगठित निर्देश और शिक्षा सम्मिलित हैं जो मुख्य रूप से शिक्षार्थियों के पास डाक द्वारा भेजी गई लिखित या मुद्रित सामग्री द्वारा संपन्न होती है। इसमें आमने सामने संपर्क का प्रावधान हो सकता है और नहीं भी। दूरस्थ शिक्षा में मल्टीमीडिया, प्रिंट, श्रव्य, दृश्य, टेलीविजन, टेलीफोन, कंप्यूटर्स आदि का उपयोग शिक्षण अधिगम उपागम के रूप में होता है जिसमें आमने सामने संपर्क भी सम्मिलित है।

मुक्त शिक्षा एक दर्शन है जो प्रवेश योग्यता में छूट, कोर्स के चयन में लचीलापन, शिक्षार्थियों की अधिगम गति और सुविधा के अनुसार सीखना, निर्देश के लिए

मल्टीमीडिया का उपयोग और इसी प्रकार अन्य के संदर्भ में मुक्तता का समर्थन करता है। दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा की एक विधि है जो मुक्त हो सकता है और नहीं भी।

- 3) आजीवन शिक्षा एक विस्तृत अवधारणा है जो जीवन के सभी क्षेत्रों में संलग्न सभी आयु और अवस्था के लोगों की शिक्षा का लक्ष्य रखती है। सारांश में इसका लक्ष्य अधिगम शील समाज की ओर बढ़ना है : एक ऐसा समाज जिसमें प्रत्येक व्यक्ति जीवन भर अधिगम क्रियाकलापों में संलग्न रहता है। सभी अवधारणाएं और शब्द : औपचारिक, अनौपचारिक निरौपचारिक, पत्राचार, दूरस्थ और मुक्त शिक्षा आदि, आजीवन शिक्षा के अंग हैं।

आजीवन शिक्षा के कार्यान्वयन में शिक्षा की मुख्य अवधारणा में मूल परिवर्तन और शिक्षा प्रणाली में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है। शिक्षार्थियों और उनकी अधिगम प्रक्रियाओं, शिक्षकों एवं अनुदेशनात्मक विधियों, शैक्षिक संस्थानों और आजीवन शिक्षा के मूल्यांकन पर इसके व्यापक प्रभाव हैं।

- 4) एक स्वतंत्र अध्ययन में मुख्य रूप से शिक्षार्थी संस्कृति और शिक्षक संस्कृति को परिवर्तित करने की क्षमता होती है इसके निम्नलिखित दो कारण हैं :

i) एक स्वतंत्र अध्ययन प्रणाली में शिक्षार्थी को एक कार्यक्रम आरम्भ करने की स्वतंत्रता होती है, अपने अधिगम क्रियाकलापों की अपनी स्वतंत्रता होती है, अपने अधिगम क्रियाकलापों को अपनी स्वयं की गति से आगे बढ़ाने और जब चाहे रोकने की भी अर्थात् यह शिक्षार्थी ही है जो अपनी प्रगति और असफलता के लिए उत्तरदायी है। इसके विपरीत एक पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में शिक्षार्थी कई चरणों द्वारा नियंत्रित होता है— शिक्षक कक्षा-कक्ष की स्थिति, परीक्षा-पैटर्न, समय सारिणी आदि।

ii) एक स्वतंत्र अध्ययन प्रणाली में अधिगम को व्यक्तिगत आवश्यकताओं के प्रति अधिक से अधिक प्रासंगिक बनाया जा सकता है और यह अधिगम क्रियाकलाप ही है जो शिक्षण प्रयास से अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाता है। इसलिए शिक्षक की भूमिका शिक्षण/अधिगम प्रक्रिया में पूर्णतः भिन्न है।

- 5) जहाँ तक 'कार चलाना' सीखने का संबंध है, उद्देश्यों का निर्धारण शिक्षार्थी द्वारा स्वयं किया जाता है; न कि किसी बाह्य संस्था द्वारा (आप इसकी तुलना किसी भी पारंपरिक शिक्षण कार्यक्रम से कर सकते हैं, जिसमें अधिगम उद्देश्यों का निर्धारण बाह्य संस्था द्वारा किया जाता है— सामग्री डिजाइनर, शिक्षक आदि) जबकि विधियाँ, सामग्री और मूल्यांकन का निर्धारण अनुदेशक द्वारा किया जाता है। इस प्रकार शिक्षार्थी स्वायत्त (A) है, जहाँ तक उसके उद्देश्यों का संबंध है, परंतु जहाँ तक अधिगम प्रविधियाँ और अंतिम मूल्यांकन का संबंध है, शिक्षार्थी गैर स्वायत्त (N) है। अतः हम कार्यक्रम को 'ANN' के रूप में अंकित करते हैं।

- 6) एक मुक्त विश्वविद्यालय और एक उद्योग में सामान्य चार विशेषताएं हैं :

अ) श्रम का विभाजन

ब) बड़े पैमाने में उत्पादन

स) व्यवस्थीकरण

द) खाका (ले आउट)

- 7) वार्तालाप 'निर्देशित' और 'शिक्षात्मक' होता है, क्योंकि कोर्स विकासकर्ता दूरस्थ शिक्षार्थी का निर्देशन (मार्गदर्शन) करते हैं- मुख्य रूप से सरलता से पठनीय और तर्कसंगत बोलचाल की भाषा-शैली के माध्यम से शैक्षिक और शिक्षण शास्त्रीय मुद्दों पर प्रस्तुतीकरण।
- 8) एक दूरस्थ शिक्षक अपनी टिप्पणियों का एक उपकरण के रूप में उपयोग द्वारा द्विमार्गीय संप्रेषण को प्रभावित करने में सहायता करता है। अर्थात् उत्तर पत्रक के सबसे ऊपर अंक या ग्रेड को एक संकेतक के रूप में अंकित करना कि उसने उन्हें देख लिया है; के प्रथागत तरीके को अपनाने के स्थान पर एक दूरस्थ ट्यूटर शिक्षार्थियों के निष्पादन में सर्वोत्कृष्ट सुधार लाने के लिए सहायता हेतु रचनात्मक समीक्षा और प्रोत्साहित करने वाली टिप्पणियां लिखती/ता है।
- 9) शिक्षार्थी की अनंत विविध समस्याओं के कारण हैं :
 - अ) तुरंत प्रतिपुष्टि का अभाव; और
 - ब) सहपाठी समूह की परस्पर क्रिया का अभाव।

सेवार्ट सुझाते हैं कि समस्याओं का समाधान हो सकता है, यदि 'मानव सहायता' दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का एक महत्त्वपूर्ण अंग बन जाय।

2.7 संदर्भ

Amundsen, C., and Bernard, R. (1989). Institutional support for peer contact in distance education: an empirical investigation. *Distance Education*, 10(1):7-27.

Baath, J. A. (1980). *Postal Two-way Communication in Correspondence Education*, Lund, Sweden: Gleerup

Coombs, P. H., Prosser, R. C., and Ahmed M. (1973). *New Paths to Learning for Rural Children and Youth*, International Council for Educational Development (ICED), New York.

Cropley, A. J. (1982). "Some Psychological Reflections on Lifelong Education", in Dave, R. H. (ed.). (1982), Cited below, pp.98-100, 196-201.

Dave, R. H. (1973). *Lifelong Education and School Curriculum: Interim Findings of An Exploratory Study on School Curriculum, Structures and Teacher Education in the Perspective of Lifelong Education*, UNESCO Institute of Education, Hamburg.

Dave, R. H. (ed.) (1982). *Foundations of Lifelong Education*. UNESCO Institute of Education and Pergamon Press, Oxford, p.34.

Dixon. (1987). <http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf> — Retrieved on 09-10-2016.

Dohmen, G. (1977). *Das Fernstudium, Ein neues pedagogisches Forschungs- und Arbeitsfeld Tubingen*. DIFF.

Escotet, M. (1983). Adverse Factors in the Development of an Open University in Latin America. *Programmed Learning and Educational Technology*, Vol.17, No.4, pp.262-70.

- Evans, T. D., and Nation, D. E. (2003). “Globalisation and the Reinvention of Distance Education”, in M.G. Moore and W. Anderson (eds). *The Handbook of Distance Education*, Lawrence Erlbaum and Associates, Mahwah, NJ, pp.767-782
- Faure. E., et.al. (1972). *Learning to be: The Education of the World Today and Tomorrow*, UNESCO, Paris.
- Garrison, D. R. (1989). *Understanding Distance Education: A framework for the future*, Routledge, London.
- Garrison, D. R., and Anderson, T. (1999). Avoiding the Industrialization of Research Universities: Big and little distance education. *The American Journal of Distance Education*, 13(2), 48–63.
- Garrison, D. R., and Baynton, M. (1987). Beyond independence in distance education: The concept of control. *The American Journal of Distance Education*, 1(3), 3 – 15.
- Garrison, R. (2000). Theoretical Challenges for Distance Education in the 21st Century: A shift from structural to transactional issues. *The International Review of Research in Open and Distributed Learning*, Vol 1, No 1.
- Hartnett, R. I. (1972). “Non-traditional Study: An Overview”, in S. B. Gould and K. P. Cross (eds), *Explorations in Non-traditional Study*, Jossey-Bass, San Francisco.
- Holmberg, B. (1981). *Status and Trends of Distance Education*, Kogan Page, London.
- <http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf> — Retrieved on 09-10-2016.
- <http://newlearningonline.com/new-learning/chapter-2/ivan-illich-on-deschooling> — Retrieved on 22-09-2016.
- <http://www.aect.org/edtech/ed1/13/13-03.html> — Retrieved on 27-9-2016.
- <http://www.c3l.uni-oldenburg.de/cde/found/simons99.htm> — Retrieved on 28-9-2016.
- <http://www.university.careers360.com/articles/list-of-approved-distance-education-universities-in-india>
- <http://www.uwex.edu/disted/conference/wedemeyer/aboutcw.cfm> — Retrieved on 01-09-2016.
- IGNOU. (1995). *ES-311 Growth and Philosophy of Distance Education: Block 2 Philosophical Foundations*. Staff Training and Research Institute of Distance Education, IGNOU, New Delhi.
- Illich, Ivan. (1973). *Deschooling Society*. Penguin, Harmondsworth, UK.. (<http://newlearningonline.com/new-learning/chapter-2/ivan-illich-on-deschooling> — Retrieved on 22-09-2016).
- Jarvis, P. (1990). *Adult and Continuing Education: Theory and Practice*. Routledge, London.
- Keegan, D. (1986). *The Foundations of Distance Education*, Croom Helm,

London.

Keegan, D. (1995). *Distance education technology for the new millennium: Compressed video teaching*. ZIFF (cited at <http://www.c3l.uni-oldenburg.de/cde/found/simons99.htm>).

Knapper, C. K., and Cropley, A. J. (1985). *Lifelong Learning and Higher Education*, Croom Helm, London.

Legge, D. (1982). *The Education of Adults in Britain*, The Open University Press, Milton Keynes, England.

Moore, M. G. (1972). Learning Autonomy: The Second Dimension of Independent Learning, *Convergence*, pp.576-87.

Moore, M. G. (1973). Towards a Theory of Independent Learning and Teaching. *Journal of Higher Education*, 4(4), pp.661-679.

Moore, M. (1997). "Theory of transactional distance", In Keegan, D. (ed). *Theoretical Principles of Distance Education*, Routledge, pp.22-38. (See <http://www.c3l.uni-oldenburg.de/cde/found/moore93.pdf> — Retrieved on 22-09-2016).

Morris (2011) cited at <http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf> — Retrieved on 09-10-2016.

Perraton, H. (1988). "A theory for distance education", In D. Sewart, D. Keegan, and B. Holmberg (ed), *Distance education: International perspectives*, pp.34-45. New York: Routledge.

Peters, O. (1973). *Die didaktische, 'Strukture des Fernuntenrrichts Untersuchungen Zu einer industrialisierten forin des lehrens and lernens*. Weinheim, Beltz.

Peters, O. (1988). "Distance teaching and industrial production: A comparative interpretation in outline", in D. Sewart, D. Keegan, and B. Holmberg. (ed). *Distance education: International perspectives*, Routledge, New York.

Radcliffe, D. J., and Colletta, N. J. (1989). "Non-formal Education", in C. J. Titmus (ed.) (1989) cited below.

Rowntree. (1992). Cited at <http://cdn.intechopen.com/pdfs-wm/39188.pdf> — Retrieved on 09-10-2016

Simonson, M. (1995). Does anyone really want to learn at a distance? *Tech Trends*, 40 (5): 12.

Simonson, M., and C. Schlosser. (1995). More than fiber: Distance education in Iowa. *Tech Trends*, 40 (3): 13-15.

Simonson, M., Schlosser, C., and Hanson, D. (1999). Theory and Distance Education: A New Discussion, *The American Journal of Distance Education*, Vol.13, No.1. (See <http://www.c3l.uni-oldenburg.de/cde/found/simons99.htm> — Retrieved on 28-9-2016).

Titmus, C. J. (ed.). (1989). *Lifelong Education for Adults: An International Handbook*, Pergamon Press, Oxford.

UNESCO. (1976). *Draft Recommendations on the Development of Adult Education*, UNESCO, Paris.

UNESCO. (1996). *Learning: The treasure within*. Report to UNESCO of the International Commission on Education for the Twenty-first Century (Chairman: Jacques Delors). UNESCO publishing, Paris.

Wedemeyer, C. A. (1977). "Independent Study", in Knowles, A.S. (eds.). *The International Encyclopedia of Higher Education*, North-Eastern University, Boston, pp.2114-2132.

2.8 इकाई अंत अभ्यास

अपने लाभ के लिए आप इन प्रश्नों के संक्षिप्त या लम्बे उत्तर लिख सकते हैं। ये आपको आपकी परीक्षा की तैयारी में सहायक हो सकते हैं।

- 1) दूरस्थ शिक्षा को परिभाषित कीजिए। इसकी विकासवादी प्रवृत्ति का पता लगाइए, यदि कोई है- विभिन्न दूरस्थ शिक्षाविदों द्वारा प्रदत्त परिभाषाओं में (100 शब्दों में)।
- 2) दूरस्थ शिक्षा से संबंधित विभिन्न शब्दों (टर्मस) को सूचीबद्ध कीजिए। इन शब्दों के बीच में, और दूरस्थ शिक्षा में भी समानताओं और असमानताओं की व्याख्या कीजिए (1000 शब्द)
- 3) दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न सिद्धांतों की सूची बनाइए। दूरस्थ शिक्षा के अभ्यास की व्याख्या करने में इनके सापेक्षिक महत्त्व पर प्रकाश डालिए (1000 शब्द)

मुक्त चिंतन प्रश्न

- 1) क्या आप समझते हैं कि इस इकाई में प्रस्तुत सिद्धांतों में एक विकासवादी प्रवृत्ति है? उनके आवश्यक तत्वों के संदर्भ में अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए।

क्रियाकलाप

भाग 2.3 को दोबारा इस विचार से पढ़ें :

- i) विभिन्न अवधारणाओं के बीच मुख्य समानताएं और विभिन्नताएं पहचानिए और लिखिए।
- ii) कोई विशिष्ट अवधारणा (एं)/शब्द (टर्मस) जिन्हें आप स्पष्ट रूप से न समझ पाए हों, पहचानिए और नोट कीजिए।

इन बिंदुओं पर अपने सहकर्मी, शैक्षिक परामर्शदाता और अन्य संसाधन व्यक्तियों के साथ, अपने कोर्स अध्ययन के दौरान अध्ययन केन्द्र पर प्राप्त अवसरों में चर्चा कीजिए ताकि आप इस पर अपनी समझ को बढ़ा सकें।